जेष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 113, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 19 मई 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

ज्ञानवापी पर सुनवाई टली: हिंदू पक्ष की 2 मांगें, जहां शिवलिंग मिला, उसके नीचे तहखाने का सर्वे हो, फव्वारा है तो वाटर सप्लाई दिखाएं

मस्जिद में क्या दिखा.. 'बाबा या फव्वारा'

वाराणसी: ज्ञानवापी मस्जिद मामले में वाराणसी कोर्ट में बुधवार को होने वाली सुनवाई टल गई। वकीलों की हड़ताल के चलते अब केस पर गुरुवार को सुनवाई होगी। कोर्ट ने गुरुवार को ज्ञानवापी परिसर की सर्वे रिपोर्ट भी दाखिल करने के आदेश दिए हैं। इससे पहले, हिंदू पक्ष के दो वकील हरिशंकर जैन और विष्णु जैन मीडिया के सामने आए। उन्होंने दो नई मांगों का जिक्र किया। हरिशंकर जैन ने कहा, "जहां शिवलिंग मिला है, उसके नीचे तहखाने का सर्वे कराया जाना चाहिए।

सामने की दीवार को साफ करके अच्छे तरीके से वीडियोग्राफी होनी चाहिए। हमें उम्मीद है कि कोर्ट हमारे इस प्रार्थना पत्र पर तथ्यों और साक्ष्य के आधार पर फैसला सुनाएगा।" वहीं, विष्णु जैन ने कहा, "ज्ञानवापी मस्जिद के वजूखाने में मिले शिवलिंग को दूसरा पक्ष फव्वारा कह रहा है। अगर ऐसा है तो वह फव्वारा चलाकर दिखा दें। फव्वारा है तो वहां वाटर सप्लाई का पूरा सिस्टम भी होगा। ऐसे में प्रतिवादी पक्ष को जांच पर ऐतराज क्यों है" उन्होंने यह भी दावा किया कि नंदी महाराज के सामने से व्यासजी के कक्ष से शिवलिंग तक रास्ता जाता है। कोर्ट से वहां खुदाई कराने की मांग की गई है।

पूर्व एडवोकेट कमिश्नर अजय मिश्रा से ही तैयार कराई जाए सर्वे रिपोर्ट: हिंदू पक्ष के एक वादी ने कोर्ट में प्रार्थना पत्र देकर कोर्ट द्वारा कार्यमुक्त किए गए एडवोकेट कमिश्नर अजय मिश्रा से सर्वे रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा है।

वादी ने कहा, "6 और 7 मई को ज्ञानवापी के सर्वे की कार्रवाई उन्हीं के द्वारा सम्पन्न की गई थी। अजय कुमार मिश्रा का सहयोग लिए बगैर रिपोर्ट अधूरी रहेगी।" बता दें कि अजय मिश्रा पर मुस्लिम पक्ष ने ऐतराज जताते हुए उनको हटाने की मांग की थी। हालांकि तब कोर्ट ने उनको नहीं हटाया था। बाद में सर्वे की जानकारी लीक करने के मामले में कोर्ट ने उनको हटा दिया था।

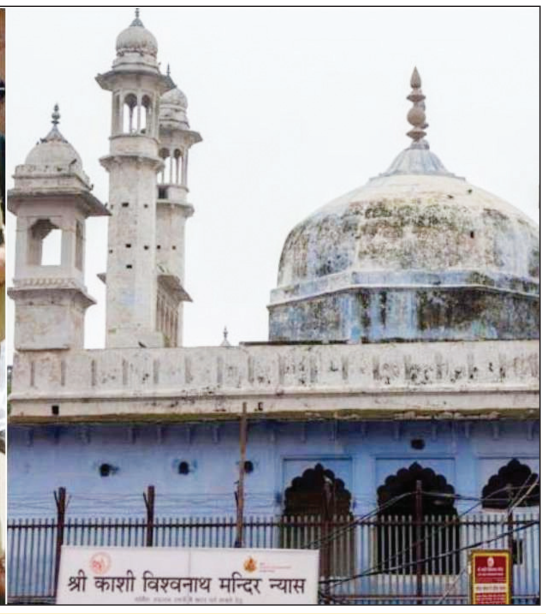

पहली एप्लिकेशन: कुछ दीवारें गिराकर वीडियोग्राफी हो

हिंदू पक्ष यानी मां श्रृंगार गौरी मामले की वादिनी सीता साहू, मंजू व्यास और रेखा पाठक की ओर से एक बार फिर ज्ञानवापी में सर्वे की मांग की गई है। ज्ञानवापी परिसर की कुछ दीवारों को गिराने सहित 4 पॉइंट्स पर एप्लिकेशन दी गई है।

ज्ञानवापी में जहां शिवलिंग मिला है, वहां और उसके आसपास कोई वजू न करे।

शिवलिंग के पूर्व और उत्तर दिशा की दीवार के साथ ही नंदी के उत्तर दिशा की दीवार तोड़ कर मलबा हटाया जाए।

शिवलिंग की लंबाई-चौड़ाई और ऊंचाई का पता लगाने के लिए कमीशन की कार्रवाई हो।

बैरिकेडिंग के अंदर पश्चिम दिशा की दीवार को तोड़ कर मंडपम की भी वीडियोग्राफी करवाई जाए।

दूसरी एप्लिकेशन: सील होने के बाद की समस्या दूर की जाए

ज्ञानवापी मामले में यूपी सरकार की ओर से वाराणसी कोर्ट में अर्जी दाखिल की गई है। सिविल महेंद्र प्रसाद पांडेय ने सिविल जज सीनियर डिवीजन रवि कुमार दिवाकर की अदालत में एप्लिकेशन दी है। इसमें तीन मांगें की गई हैं। ज्ञानवापी मस्जिद स्थित जिस 3 फीट गहरे मानव निर्मित तालाब को सीज किया गया है। उसके चारों तरफ पाइप लाइन और नल हैं। उस नल का उपयोग नमाजी वजू के लिए करते हैं। तालाब परिसर सील होने के कारण नमाजियों के वजू के लिए बाहर व्यवस्था की जाए। ज्ञानवापी के सील हुए क्षेत्र में शौचालय भी हैं। उनका उपयोग नमाजी करते हैं। अब उन्हें वहां नहीं जाने दिया जा रहा है। ऐसे में उनकी व्यवस्था की जाए। सील किए गए तालाब में कुछ मछलियां भी हैं। ऐसे में उन्हें खाने की चीजें नहीं मिल पा रही हैं। उन मछलियों को अब कहीं और पानी में छोड़ा जाए। वकीलों की हड़ताल के चलते ज्ञानवापी केस की बुधवार को सुनवाई नहीं हो पाई है। अब यह सुनवाई कल यानी 19 मई को होगी। वकीलों की हड़ताल के चलते ज्ञानवापी केस की बुधवार को सुनवाई नहीं हो पाई है। अब यह सुनवाई कल यानी 19 मई को होगी।

मप्र निकाय चुनाव: ओबीसी आरक्षण को 'सुप्रीम' झंडी

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने मध्य प्रदेश निकाय चुनाव में ओबीसी आरक्षण की अनुमति दे दी है। कोर्ट ने राज्य निर्वाचन आयोग को निर्देश दिया कि वो एक हफ्ते में अधिसूचना जारी करे। कोर्ट ने कहा कि आरक्षण देते समय 50 फीसदी की सीमा का पालन हो। पिछड़ेपन के अध्ययन के लिए राज्य सरकार की तरफ से गठित आयोग ने सुप्रीम कोर्ट को जानकारी दी थी कि ओबीसी आरक्षण के लिए तय अध्ययन किया जा चुका है। 10 मई को कोर्ट ने कहा था कि ओबीसी आरक्षण के लिए तय शर्तों को पूरा किए बिना आरक्षण नहीं मिल सकता है। फिलहाल सिर्फ एससी-एसटी आरक्षण रहेगा। याचिकाकर्ता सैयद जाफर और जया ठाकुर की तरफ से एडवोकेट वरुण ठाकुर ने सुप्रीम कोर्ट में कहा था कि संविधान के मुताबिक मध्य प्रदेश में तत्काल पंचायत एवं नगर पालिका चुनाव की घोषणा हो। संविधान के मुताबिक राज्य की पिछड़ी जातियों को प्रतिनिधित्व देते हुए पंचायत एवं नगर पालिका चुनाव में आरक्षण दिया जाए। मध्य प्रदेश सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट कोर्ट में दाखिल की थी। रिपोर्ट में आयोग ने दावा किया था कि मध्य प्रदेश में 48 प्रतिशत मतदाता अन्य पिछड़ा वर्ग के हैं। आयोग ने नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव में ओबीसी को 35 प्रतिशत आरक्षण देने की अनुशंसा की है।

नौसेना ने हेलीकॉप्टर से दागी देश की पहली एंटी-शिप मिसाइल

नई दिल्ली: डीआरडीओ के सहयोग से भारतीय नौसेना ने बुधवार को सीकिंग 42बी हेलीकॉप्टर से एंटी-शिप मिसाइल की पहली फायरिंग करके भारत की एक बार फिर ताकत दिखाई। आईटीआर, बालासोर से की गई यह फायरिंग भारतीय मिसाइल प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता हासिल करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। मिसाइल ने हेलीकॉप्टर के लिए होममेड लॉन्चर सहित कई नई तकनीकों का इस्तेमाल किया। यह भारतीय नौसेना के लिए पहली स्वदेशी हवा से लॉन्च की जाने वाली एंटी-शिप मिसाइल प्रणाली है। भारतीय नौसेना ने मिसाइल दागने का संक्षिप्त वीडियो जारी किया है, जिसमें मिसाइल से लैस एक सीकिंग 42बी हेलीकॉप्टर ओडिशा तट से दूर बालासोर में समुद्री परीक्षण रेंज के ऊपर उड़ता हुआ दिखाई दे रहा है। एक अन्य हेलीकॉप्टर अवलोकन के लिए उसका पीछा करता हुआ दिखाई देता है। आग लगने से पहले कुछ मीटर के लिए एंटी-शिप मिसाइल सीकिंग से अलग होकर तेजी से लक्ष्य की ओर उड़ान भरती है। डीआरडीओ ने एक बयान में कहा कि यह भारतीय नौसेना के लिए पहली स्वदेशी हवा से लॉन्च की गई एंटी-शिप मिसाइल प्रणाली है। मिसाइल ने नियंत्रण, मार्गदर्शन और मिशन एल्गोरिदम को मान्य करते हुए उच्च सटीकता के साथ निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुंचकर उसकी सभी प्रणालियों ने संतोषजनक प्रदर्शन किया। डीआरडीओ के बयान में कहा गया है कि परीक्षण रेंज में और निकट प्रभाव बिंदु पर तैनात सेंसर ने मिसाइल प्रक्षेपवक्र को ट्रैक करके सभी घटनाओं को कैप्चर किया। नौसेना ने ट्वीट किया कि स्वदेशी एंटी-शिप मिसाइल का परीक्षण आला मिसाइल प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता हासिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। स्वदेश में विकसित नौसैनिक पोत रोधी मिसाइल का यह पहला परीक्षण है। ओडिशा में एकीकृत परीक्षण रेंज (आईटीआर) में भारतीय नौसेना ने डीआरडीओ के साथ मिलकर यह परीक्षण किया है। डीआरडीओ और भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारियों ने परीक्षण फायरिंग को देखा।

यूपी में नए मदरसों को अब नहीं मिलेगा अनुदान

लखनऊ: उत्तर प्रदेश में अब नए मदरसों को किसी तरह का अनुदान नहीं दिया जाएगा। योगी कैबिनेट ने अपने इस फैसले से नए मदरसों को अनुदान देने के अब सभी रास्ते बंद कर दिए हैं। मंगलवार की कैबिनेट में यूपी सरकार के अल्पसंख्यक कल्याण विभाग ने नए मदरसों को अनुदान ना देने का प्रस्ताव रखा था। इस पर कैबिनेट ने अपनी मुहर लगा दी है।

यूपी में 558 मदरसों को मिल रहा है सरकारी अनुदान: उत्तर प्रदेश में कुल 16,461 मदरसे हैं।

राजीव गांधी हत्याकांड: दोषी पेरारिवलन को रिहा करने का आदेश

नई दिल्ली: सुप्रीम कोर्ट ने राजीव गांधी हत्याकांड में उम्रकैद की सजा काट रहे दोषी पेरारिवलन को रिहा करने का आदेश दिया है। जस्टिस एल नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली बेंच ने कहा कि राज्यपाल ने पेरारिवलन की अर्जी पर फैसला करने में काफी समय लगाया। कोर्ट ने कहा कि धारा 161 के तहत मिली शक्तियों की न्यायिक समीक्षा हो सकती है। कोर्ट ने केंद्र की इस दलील को खारिज कर दिया कि भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत मिली सजा माफी की मांग पर केवल राष्ट्रपति ही विचार कर सकते हैं। पेरारिवलन 30 साल की सजा काट चुका है। 27 अप्रैल को कोर्ट ने केंद्र सरकार से पूछा था कि पेरारिवलन को रिहा क्यों नहीं किया जा सकता है। जस्टिस एल नागेश्वर राव की अध्यक्षता वाली बेंच ने केंद्र सरकार से पूछा था कि बिना कानूनी पहलू पर गौर किए ये बताएं कि क्षमा करने पर फैसला करने के लिए उचित प्राधिकार राष्ट्रपति हैं या राज्यपाल। कोर्ट ने तमिलनाडु सरकार की इस बात के लिए आलोचना की थी कि इस मामले को राष्ट्रपति के पास रेफर कर दिया। कोर्ट ने कहा था कि राज्यपाल यह कहकर किसी मामले को राष्ट्रपति के पास सीधे नहीं भेज सकते हैं कि राज्य कैबिनेट ने अपने अधिकार का दुरुपयोग किया है। ऐसा करना संघवाद के खिलाफ है। पेरारिवलन की ओर से पेश वरिष्ठ वकील गोपाल शंकरनारायणन ने कहा था कि राज्य की कैबिनेट ने सजा माफ करने पर अपनी अनुशंसा राज्यपाल को भेजा था लेकिन राज्यपाल ने उसे राष्ट्रपति के पास भेज दिया। 6 सितंबर 2018 को पेरारिवलन ने राज्यपाल के पास सजा माफी की याचिका दायर की थी। 9 सितंबर 2018 को राज्य सरकार ने अपनी अनुशंसा राज्यपाल को भेज दी थी। राज्य सरकार की अनुशंसा राज्यपाल को माननी होती है।

गुजरात: हार्दिक पटेल ने कांग्रेस से दिया इस्तीफा

नई दिल्ली: गुजरात कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष हार्दिक पटेल ने पार्टी के सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। इसकी जानकारी उन्होंने बुधवार को ट्वीट कर दी। पटेल ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को लिखे पत्र में कहा कि कांग्रेस में युवाओं का सम्मान नहीं है। यह पार्टी सिर्फ विरोध की राजनीति कर रही है। कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व और राज्य कांग्रेस नेतृत्व जमीन पर काम करने में विफल है। राज्य कांग्रेस के जिम्मेदार नेता दिल्ली के शीर्ष नेतृत्व को खुश करने में ही लगे रहते हैं। वह जनता और उनके सरोकार से दूर हैं। पटेल ने कहा कि वह बीते तीन वर्षों से महसूस कर रहे हैं कि यह पार्टी सिर्फ विरोध की राजनीति में व्यस्त है। कांग्रेस जनता की भावना को समझने में विफल साबित हो रही है। उन्होंने कहा कि बीते वर्षों में चाहे सीएए का मामला रहा हो, राममंदिर का विषय या फिर धारा 370 को हटाने का मुद्दा रहा हो।

ब्रह्मपुत्र नदी को अपनी ओर मोड़ने की योजनाओं पर लगातार काम कर रहा है चीन

चीन से मुकाबला करने को भारत अरुणाचल में बनाएगा दूसरा सबसे बड़ा बांध

नई दिल्ली: चीन ब्रह्मपुत्र नदी को अपनी ओर मोड़ने की योजनाओं पर लगातार काम कर रहा है। इसी का मुकाबला करने के लिए भारत पूर्वोत्तर के अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी पर दूसरा सबसे बड़ा बांध बनाने की योजना बना रहा है। लगभग 50 हजार करोड़ रुपये की लागत वाले इस प्रस्तावित बांध से भारत को तिब्बत में नदी पर बांध बनाने के चीन के प्रयासों से जल सुरक्षा सुनिश्चित करने और बाढ़ को कम करने में मदद मिलेगी। केंद्र सरकार अरुणाचल प्रदेश के यिंगकिओंग में ब्रह्मपुत्र नदी पर भारत का दूसरा सबसे बड़ा बांध बनाने की योजना बना रही है। लगभग 50 हजार करोड़ की लागत से बनने वाला यह प्रस्तावित जलाशय लगभग 10 बिलियन क्यूबिक मीटर (बीसीएम) पानी का भंडारण करेगा। भारत ने यह फैसला ब्रह्मपुत्र नदी (चीन में यारलुंग त्सांगपो) पर विशाल बांधों के निर्माण की चीनी योजनाओं का मुकाबला करने के लिए लिया है। ब्रह्मपुत्र नदी की कुल लंबाई 2,880 किमी. है, जिसमें से 918 किमी. भारत में बहती है। नदी में बहने वाले पानी का 75 प्रतिशत हिस्सा भारत के जलग्रहण क्षेत्रों से आता है। साथ ही गैर-मानसून मौसम में पानी का बड़ा हिस्सा तिब्बत में बर्फ पिघलने से नदी को मिलता है। ब्रह्मपुत्र में नदी के पानी को स्टोर या डायवर्ट करने का चीनी प्रयास भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र और बांग्लादेश की जल सुरक्षा को चुनौती दे सकता है। सरकार का अनुमान है कि अरुणाचल के ऊपरी इलाकों में बांध निर्माण से बाढ़ के प्रभाव और चीन की इसे प्रेरित करने की क्षमता कम हो जाएगी।

दिल्ली: एलजी अनिल बैजल ने दिया इस्तीफा

निजी कारणों का दिया हवाला, राष्ट्रपति को सौंपा इस्तीफा

नई दिल्ली: दिल्ली के उपराज्यपाल अनिल बैजल ने बुधवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने अपना इस्तीफा राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को सौंपा। अनिल बैजल ने इसके लिए हालांकि निजी कारणों का हवाला दिया है। पूर्व आईएएस अधिकारी बैजल को 31 दिसंबर 2016 को उप-राज्यपाल नियुक्त किया गया था। उप-राज्यपाल बैजल और दिल्ली में शासित आम आदमी पार्टी (आप) सरकार के बीच विभिन्न मुद्दों पर हमेशा से ही तनातनी रही है। इस साल भी कोरोना की चौथी लहर के दौरान ऑड-ईवन नियम पर दिल्ली सरकार और एलजी में एकराय नहीं बनी थी। इस दौरान एलजी अनिल बैजल ने केजरीवाल सरकार के प्रस्ताव को मानने से इनकार कर दिया था।

खबर संक्षेप

रेलवे पटरी पर अज्ञात युवक का शव मिलने से हडकंप

सिरसा। प्रयागराज मेजा क्षेत्र दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग से मेजा रोड रेलवे स्टेशन की पश्चिमी छोर के अपलाइन रेलवे पटरी पर अज्ञात युवक का शव मिलने से हड़कंप मच गया। बता दें कि बुधवार सुबह मेजा रोड रेलवे स्टेशन के अपलाइन रेलवे पटरी के बगल अज्ञात युवक का शव पाया गया। मामले की जानकारी पर आरपीएफ के सिपाही ने मौके पर पहुंच युवक की शिनाख्त करवाने में जुटे रहे। वही मौजूद लोगों ने बताया कि युवक के शव के हिसाब से ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त युवक देर रात में ट्रेन से गिरा हुआ है फिलहाल मामले की जानकारी जीआरपी नैनी को दे दी गई है।

निःशुल्क विवाह के लिये 25 तक करें आवेदन

शंकरगढ़। माननीय मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना अंतर्गत नगर पंचायत कार्यालय शंकरगढ़ में निःशुल्क पंजीयन किया जा रहा है।इस आशय की जानकारी नगर पंचायत शंकरगढ़ के ईओ सत्येंद्र प्रकाश चौरसिया ने देते हुए बताया कि जो भी पात्र लाभार्थी पंजीयन के इच्छुक हो नगर पंचायत कार्यालय में आकर पंजीयन 25 मई तक करा सकते हैं। विवाह के लिये कन्या की उम्र 18 वर्ष से कम ना हो और नगर पंचायत का निवासी हो। इस संबंध में नगर पंचायत के लिपिक प्रदीप कुमार और मनीष केसरवानी से संबंधित जानकारी ले सकते हैं।

महिला जनसुनवाई : राज्य महिला आयोग की सदस्या ने सुनी पीड़ित महिलाओं की समस्याएं

अखंड भारत संदेश

जनसुनवाई में कुल 19 प्रकरण सुनवाई के लिए आएं जिनमें से 5 प्रकरणों का मौके पर ही किया गया निस्तारण

प्रयागराज। मा. सदस्या, उ.प्र. राज्य महिला आयोग सुश्री उषा रानी के द्वारा बुधवार को सर्किट हाऊस में महिलाओं से सम्बंधित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं विषयक जागरूकता शिविर एवं महिला जनसुनवाई की गयी। जनसुनवाई में घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, योजनाओं का लाभ न मिलने, अवैध कब्जे से सम्बंधित शिकायतों सहित अन्य कई शिकायतें सुनवाई के लिए आयी। उन्होंने कहा कि महिला आयोग का गठन पीड़ित महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए ही हुआ है। यदि किसी महिला को न्याय मिलने में कोई परेशानी आ रही है तो वे अपनी समस्या को लेकर महिला जनसुनवाई में जरूर आये। जनसुनवाई में पीड़ित महिलाओं की पूरी सहायता की जायेगी। महिला जनसुनवाई में कुल 19 प्रकरण सुनवाई के लिए आये, जिनमें से 5 प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण कर दिया गया।जनसुनवाई में रामलली यादव पत्नी श्री रामानन्द यादव निवासी शिवकूटी थाना शिवकूटी के द्वारा सदस्य के समक्ष दबंगों द्वारा उनके मकान के आने-जाने के मार्ग पर कब्जा किए जाने की शिकायत की, जिसपर सदस्या ने सम्बंधित थानें को मौके पर तुरंत जाकर अवैध कब्जे को हटाये जाने व दबंगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई किए जाने के निर्देश दिए है। जेबा राईन निवासी फूलपुर ने ससुराल वालों पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने की शिकायत की, जिसपर सदस्या ने थानाध्यक्ष फूलपुर को मामले की जांच कर कार्रवाई करने हेतु निर्देशित किया है। जनसुनवाई में अपनी शिकायत लेकर आयीं हुई प्रार्थिनी सुंदरी देवी पत्नी स्व0 मुक्कुर निवासी गंगोली शिवाला झूँसी के द्वारा अपराधियों व भूमाफियाओं के द्वारा अवैध रूप से उसकी भूमि पर कब्जा करने की शिकायत की, जिसपर सदस्या ने थानाध्यक्ष झूंसी को उक्त शिकायत पर गम्भीरता के साथ कार्रवाई करते हुए मामले का निस्तारण करने के निर्देश दिए है। सदस्या ने सभी शिकायती प्रार्थना पत्रों पर गुणवत्ता के साथ त्वरित कार्रवाई करते हुए निस्तारित करने का निर्देश दिया है। साथ ही जनसुनवाई में वृद्धापेंशन, आवास तथा अन्य योजनाओं से सम्बंधित प्रार्थना पत्र दिए गए, जिसपर सदस्य ने आवश्यक कार्यवाही करने के लिए कहा है। उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देशित किया कि कोई महिला अगर शिकायत लेकर थाने में जाती है, तो पूरी गम्भीरता/संवेदना के साथ महिलाओं की शिकायतों को सुनते हुए आवश्यक कार्यवाही करते हुए शिकायतकर्ता को संतुष्ट किया जाये। उन्होंने कहा कि इसमें किसी प्रकार की शिथिलता, लापरवाही न बरती जाये। उन्होंने कहा कि महिला जन सुनवाई में आने वाले शिकायती प्रकरणों के निस्तारण की मानिटरिंग सुनवाई के बाद नियमित रूप से आयोग के स्तर पर की जाती है इसलिए प्रकरणों को बेवजह लम्बित करने तथा पीड़ित महिलाओ को न्याय दिलाने में किसी प्रकार की शिथिलता न बरती जाये। सदस्या ने बैठक में उपस्थित सभी थानों के पुलिस अधिकारियों को यह हिदायत दी कि जनसुनवाई में पूर्व में आये हुए प्रकरणों के निस्तारण की कृत कार्रवाई से अवगत करायें साथ मे हुई कार्रवाई की आख्या लेकर आयें। इस अवसर पर सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे। जनसुनवाई के पूर्व सदस्या ने बहादुर ब्लाक में स्थित कस्तूरबा गांधी विद्यालय, थाना सरायईनायत, झूँस पूर्व माध्यमिक विद्यालय हवेलिया झूंसी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कस्तूरबा विद्यालय पहुंचकर वहां के वार्डन माधुरी त्रिपाठी से विद्यालयों में बच्चों की संख्या के बारे में जानकारी ली, बच्चों की संख्या संतोषजनक न होने पर नाराजगी व्यक्त की।

उन्होंने विद्यालय में साफ-सफाई की व्यवस्था पर नाराजगी व्यक्त करते हुए साफ-सफाई की व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त बनाये रखने के लिए कहा है। सदस्या ने थाना सरायईनायत एवं झूंसी के निरीक्षण के दौरान महिला हेल्प डेस्क में अनिवार्य रूप से हर समय महिला सिपाही की ड्यूटी सुनिश्चित किए जाने तथा थानों के शौचालयों में साफ-सफाई का विशेष ध्यान दिए जाने के लिए कहा है।

न्यूज झरोखा

प्रमुख सहसों ने तालाब खुदाई के लिए किया भूमिपूजन

सहसों। आजादी के अमृत महोत्सव पर विकासखंड सहसों क्षेत्र के ग्राम सभा खोदायपुर में अमृत सरोवर के अंतर्गत बुधवार को ब्लाक प्रमुख सहसों गीता सिंह ने तालाब की खुदाई के लिए भूमि पूजन विधि विधान से वैदिक मंत्रों द्वारा किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा चलाए गए इस अभियान से जहां पशु पक्षियों, जानवरों को पीने के पानी के लिए सुविधा होगी वहीं प्राकृतिक वातावरण स्वच्छ बनाने में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगी। उन्होंने कहा इससे जल संरक्षण में सहयोग प्राप्त होगा और जल की कमी की पूर्ति होती रहेगी और ग्राम सभा की सुंदरता भी बनी रहेगी। उन्होंने बताया कि पूरे विकासखंड में तीन ग्राम सभा चयनित किए गए हैं जिनमें मनापुर उर्फ बगई कला, मनेथू व खोदायपुर का चयन किया गया है। इस अवसर पर प्रमुख प्रतिनिधि शिव नारायण सिंह गप्पू , अवर अभियंता गिरिजा शंकर यादव, एवं ग्राम प्रधान कुंदन सिंह, ग्राम विकास अधिकारी लाल प्रताप यादव, ग्राम विकास अधिकारी अजय राना, अजय कुमार यादव सहित आदि ग्रामीण लोग उपस्थित रहे।

फिरोज हॉस्पिटल के निदेशक डॉ नजम ने क्षय रोगियो को लिया गोद

करछना। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जनपद प्रयागराज में क्षय रोगियों को गोद लेने हेतु प्रदेश स्तर पर अभियान चलाने हेतु निर्देशित किया गया है, जिसमें फिरोज हॉस्पिटल रामपुर करछना के निदेशक डॉ नजम द्वारा कुछ क्षयरोगियो को गोद लिया गया है, इसके साथ ही साथ डॉ नजम द्वारा गोद लिए हुए क्षयरोगियो को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र करछना के अधीक्षक डाक्टर नवीन गिरि के नेतृत्व में पौष्टिक आहार वितरण किया गया इसी प्रकार प्रत्येक माह में गोद लिए हुए क्षयरोगियो की जांच एवं पौष्टिक आहार उन्हे वितरित किया जायेगा। डाक्टर नजम ने क्षेत्र के सभी प्रतिष्ठित नागरिकों से क्षयरोगियो को गोद लेकर सरकार के इस अभियान एवं समाज को एक नई दिशा में सहयोग की भी अपील किया है ।

अलग-अलग हिस्सों से दस लोगों का शांतिभंग में चालान

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने क्षेत्र के अलग-अलग हिस्सों से 10 लोगों का शांति भंग में चालान किया है।एसओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि शंकरगढ़ थाने के ही सब इंस्पेक्टर प्रवेश कुमार यादव ने अपनी टीम के साथ विनोद कुमार पुत्र भोला तिवारी (शिवराजपुर), देवकरन पाल पुत्र रामनरेश पाल (बसहरा) और राममणि पाल पुत्र जगपाल (बसहरा) का शांतिभंग में चालान किया है। इसी कड़ी में दरोगा प्रवेश कुमार यादव, उपनिरीक्षक अजीत कुमार वर्मा, उपनिरीक्षक सुमित कुमार वर्मा, कांस्टेबल दीप कुमार, कांस्टेबल बलिराम व कांस्टेबल अभय कुमार ने नितीश ओझा पुत्र पुष्पराज ओझा (वार्ड पांच, मोदीनगर, शंकरगढ़), विकास तिवारी पुत्र ज्ञानेंद्र तिवारी (पटहट रोड), रोहित गिहार पुत्र फूलचंद्र (कुचबधियान टोला, धर्मनगर), जावेद पुत्र लालजी गिहार (कुचबधियान टोला, धर्मनगर), सूबेलाल पुत्र परशुराम (मोटियान टोला, वार्ड पांच), दिवाकर आदिवासी पुत्र केदारनाथ (मोटियान टोला) और राकेश पुत्र राजमणि (क्वारी नंबर पांच, शिवराजपुर) को गिरफ्तार किया है। इन सभी का धारा 151, 107, 116 में चालान किया गया है।

परिषदीय विद्यालय के बच्चों संग शिक्षिकों ने सड़क सुरक्षा को लेकर निकाली जागरूकता रैली

अखंड भारत संदेश

प्रार्थना स्थल पर भी बच्चो को बताये गए यातायात के नियम

रैली निकाल जागरूक करते हैं स्कूल के बच्चे

सोरांव। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रयागराज एवं खंड शिक्षा अधिकारी विनोद मिश्रा के निर्देशन में सड़क सुरक्षा संबंधी जागरूकता अभियान के तहत प्राथमिक विद्यालय हरिजन बस्ती सराय बाहर एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालय सराय बाहर द्वारा संयुक्त रूप से बुधवार को सराय बाहर में प्रभात फेरी निकाली गई। तथा विद्यालय की जिम्मेदार प्रधानाध्यापिका स्नेहलता ने प्रार्थना सभा में बच्चों को सड़क सुरक्षा के बारे में जानकारी दी एवं शपथ दिलाई। इतना ही नहीं बच्चों के मध्य पोस्टर, पेंटिंग आदि की प्रतियोगिता भी कराई गई। बच्चों द्वारा स्लोगन दुर्घटना से देर भली, आपकी परिवार की सुरक्षा, दुर्घटना से रखनी है। तथा हेलमेट की अनिवार्यता के बारे में भी वृहद जानकारी दिए। इस मौके पर डोला बनर्जी एवम स्नेहलता ने कहा कि पैदल चलते वक्त हमेशा फुटपाथ का प्रयोग करना चाहिए। और जहां फुटपाथ ना हो वहां सदैव सड़क के बाए ओर से चलना चाहिए। वाहन चलाते या सड़क यात्रा के वक्त कभी जल्दबाजी ना दिखाएं, कभी भी सिग्नल तोड़कर या जल्दबाजी में भागकर रास्ता पार ना करें। ट्रैफिक सिग्नल तथा नियमों की पूरी जानकारी भी दिए। इस मौके पर विद्यालय की प्रधानाध्यापिका स्नेह लता और डोला बनर्जी संग अध्यापिका पूनम वर्मा, प्रतिमा जायसवाल, प्रतिभा विश्वकर्मा मीना शर्मा, मोना त्रिपाठी तथा विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्य एवं प्रेरणा साथी मिलकर ग्राम वासियों को एवं बच्चों को जागरूक किए।

जर्जर सड़क और पेयजल के मुद्दे का हल जरूरी : डॉ.पाण्डेय

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज बिगत कुछ वर्षो मे करछना में कई सडको का जोर्णोद्धार तो किया गया किन्तु अभी भी कुछ जरूरी जर्जर सड़के नव निर्माण का बाट जोह रही है।बेदौं से दिघिया मार्ग की सडक जगह-जगह टूटकर जर्जर हो गई है तो वही साधुकूटी से मनैया गंगा घाट तक की सडक में जगह-जगह गढढे हो चुके है और राहगीरों का चलना भी मुश्किल हो गया है।ऐसे स्थिति में दोनों सड़को को प्रधानमंत्री ग्रामीण सडक योजना से जोड़कर जीर्णोद्धार के लिए मुख्य अभियंता से मिलकर मिशन के प्रतिनिधि मण्डल ने गुहार लगाई है।यह बातें बुधवार को जागृति मिशन की एक बैठक के दौरान रामपुर में संयोजक डॉ. भगवत पाण्डेय ने कार्यकर्ताओ के बीच कही।उन्होने कहा कि मनैया गंगा घाट तक सैकड़ो गांव के लोग शवदाह तक के लिए पहुंचते हैं और काफी दिनों से साधुकूटी के आगे यह सड़क पूरी तरह लावारिश है।इसके अलावा भी क्षेत्र के कई गांवों में पुराने हैंड़पंप रिबोर की स्थिति में हैं जिनके लिए ब्लाक प्रमुख से संपर्क साधते हुए बिना किसी भेदभाव के रिबोर करवाने हेतु जोर दिया है।तीरथराज पाण्डेय ने कहा कि बेदौं की सड़क को पांच के भीतर फिर से जीर्णोद्धार किया जाना था इसके बीच भी टूटी सड़क को लेकर कईबार शिकायत की गई किन्तु कोई हल नही निकला।बेदौ और मनैया घाट की सडक बहुत जरूरी है।उधर पेयजल के मुद्धे को लेकर भी मिशन के लोगों ने कहा कि पूरे जमुनापार के पठारी और लापर क्षेत्र में भीषण गर्मी के दिनों में कई गांव के लोग पानी की किल्लत से जूझते है।इस समस्या का गंभीरता से निदान होना बहुत जरूरी है।बैठक में दिनेश तिवारी,मुख्तार अहमद,कमला शंकर त्रिपाठी,विजय बहादुर चौधरी,मनोज दुबे,विजय पाल,अशोक सिंह,अशोक विश्वकर्मा,मानिक चन्द्र ओझा,सीताराम निषाद,पिंटू गुप्ता, राजमणि चौधरी,अतुल तिवारी समेत मिशन के कार्यकर्ता और कई ग्रामीण मौजूद रहे।

सामाजिक समरसता की महात्मा बुद्ध ने की स्थापना

अखंड भारत संदेश

हरियाली स्वच्छता का संकल्प लेते प्रबुद्ध जन।

सहसों। बुद्ध पूर्णिमा पर जल जीवन हरियाली का लोगों ने संकल्प लिया। बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर छत्रपति शाहूजी महाराज पार्क सहसों गोल चौराहे परिसर में प्रबुद्ध जनों, समाजसेवी एवं सामाजिक उत्थान संस्थान के कार्यकर्ता गंण ने वरिष्ठ नागरिक धीरेंद्र सिंह की अध्यक्षता में गौतम बुध के चिंतन सच का साथ देते रहो, अच्छा सोचो, अच्छा करो, अच्छा कहो, प्रेम धारा बनकर बहो को आत्मसात करने पर जोर दिया गया। उपस्थित वक्ताओं ने कहा आपके लिए बुद्ध पूर्णिमा शुभ हो, हृदय में शांति का वास हो ,सत्य अहिंसा प्रेम असतेय अपरिग्रह जीवन में अपनाने से जीवन में हरियाली के साथ समाज में शांति व समरसता स्थापित होगी। कार्यक्रम में उपस्थित प्रबुद्ध जनों ने बुद्धम शरणम गच्छामि, संघम शरणम गच्छामि, धम्मम शरणम गच्छामि के उद्घोष के साथ बुद्ध जी के विचारों को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के समापन पर स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत जल जीवन हरियाली एवं स्वच्छता के लिए सभी ने संकल्प लिया। इसी क्रम में वरिष्ठ जन ने श्रमदान के द्वारा आगामी 22 मई रविवार को विशाल दिव्य अमृत सरोवर पक्का तालाब लाहुरपुर, हनुमानगंज के जर्जर,अपार गंदगी से पटा हुआ पक्का तालाब की सफाई के लिए संकल्प को पूरा करेगें। कार्यक्रम में रामानुज सिंह, नरेंद्र सिंह, विजय कुमार सिंह, विजय पटेल, रामप्रताप पासी, गणेश केसरवानी, रावेंद्र सिंह, फूल सिंह पटेल,भागीरथी भारतीय, गुलाब सिंह , इंजीनियर प्रेम सिंह, अजीत सिंह, राम प्रकाश सिंह, सुरेंद्र सिंह आदि लोग शामिल रहे।

दलित महिला को अपहरण कर मुंबई ले जाकर किया दुराचार , मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। शौच के लिए गयी दलित महिला को अपहरण कर लिया गया और नशीली पदार्थ खिला कर पिता पुत्र ने सामूहिक बलात्कार किया।दलित महिला ने पिता और पुत्र के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।पुलिस आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव की एक दलित महिला का आरोप है कि वह एक सप्ताह पूर्व शौच हेतु गयी थी। आरोप है कि गांव के एक युवक और उसके पिता उसका अपहरण कर प्रयागराज स्टेशन ले गए जहां उसे मुंबई ले जा कर नशीली पदार्थ खिला कर उसके साथ दोनों सामूहिक बलात्कार करते रहे। दलित महिला का आरोप है कि वह किसी तरह दोनों के चंगुल से मुक्त पाकर किसी तरह गांव आयी और परिजनों को आप बीती बतायी। ईको मेडिकल चेकअप के लिए भेज दिया है और पुलिस आरोपियों की तलाश में दबिश दे रही है।

डेंगुरपुर गंगा घाट पांटून पुल,चकर्ड प्लेटें हादसे को दे रहीं दावत

अखंड भारत संदेश

गंगा पुल पर मौजूद क्षतिग्रस्त गाड़ी

मेजारोड। भदोही व प्रयागराज जनपद को जोड़ने वाले डेंगुरपुर गंगा घाट पर निर्मित कराए गए पांटून पुल को मौत का कुआं अब बिल्कुल कहा जा सकता है। पांटून पुल पर बिछाई गई चकर्ड प्लेटें बड़े हादसे को दावत दी रही हैं। लेकिन जिम्मेदार कुम्भकर्णी नींद में मशगूल है। मौत के कुएं की एक वीडियो इंटरनेट मीडिया पर जमकर वायरल हो रही है जो हर किसी मे भी भर गई है।

गौरतलब हो कि मांडा के डेंगुरपुर वाया धनतुलसी पांटून पुल का निर्माण मोटी लागत के बाद कराया गया था। राहगीरों सहित वाहनों के आवागमन की समुचित व्यवस्था किए बिना आवागमन शुरू कर दिया गया। इडक खामियाजा वाहन स्वामियों सहित राहगीरों को भुगतना पड़ रहा है।बतादें की बुधवार की दोपहर भदोही जिले से प्रयागराज के लिए यात्रा कर रही एक कार पांटून पुल के बीच बिछाई गई चकर्ड प्लेट में फंस गई। इससे कार का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। गनीमत रही कि चालक की सूझबूझ से कार को तत्कालीन पीछे कर लिया। इससे बड़ा हादसा होने से बच गया। इसके बाद वाहनों का आवागमन भी बंद करा दिया गया।वहीं राजगीर सन्तोष आदिवासी निवासी भदोही, हरिशंकर निवासी बरौत व जगदीश सिंह मांडा ने जानकारी देते हुए बताया कि बीते एक माह में आधा दर्जन से अधिक बड़ी घटनाएं होने से बची हैं। इसकी शिकायत लोक निर्माण विभाग से किये जाने के बावजूद भी कोई सुनवाई नहीं हो रही है।

झूंसी में पीडीए ने आधा दर्जन अवैध निर्माण किये सील

झूंसी। पीडीए ने झूंसी में अवैध निर्माण के खिलाफ कार्यवाही की। आधा दर्जन अवैध निर्माण को सील कर नोटिस चस्पा कर दिया घंटों चली कार्यवाही के दौरान निर्माण करा रहे लोगों में हड़कंप मचा रहा। जोनल अजय कुमार के नेतृत्व में प्रयागराज विकास प्राधिकरण का दस्ता बुधवार को झूंसी पहुंचा तो भू माफियाओं व अवैध प्लाटों के साथ अपनी जमा पूंजी लगा कर छोटा सा आशियाना बना रहे लोगो में भी हड़कंप मच गया। पीडीए ने क्षेत्र में हो रहे अवैध निर्माण के खिलाफ कार्यवाही करते हुए जीटी रोड स्थित मो. कयूम बीकानेर, चक हरिहर वन में मुजीब खान, कनिहार रोड विजय लक्ष्मी, देवनगर प्रफुल्ल सिंह, मायापुरी रामराज यादव, राजकुमार यादव द्वारा कराये जा रहे निर्माण को अवैध बताकर सील कर दिया। इस दौरान अवर अभियंता राजेश अग्रवाल पीडीए सचल दस्ता एवं प्रवर्तन दल टीम मौजूद रही।

पारदर्शिता पर प्रश्न चिन्ह! सरकारी नियमों की मातहतों नें उडाई धज्जियां

निविदा प्रकाशन के बगैर विकास खंड करछना में कर दिया गया लाखों का भुगतान

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज विकासखंड करछना के अंतर्गत अधिकांश ग्राम पंचायतों में बगैर निविदा/ टेंडर प्रकाशन के कराए गए कार्य का भुगतान सचिवों की लापरवाही के चलते निस्तारित कर दिए गए सरकार के मनसा के अनुसार गांव में कराए जा रहे विकास कार्यों की पारदर्शिता के लिए फर्म के माध्यम से कार्यों को कराए जाने का निर्देश है जिसके लिए एक लाख के ऊपर कराए जाने वाले कार्य का निविदा /टेंडर का प्रकाशन कराना अनिवार्य है वहीं विकासखंड करछना के अधिकांश ग्राम पंचायतों में बिना निविदा के ही कार्य करा लिए गए हैं जिसका भुगतान भी सचिवों के माध्यम से कर दिया गया है , सरकारी नियमों का पालन नहीं किया गया वही विकास कार्यों में गावों में कार्य कर रही फर्म के ठेकेदारों का अहम रोल सामने उजागर हो रहे हैं, अपने काम एवं कमीशन के लालच में सरकारी नियमों की जम कर धज्जियां उड़ाई गई है, विकास खंड करछना के ग्राम पंचायत मडवा में एक वर्ष के बीच जितने भी कार्य कराए गए हैं सभी के भुगतान हो चुके हैं लेकिन निविदा प्रकाशन के बगैर ।विकास खंड करछना में अस्सी ग्राम पंचायतों में लगभग 25% तक ग्राम पंचायतों में निविदा/टेंडर अपूर्ण है, सरकारी नियमों को ताक पर रखकर कार्य कराए जा रहे हैं तथा कुछ प्रधानों का यह भी आरोप है कि , इस विषय में ग्राम प्रधान मडवा राकेश कुमार नें बताया कि उन्हें सचिव द्वारा जानकारी नहीं दी गई लेकिन वही कुछ प्रधान सक्रियता दिखाते हुए सही मायने में कराए जाने वाले कार्य के पूर्व निविदा/ टेंडर का प्रकाशन कराकर तब जाकर गांव में काम शुरू कराया है लेकिन अधिकांश गांव में बिना निविदा प्रकाशन के ही कार्य कराए गए और सचिवों द्वारा एमबी कर के भुगतान भी कर दिए गए जो सरकारी नियमों के विरुद्ध है।इस संबंध में खंड विकास अधिकारी करछना राम विलास राय ने बताया कि यह जिम्मेदारी प्रधान एवं सचिव की हैं, ऐसी जानकारी होने पर सरकारी नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ कार्रवाई भी हो सकती है।

नये मीडिया ने आम आदमी को जोड़ा है-हर्षवर्धन

झूंसी। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज द्वारा चुनाव प्रबंधन में मीडिया शोध की भूमिका विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति दर्शनशात्र के आचार्य प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। प्रो. शुक्ल ने मीडिया शोध के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मीडिया शोध को केवल डाटा विश्लेषण से नहीं समझा जा सकता और ना ही केवल तकनीक या कृत्रिम बुद्धि के भरोसे सही आंकड़े प्राप्त किए जा सकते हैं। उसके पास विश्वसनीय डाटा है कि नहीं डाटा एकत्रीकरण किसी शोधार्थी द्वारा दिया गया है अथवा किसी अन्य द्वारा, डाटा पूर्वाग्रह मुक्त है या पूर्वाग्रहपूर्ण। संगोष्ठी में वक्ता के रूप में राजनीतिक विश्लेषक और स्तंभकार हर्षवर्धन त्रिपाठी ने चुनाव प्रबंधन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नये मीडिया ने आम आदमी को जोड़ा है। गोबिंद बल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. बद्रीनारायण तिवारी ने कहा कि आज का चुनाव अवधारणा और नरेशन का चुनाव है। ओपिनियन चुनाव को प्रभावित करता है। प्रो. संजय द्विवेदी, प्रो. गिरीश नाथ झा, प्रो. कृपाशंकर चौबे ने अपने अपने विचार रखे। अकादमिक निदेशक प्रो. अखिलेश कुमार दुबे ने कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की और अतिथियों का स्वागत एवं परिचय प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. अख्तर आलम एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. शिखा शुक्ला और डॉ. संतोष मिश्रा ने किया।

कोरांव में बाइक चोरो का हौसला बुलंद आये दिन हो रही है चोरी

अखंड भारत संदेश

दोपहर में बीओबी बैंक के बाहर खड़ी बाइक को बेखौफ चोरों ने उड़ाया, सब्जी मंडी से बाइक चोरी की वारदात सीसीटीवी फुटेज में हुई कैद

रत्योंरा। स्थानीय थाना क्षेत्र में इन दिनों बाइक चोरी की वारदातों का गढ़ बनता जा रहा है। कोरांव कस्बे समेत ग्रामीण इलाकों से आए दिन बाइक चोरी की घटनाएं हो रही है, चोरो का खुलासा न होने से हौसला बुलंद हैं।किंतु इलाकाई पुलिस चोरी गई बाइकों को न तो बरामद कर पा रही है और न ही चोरों को गिरफ्तार कर पा रही है। जिससे बाइक चोरी की घटनाओं का सिलसिला बढ़ता ही जा रहा है। बुधवार को दोपहर एक बजे के आसपास कोरांव बाजार के लेडियारी रोड पर स्थित बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा में सतीश कुमार मौर्य पुत्र जगदंबा प्रसाद निवासी गड़िया मुरलीपुर अपनी बाइक प्लैटिना लेकर आया हुआ था। वह बैंक गेट के सामने अपनी बाइक खड़ी कर बैंक के अंदर चला गया। जब थोड़ी देर बाद वह बाहर निकला तो उसकी बाइक अज्ञात चोरों ने उड़ा चुके थे। बाहर वह अपनी बाइक न देख तत्काल 112 डायल कर पुलिस को सूचना दी। कुछ ही देर में पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस की तफ्तीश में पता चला कि बैंक ऑफ बड़ौदा शाखा कोरांव में लगा सीसीटीवी कैमरा खराब है। जब बैंकों के यह हालात हैं, सीसीटीवी कैमरे खराब हैं। कोई बड़ी वारदात या घटना या हादसे होते हैं तो लोग विश्वास रखते हैं कि बैंक के कैमरे से घटना की जानकारी मिलेगी। लेकिन जब बैंकों के ही कैमरे खराब पड़े हैं तो अपराध होने स्वाभाविक है। इसी प्रकार बीते 13 मई को कोरांव सब्जी मंडी से संजय मौर्या पुत्र सहदेव निवासी महुली की स्प्लेंडर प्लस बाइक चोरी हो गई थी। जिसका कोरांव पुलिस ने मुकदमा भी दर्ज किया है। इसी प्रकार सब्जी मंडी से आधा दर्जन से अधिक बाइक चोरी की घटनाओं के थाने में मामले दर्ज है, किंतु किसी भी बाइक चोरी की वारदात का पुलिस खुलासा नहीं कर सकी। जिससे बाइक चोरों के हौसले बुलंद हैं, और क्षेत्र में आए दिन बाइक चोरी की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं।

खबर संक्षेप

80 साल की वृद्धा के बलात्कार और हत्या में आजीवन कारावास की सजा बरकरार

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गौतमबुद्धनगर की 80 साल की वृद्धा के बलात्कार और हत्या के मामले में सुनवाई करते हुए कहा कि रिश्ता या संबंध गवाह की विश्वसनीयता को प्रभावित करने वाला कारक नहीं है। कोर्ट ने कहा कि क्योंकि परिवार के सदस्यों की गवाह के रूप में जांच करने पर कानून में कोई रोक नहीं है। गवाह केसाक्ष्य पर भरोसा किया जा सकता है बशर्ते उसकी विश्वसनीयता भरोसेमंद हो। यह आदेश न्यायमूर्ति सुनीत कुमार और न्यायमूर्ति विक्रम डी. चौहान की खंडपीठ ने मनवीर की अपील को खारिज करते हुए दिया है। मामले में आरोपी के खिलाफ गौतमबुद्धनगर केसेक्टर 49 में 80 वर्षीय वृद्ध महिला की बलात्कार के बाद उसकी हत्या केआरोप में 2006 में एफआईआर दर्ज कराई गई थी। सत्र न्यायालय ने छह दिसंबर 2007 को दिए आदेश में दोषी मानते हुए उम्रकैद और 10 हजार रुपये जुमार्ने की सजा सुनाई थी। याची ने सत्र न्यायालय केफैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी।

एसओ कोतवाली नरेंद्र प्रसाद निलंबित

अब तक 132 पुलिस कर्मियों के खिलाफ हुई कार्रवाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। शासकीय कार्यों में लापरवाही, काम के प्रति उदासीनता, मनमाना रवैया अपनाने वाले थाना प्रभारी इंस्पेक्टर नरेंद्र प्रसाद को प्रयागराज के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने निलंबित कर दिया है। इस निलंबन के साथ प्रयागराज में 6 जनवरी 2022 से लेकर 18 मई 2022 तक कुल 132 पुलिसकर्मियों के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की गई है।

थाना प्रभारी नरेन्द्र प्रसाद कर रहे थे मनमानी : थाना प्रभारी कोतवाली नरेंद्र प्रसाद सरकारी कार्यों में घोर लापरवाही व उदासीनता बरत रहे थे। उनपर एवं स्वेच्छाचारिता बरतने का आरोप था। काम में ढीलाढाली के आरोप में एसएसपी ने उन्हें निलंबित किया है। एसओ के खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इससे पूर्व भी कई थानाध्यक्षों के खिलाफ कार्रवाई हो चुकी है।

132 दिनों में कुल 132 पुलिसकर्मियों पर हुई कार्रवाई : प्रयागराज के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय कुमार ने बताया कि काम के प्रति उदासीनता बरतने वाले और मनमानी रवैया अपनाने वालों को कतई बक्शा नहीं जाएगा। अपराधियों को सुरक्षा व संरक्षण देने वालों के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की गई है।

44 पुलिसकर्मी हुए लाइन हाज़िर : अजय कुमार ने बताया कि प्रयागराज में काम में लापरवाही बरतने वाले कुल 4 इंस्पेक्टर, 23 सब इंस्पेक्टर, 1 मुख्य आरक्षी, व 16 आरक्षियों को लाइन हाजिर किया गया है।

88 पुलिसकर्मी किए गए निलंबित : काम में लापरवाही बरतने वाले 6 इंस्पेक्टर्स को निलंबित किया गया है। इसके अलावा 28 सब इंस्पेक्टर्स, 16 मुख्य आरक्षी, 37 आरक्षी व एक अनुचर को निलंबित किया गया है।

लापरवाह पुलिसकर्मी होंगे दंडित

प्रयागराज के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय कुमार का कहना है कि यह घटना उन पुलिसवालों के लिए सीख है कि आपराधिक प्रवृत्ति के पुलिसकर्मियों, अपराधियों से साठ-गांठ रखने वाले, महिलाओं, नाबालिग बच्चियों तथा बच्चों से संबंधित मामलों में जान बूझकर लापरवाही, आलस्य, ढुलमुल रवैया बरतने वाले पुलिस अधिकारियों / कर्मचारियों पर कठोर कार्यवाही होगी। कानून-व्यवस्था का पालन न करने वाले और कानून को अपने हाथ में लेने वालों को बख्शा नहीं जाएगा फिर चाहे वो पुलिस डिपार्टमेंट का ही बंदा क्यों न हो। इसके अलावा विभाग में मनमर्जी से काम करने वालों को भी नहीं बख्शा जाएगा।

एसआई भर्ती में फजीवाड़ा, सिपाही समेत दो गिरफ्तार

प्रयागराज। यूपी एसआई भर्ती 2020-21 में फजीर्वाड़ा करने के आरोपी सिपाही समेत दो अभ्यर्थी बुधवार को गिरफ्तार कर लिए गए। पुलिस लाइन में दस्तावेज सत्यापन के लिए पहुंचने पर इन्हें हिरासत में ले लिया गया। इसके बाद कर्नलगंज थाने में पुलिस भर्ती बोर्ड के आदेश पर रिपोर्ट दर्ज कर दोनों को जेल भेज दिया गया।पकड़े गए आरोपियों में मनमोहन यादव निवासी गुरैनी गाजीपुर व राहुल निवासी घोसी मऊ शामिल हैं। मनमोहन पुलिस विभाग में सिपाही के पद पर तैनात है। पुलिस ने बताया कि दोनों पिछले साल हुई एसआई भर्ती परीक्षा में गोरखपुर व वाराणसी स्थित केंद्रों पर शामिल हुए थे। लिखित परीक्षा में सफल अभ्यर्थियों की जांच पड़ताल के दौरान एक चौंकाने वाली बात सामने आई। परीक्षा आयोजित कराने वाली एजेंसी ने पाया कि दोनों ने असामान्य ढंग से परीक्षा दी।पहले डेढ़ घंटे तक उन्होंने एक भी प्रश्न नहीं किया जबकि अंतिम 15 मिनट में उन्होंने सभी प्रश्न बिल्कुल सही हल कर दिए। इसी आधार पर उनका चयन भी हो गया था। इस संबंध में एजेंसी की ओर से पुलिस भर्ती बोर्ड को रिपोर्ट प्रेषित की गई। इसकेबाद पुलिस भर्ती बोर्ड ने प्रयागराज पुलिस लाइन में आयोजित दस्तावेज सत्यापन प्रक्रिया में लगे अफसरों को सूचित किया। इसी क्रम में कर्नलगंज थाने के एसआई राजेंद्र पाल ने दोनों अभ्यर्थी दस्तावेज सत्यापन के लिए पहुंचे तो उन्हें हिरासत में ले लिया गया।

केंद्र प्रबंधकों ने की थी मदद, नामजद : आरोपियों से पूछताछ में यह बात सामने आई कि उन्होंने यह फजीर्वाड़ा परीक्षा केंद्र प्रबंधक रोहित व अजय कुमार की मदद से किया था। साथ ही इसके लिए इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस का भी इस्तेमाल किया था। कर्नलगंज पुलिस ने बताया कि मामले में दोनों अभ्यर्थियों व केंद्र प्रबंधकों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

दूसरे चरण की शारीरिक मानक परीक्षा 20 से: एसआई भर्ती 2020-21 के लिए शारीरिक मानक परीक्षा व दस्तावेज सत्यापन का दूसरा चरण 20 से 23 मई तक चलेगा। यह प्रक्रिया रिजर्व पुलिस लाइन के जिम्नेजियम हॉल में होगी। अभ्यर्थियों को सुबह आठ बजे रिपोर्ट करना होगा। प्रवेश गेट नंबर एक से मिलेगा। एडमिट कार्ड के बिना अभ्यर्थियों को प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

न्यूज झरोखा

नगदी, पर्स और कार के साथ धरा गया चोर

शंकरगढ़। शंकरगढ़ पुलिस ने एक चोर को गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से नगदी, पर्स, मोबाइल, चुराया गया सर्टिफिकेट और घटना में प्रयुक्त एक कार बरामद हुई है। पूछताछ के बाद अभियुक्त का चालान भेज दिया गया है। थानाध्यक्ष शंकरगढ़ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि थाने के सब इंस्पेक्टर संतोष कुमार सिंह की टीम ने मुखबिर की सूचना पर एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया। चाकघाट,नारीबारी से धरा गया चोर अजीत यादव पुत्र स्व. भगवत प्रसाद यादव औद्योगिक क्षेत्र के मवैया कला का रहने वाला है। पूछताछ में उसने चोरी की घटना स्वीकार की। उसके पास से मिली गाड़ी का इस्तेमाल चोरी की वारदात में किया गया था। अजीत के पास से पुलिस ने 3 हजार रुपया नगद, एक पर्स,एक प्रमाण पत्र, घटना में प्रयुक्त मोबाइल फोन व एक कार बरामद की गई है।पुलिस द्वारा अजीत यादव का आपराधिक इतिहास पता किया जा रहा है। पुलिस टीम की सफलता में उप निरीक्षक संतोष कुमार सिंह के साथ कांस्टेबल रामजीत यादव शामिल रहे।

सरायममरेज पुलिस द्वारा शातिर अभियुक्त गिरफ्तार

जंघई। पुलिस के उच्चाधिकारियों के निर्देश पर अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में प्रभारी निरीक्षक सरायममरेज तरुणेंद्र त्रिपाठी के नेतृत्व में चौकी इंचार्ज जंघई एवं पुलिस टीम में कांस्टेबल पवनेश कुमार, कांस्टेबल सुनील कुमार द्वारा मुखबिर की सूचना पर बुधवार को भेलखा गांव निवासी अभियुक्त शिवशंकर पुत्र मोतीलाल को चनेथू मोड़ से गिरफ्तार कर-के एक किलो दो सौ ग्राम नाजायज गांजे के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के संबंध में थाना सरायममरेज में मुकदमा अपराध संख्या 113/22 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत किया गया एवं नियमानुसार आवाश्यक विधिक कार्यवाही की गई।

अम्बेडकर क्लब ने मनाया बुद्ध पूर्णिमा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के प्रेक्षागृह में डॉ. अम्बेडकर क्लब इलाहाबाद के तत्वावधान में तथागत गौतम बुद्ध की 2585 वीं जयंती के पावन अवसर पर बतौर प्रयागराज जोन प्रयागराज के अपर पुलिस महानिदेशक प्रेम प्रकाश बतौर मुख्यातिथि के रूप में सोमवार को जनपद के लगभग सैंतीस विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों तथा समाज सेवियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के दिन ज्ञान अर्जित करना ही बुद्ध पूर्णिमा का महत्व है। सभी समस्याओं के समाधान की कुंजी एकता है और डॉ. अम्बेडकर क्लब समाज के उत्थान के लिये महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। उन्होंने कहा संघर्ष समाज के उन्नति की नियति है। जातिवाद के कारण भारत पिछड़ रहा है। तथागत गौतम बुद्ध की क्रांति ने सभी बुराइयों को धराशायी कर दिया। बुद्ध का मार्ग मानव के तरक्की का मार्ग है। भारत की विश्व मे पहचान बुद्ध के कारण है। एडीजी प्रेम प्रकाश ने आगे कहा कि क्रोध, लोभ, तृष्णा अभिमान खोने का दूसरा नाम बुद्ध का मार्ग है। उन्होंने पंचशील के अनुसरण का

ज्ञान अर्जित करना बुद्ध पूर्णिमा का महत्व : एडीजी प्रेम प्रकाश

सभी समस्याओं के समाधान की कुंजी है एकता

कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि

आह्वान किया। पंजाब से कार्यक्रम में आये भंते विनाचार्य ने कहा कि भारत की विश्व मे पहचान बुद्ध के कारण है। उन्होंने कहा कि समाज के सभी लोग मिलकर कार्य करेंगे तभी पे बैक टू सोसायटी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी। भंते ने नैतिक विचारों पर चलने का आह्वान किया। भंते विनाचार्य ने तथागत से जुड़ी जातक कथा का व्याख्यान दिया जो काफी आकर्षक रहा। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक (अपराध) सतीश चंद्र ने कहा कि बुद्ध का मार्ग जीवन जीने की कला है। उन्होनें कहा कि मानवता का धर्म बुद्ध ने विश्व को दिया। एसपी क्राइम ने आगे कहा कि व्यक्ति स्वयं सत्याग्रह के रास्ते पर चलकर ही समाज के लिए कुछ कर सकता है उन्होंने कहा कि आज जो भी तरक्की देखने को मिल रही है वह भारतीय संविधान की देन है तथा अभी भी सामाजिक और आर्थिक रूप से समाज पिछड़ा हुआ है। उक्त अवसर पर उद्योग डिप्टी कमिश्नर सजंय कुमार ने कहा कि तथागत बुद्ध का मार्ग मानव कल्याण के लिए उपयोगी है। संसार मे जहाँ जहाँ बुद्ध के मार्ग को लोगो ने अपनावा है वह देश हर तरह से खुश हाल है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सीएमपी कालेज के प्रो. दीनानाथ ने कहा समाज की उन्नति के लिए बुद्ध के पंचशील का अनुपालन जरूरी है।कार्यक्रम की शुरूआत बुद्ध बंदना व पंचशील से शुरू किया गया। कार्यक्रम के अंत मे रामबृज गौतम के निर्देशन में नशा विरोधी व अन्ध विश्वास विरोधी लघु नाटक जीवन के रंग का मंचन किया गया जो काफी रुचिकर रही। कार्यक्रम का संचालन उच्च न्यायालय के अध्यक्षता रामबृज गौतम ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उपायुक्त उद्योग संजय कुमार, डॉ अजय भारती, डा. नितिन सिंह, डा. राहुल देव, डा. नेकराम रावल, डा. राधारानी, डा. सुधीर सिंह एल. के अहेरवार लालसा राम, अमरनाथ, विन्दु कुमार गौतम, इं. प्रदीप कुमार, इं. प्रमोद कुमार, श्याम सुन्दर गौड़, रामचन्द्र, गणेश राम, डा. गोगी, मुनेश बाबू, रामसेवक, राम प्रकाश, आरके विद्यार्थी, डा. ए. के. प्रियदर्शी के साथ ही साथ प्रयागराज के सैंतीस विभागों से सैकड़ों प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

अनियंत्रित बाइक सवार ने पांच बाइक सवारों को मारी टक्कर, कई घायल

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। विकासखंड उरूवा क्षेत्र के पट्टीनाथ राय में स्थित पेट्रोल टंकी के पास अनियंत्रित तेज रफ्तार अज्ञात बाइक सवार ने 5 बाइक सवार लोगों व पैदल यात्रियों को मारी जोरदार टक्कर टक्कर इतना भयानक था कि लोग छिटक कर अपने गाड़ियों से दूर जा गिरे और चोटिल हो गए। जिससे मौका देख बाइक सवार भागने में सफल हो गया। यह देख वहां लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गई और भाई लोगों की देखभाल में जुट गई। जिसमें रोहित कुमार पुत्र मंगला प्रसाद उम्र 17 वर्ष निवासी ऊँचडीह बसअड्डा व मोलई 70वर्ष को सीएचसी रामनगर भेजा गया जहां उनको प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। वहीं अन्य घायलों ने अपना इलाज प्राइवेट अस्पताल में करवाया।

घटना स्थल पर लगी लोगों की भीड़

इलाहाबाद विश्व विद्यालय में छात्रा से छेड़खानी, विरोध पर सहपाठी की पिटाई, दो गिरफ्तार

प्रयागराज। एंटी रोमियो स्क्वायड की सक्रियता के बावजूद सरेराह छात्राओं से छेड़खानी की घटनाएं नहीं रुक रही है। इसका नमूना प्रयागराज में दिखा। शहर में कर्नलगंज थाना क्षेत्र के लल्ला चुंगी के पास न केवल छात्रा से छेड़खानी की गई, बल्कि विरोध पर उसके सहपाठी की पिटाई भी की। पुलिस ने छात्रा की तहरीर पर हालैंड हाल हास्टल के अंतःवासी सुभाष यादव, श्रीहर्ष यादव, पार्थ द्विवेदी व अभिषेक यादव सहित कई अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। अभियुक्त सुभाष व अभिषेक को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने शांतिभंग में चालान किया।

दवा लेने गई थी छात्रा : सहपाठी मूलरूप से जौनपुर जनपद की रहने वाली एक युवती इलाहाबाद विश्वविद्यालय में एमए तृतीय वर्ष की छात्रा है। वह एलनगंज में किराए पर कमरा लेकर रहती है। छात्रा का कहना है कि 15 मई की रात करीब नौ बजे वह अपने सहपाठी के साथ दवा लेने के लिए गई थी। आरोप लगाया कि रास्ते में एक दुकान से लस्सी खरीदने लगी तो श्रीहर्ष यादव समेत अन्य लड़के घूरने लगे। जब वह लस्सी लेकर आगे बढ़ी तो रास्ते में तीन बाइक से नौ लड़के आए। फिर अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हुए उसका हाथ पकड़ लिया। विरोध करने पर उसके सहपाठी को पीटने लगे जब वह बीच बचाव करने लगा था। मारपीट करते हुए पिस्टल दिखाकर जान से मारने की धमकी दी।

दो छात्रों पर हुई कार्रवाई, अन्य भी होगे गिरफ्तार : भुक्तभोगी छात्रा ने पुलिस को बताया कि अधिकांश आरोपित इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र हैं। चौकी इंचार्ज विश्वविद्यालय विनय कुमार सिंह का कहना है कि मुकदमा कायम करते हुए दो छात्रों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। जल्द ही अन्य को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

सूचना

सूचित किया जाता है कि मैं मदनेश कुमार पुत्र शुभ लाल निवासी भिखनापुर तहसील रानीगंज जिला प्रतापगढ़ का निवासी हूं। मेरे बैंक अकाउंट दस्तावेज के अभिलेखों में अंग्रेजी अक्षर में मदानेश लिख गया है जो गलत है मेरा सही नाम मदनेश कुमार है जो भविष्य में मुझे मदनेश कुमार के नाम से जाना व पहचाना जाए।

मदनेश कुमार पुत्र शुभ लाल निवासी भिखनापुर तहसील रानीगंज जिला प्रतापगढ़ ।

सूचना गुमशुदगी

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि विजय कुमार उर्फ चटरु उम्र 37 वर्ष पुत्र रुद्र प्रसाद पांडेय निवासी कशिया पश्चिम थाना कोखराज जनपद कौशाम्बी आठ वर्ष पूर्व अचानक लापता हो गए है जिसकी सूचना थाना कोखराज में परिजनों ने दर्ज कराई हैं काफी खोजने के बाद उसका कहीं पता नही चला है जिस किसी सज्जन को विजय कुमार की जानकारी मिले नीचे दिए गए पता पर सूचना देने का कष्ट करें।

पार्वती देवी पत्नी रूद्र प्रसाद निवासी कशिया पश्चिम थाना कोखराज जनपद कौशांबी।

रोडवेज की खटारा बसों से यात्रियों को सफर करना पड़ रहा महंगा

आए दिन बीच सफर में खराब हो जा रही रोडवेज की बसें

प्रयागराज। शरीर को झुलसाती गर्मी के बीच रोडवेज की खटारा बसें यात्रियों को परेशान कर रही हैं। वाराणसी रूट की बसे ज्यादा खराब है। प्रयागराज में सिविल लाइंस डिपो से नान एसी आठ बसें प्रतिदिन वाराणसी आती-जाती हैं। इसमें आए दिन कोई न कोई खराबी हो जाती है। बस खराब होने पर यात्रियों को कड़ी धूप में खड़ा होना पड़ता है। कई घंटे तक इंतजार के बाद दूसरी बस मिलती है। दिक्कत की बात यह है कि बीच रास्ते में छोड़ने के बावजूद यात्रियों का पैसा वापस नहीं किया जाता जबकि वे परेशानी झेलते हैं।

बस खराब होने पर कंडक्टर से झड़प, दो घंटे बाद आई दूसरी बस

मंगलवार को प्रयागराज सिविल लाइंस बस अड्डे से वाराणसी के लिए रोडवेज बस रवाना हुई और राजा तालाब पहुंचते ही उसका फाइन बेल्ट टूट गया। बस खराब हुई तो यात्रियों के साथ परिचालक की झड़प होने लगी। परिचालक ने कहा कि किराया वापस नहीं होता, आपको दूसरी बस में बैठाया जाएगा। उस बस में 53 यात्री बैठे थे, सबको दूसरी बसों से भेजने में दो घंटे का इंतजार करना पड़ा। यात्री राकेश विश्वकर्मा ने बताया कि हर दिन कोई न कोई बस वाराणसी रूट पर खराब हो जाती है। बसों की स्थिति अच्छी नहीं है। ऐसे में मजबूरन लोगों को निजी बसों या फिर कारों में बैठना पड़ता है जिन्हें बस अड्डे के बाहर से अवैध रूप से संचालित किया जा रहा है। अधिकारी ने कहा तकनीकी खराबी आ गई थी। यात्रियों को दूसरे बस से भेजा गया। अब सभी गाड़ियों की अच्छे से चेकिंग के बाद ही रूट पर भेजा जाएगा, ताकि यात्रियों को कोई असुविधा न हो।सीबी राम, एआरएम सिविल लाइंस डिपो।

बहुविकल्पीय आधारित प्रश्नों पर होगी स्नातक तृतीय वर्ष की परीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की सत्र 2021-22 स्नातक तृतीय वर्ष परीक्षा जून के प्रथम सप्ताह में ऑनलाइन मोड में प्रस्तावित है। इस बार तृतीय वर्ष की परीक्षाएं बहुविकल्पीय आधारित प्रश्नों पर होगी। इस बाबत परीक्षा नियंत्रक की ओर से दिशा निर्देश जारी किए गए। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक के मुताबिक स्नातक तृतीय वर्ष (बीए,बीएससी, बीएससी गृहविज्ञान, बीकॉम) की परीक्षाएं ऑनलाइन मोड में जून के पहले सप्ताह में प्रस्तावित हैं। इस बार की तृतीय वर्ष की परीक्षा बहुविकल्पीय प्रश्न (एमसीक्यू) पूछे जाएंगे। दरअसल परिणाम जल्द से जल्द घोषित करने और परास्नातक के अन्य पाठ्यक्रमों में शामिल होने के इच्छुक विद्यार्थियों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। परीक्षा में विभिन्न विभागों की ओर से पाठ्यक्रम में जो कटौती की गई है, उसे ध्यान में रखते हुए प्रश्नपत्र तैयार किए जाएंगे।

प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा : गणित, सांख्यिकी और साहित्य को छोड़कर शेष सभी विषयों के बहुविकल्पीय प्रश्न दो भाषाओं में होंगे। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। प्रत्येक

प्रश्न को हल करने के लिए औसतन दो मिनट का समय दिया जाएगा। इस प्रकार दो मिनट प्रति प्रश्न या तीन घंटे में से जो कम होगा उसके आधार पर परीक्षा अवधि का निर्धारण करेंगे। विश्वविद्यालय की पीआरओ डॉ. जया कपूर ने बताया कि छात्र-छात्राओं को अपने घर से ऑनलाइन परीक्षा में शामिल होने की अनुमति रहेगी।गौरतलब है कि इससे पूर्व विवि प्रशासन ने स्नातक द्वितीय और तृतीय वर्ष की परीक्षाएं ऑफलाइन मोड में कराने का निर्णय लिया था। लेकिन छात्रों के विरोध को देखते हुए विवि प्रशासन को अपना फैसला बदलना पड़ा। द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को तृतीय वर्ष में प्रोन्नत कर दिया। जबकि तृतीय वर्ष की परीक्षा ऑनलाइन मोड में कराने का निर्णय लिया है। स्नातक तृतीय वर्ष में विषय चयन की तिथि 24 तक बढ़ी इलाहाबाद विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार की ओर से जारी सूचना के मुताबिक स्नातक तृतीय वर्ष में विषय चुनने की तिथि 24 मई तक बढ़ा दी गई है। अब विद्यार्थी 24 मई तक विषय चयन की वरीयता जमा कर सकते हैं।

डीएम साहब कोराव में कब रुकेगा अवैध खनन!

पुलिस माफियाओं पर शिकंजा कस रही है, खनन विभाग माफियाओं के सपोर्ट में खड़ा

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। डी.एम. साहब कब रुकेगा अवैध बालू का खनन एक तरफ कोरांव पुलिस बालू माफियाओं पर शिकंजा कस रही है तो वहीं दूसरी ओर खनन विभाग के अधिकारी माफियाओं की सपोर्ट में खड़े हो जाते हैं तो कैसे रुकेगा खनन यहा पर दो माफियाओं के रस्साकशी के चलते कोराव में हो सकता है खूनी संघर्ष समय रहते शासन प्रशासन ने ध्यान न दिया तो। बताया जाता है कि कोरांव थाना क्षेत्र के बांस घाट एवं जमुआ घुस घाट के बेलन नदी में धड़ल्ले से अवैध खनन हो रहा है कुछ स्थानों पर जे.सी.बी. लगाकर नदी के बीचो-बीच सीना चीर कर बालू निकाली जा रही है एक दबंग ठेकेदार शासन सत्ता

की हनक दिखाकर खुलेआम खनन करा रहा है संबंधित विभाग के अधिकारी अपना एक प्राइवेट आदमी लगा कर के हफ्ता वसूली कर आ रहा है जबकि कोराव पुलिस ने तीन ट्रैक्टरों को पकड़कर एफ.आई.आर. दर्ज किया था बालू माफिया तो कोरांव पुलिस पर दबाव बनाने की कोशिश किया परंतु उनकी कोई एक भी नहीं चली तो ऑफर देने लगे परंतु इस्पेक्टर कोराव धीरेन्द्र सिंह ने ऑफर को ठुकरा दिया कोरांव पुलिस अपनी कार्यवाही में लगी है परंतु माफिया पुलिस को गुमराह करने में थोड़ा भी कसर नहीं कर रहे हैं एक माफिया ने बालू डंप का ठेका लिया है जबकि सच्चाई यह है कि कोई बालू डंप नहीं है नदी से बालू नाव एवं जेसीबी से खुदाई कराके निकाली जा रही है वहीं बालू को डंप बताते हैं जबकि बालू से पानी निकल रहा है इसी के आड़ में बड़े पैमाने पर काला बाजी हो रही है यहां पर दो पक्षों में रस्साकशी चल रही है कोई बड़ी घटना से इनकार नहीं किया जा सकता है।

मेरे संज्ञान में मामला आया है संबंधित खनन विभाग को इसकी लिखा पढ़ी होगी और मैं स्वयं घाटों का निरीक्षण करूंगा दोषियों पर कार्यवाही किया जाएगा

- विशाल शर्मा (तहसीलदार कोरांव)

31 जुलाई तक 10% छूट के साथ जमा करें गृहकर

प्रयागराज। वित्तीय वर्ष 2022-23 में गृहकर में 10 प्रतिशत गृहकर में छूट का प्रावधान बुधवार से लागू हो गया। शहरी क्षेत्र के भवन स्वामी 31 जुलाई तक 10 फीसदी छूट के साथ गृहकर जमा कर सकते हैं, लेकिन यह छूट उन्हीं भवन स्वामियों को मिलेगी जिनका कोई गृहकर बकाया नहीं है। गृहकर बकाया वाले भवन स्वामियों को 12 प्रतिशत ब्याज के साथ ही गृहकर जमा करना होगा, तब चालू वित्तीय वर्ष के टैक्स में छूट मिल सकती है।

ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों मोड पर जमा हो सकेगा हाउस टैक्स : नगर निगम प्रशासन की ओर से सभी जोनों के साथ मुख्यालय में गृहकर जमा करने के लिए काउंटर बना रखा है। इसके अलावा आन लाइन सुविधा भी उपलब्ध कराई है। ताकि, लोग आसानी से गृहकर जमा कर सके। ताकि, उन्हें गृहकर जमा करने के लिए मुख्यालय आकर लाइन लगाकर परेशान न होना पड़े।

कम वसूली पर बढ़ा दी गई डेट : वित्तीय वर्ष शुरू हो गया है ऐसे में अधिकतर भवन स्वामियों की मंशा रहती है कि वह जल्द से जल्द गृहकर एवं जलकर जमा करें ताकि उन पर अतिरिक्त बोझ न पड़े। साथ ही वह गृहकर और जलकर में दस फीसदी छूट का लाभ भी लेना चाहते हैं। क्योंकि हर वर्ष उन्हें यह लाभ नगर निगम प्रशासन की ओर दिया जाता रहा है। वित्तीय वर्ष शुरू हुए दूसरा महीना चल रहा है।ऐसे में दस दिन पूर्व तक दस फीसदी का छूट का प्रावधान नगर निगम ने नहीं दिया था। लोग गृहकर जमा करने के लिए काउंटर तक जाते और जब उन्हें पता चलता कि अभी छूट नहीं मिल रही तो वह बिना गृहकर जमा किये लौट जाते। जिससे गृहकर वसूली कम हो रही थी। बुधवार को महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी एवं नगर आयुक्त रविंरजन के आदेशानुसार गृहकर में 10 प्रतिशत की छूट का प्रावधान लागू कर दिया गया।

31 जुलाई के बाद 2 प्रतिशत लगेगा ब्याज : मुख्य कर निर्धारण अधिकारी पीके मिश्रा ने बताया कि चालू वित्तीय वर्ष में 10 प्रतिशत की छूट 31 जुलाई तक के लिए ही है। साथ ही छूट ऐसे भवन स्वामियों को दी जायेगी, जिनका गृहकर बकाया नहीं है। वहीं जिनका गृहकर बकाया है, उन्हें 12 फीसदी ब्याज भी देना होगा तब इन्हें चालू वित्तीय वर्ष के टैक्स में 10 प्रतिशत की छूट मिल सकेगी। वहीं यदि कोई भवन स्वामी 31 जुलाई तक चालू वित्तीय वर्ष का हाउस टैक्स नहीं जमा कर सकेगा तो उसे 1 अगस्त से 2 प्रतिशत ब्याज देना होगा।

कार्यालय ग्राम पंचायत पंनोई विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी

(अल्पकालिक निविदा सूचना)

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत पंनोई विकास खण्ड मूरतगंज में पन्द्रहवां वित्त पंचम राज्य वित्त आयोग,मनरेगा योजना कायाकल्प योजना,राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन के अन्तर्गत शौचालय निर्माण व मरम्मत,नाली निर्माण,नाली मरम्मत,खडन्जा निर्माण,हैण्डपम्प मरम्मत,हैण्डपम्प रिबोर,इण्टरलाकिंग,स्कूल निर्माण व मरम्मत,पंचायत भवन मरम्मत,आंगनबाडी केन्द्र निर्माण व मरम्मत,सोलर लाइट,सोलर पम्प व अन्य कार्यो में प्रयुक्त होने वाली सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो द्वारा दिनांक 19/05/2022 से 26/05/2022 तक सील बन्द निविदा आमंत्रित की जाती है। जो दिनांक 27/05/2022 को 11 बजे दिन में उपस्थित फर्मो के समक्ष खोली जायेगी। निविदा स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा सामग्री की मात्रा ग्राम पंचायत में स्वीकृत प्राक्कलन के अनुसार पृथक पृथक होगा। निविदा ग्राम पंचायत में वित्तीय वर्ष 2022-23 में कराये जाने वाले सभी कार्यो हेतु प्रभावी होगा।

आशीष केशरवानी
पंचायत सचिव विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी

विनोद कुमार
ग्राम प्रधान पंनोई विकास खण्ड मूरतगंज जनपद कौशाम्बी

स्कूल का गेट ढहने से मासूम छात्रा की मौत

प्रवेश लेने गया छात्र भी हुआ चोटहिल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़/परियावां। जिले के कुण्डा कोतवाली क्षेत्र के बानेमऊ गांव में बुधवार को प्रातः लगभग आठ बजे प्राथमिक विद्यालय का गेट टूटने से स्कूल की कक्षा-3 की छात्रा वंदना सरोज पुत्री अशोक कुमार सरोज की दुखद मौत हो गई जबकि प्रवेश लेने आया ऋषभ व उसकी बहन अंशिका को चोटें आई है जिसका उपचार समीप के अस्पताल में कराया जा रहा है। स्कूल का गेट टूटने से हुई इस दर्दनाक घटना से पूरे शिक्षा विभाग में हड़कंप मच गया है और मृतक छात्रा के घरवालों में कोहराम मचा हुआ है।

घटना के बारे में बताया जाता है कि बुधवार को प्रातः आठ बजे स्कूल का गेट खुला ही था कि वंदना व कुछ अन्य बच्चे गेट पकड़कर झूल रहे थे। इतने में गेट के एक तरफ का ईंट का खंभा भरभराकर गिर पड़ा जिसमें वंदना दब गई और उसकी दुखद मौत हो गई। इसी स्कूल की छात्रा अंशिका अपने भाई ऋषभ का एडमिशन कराने आई थी। ये दोनों भी गेट गिरने की चपेट में आ गये और चोटहिल हो गये। मौत की खबर मिलते ही वन्दना के परिजनों में कोहराम मच गया। लोगों की मौके पर भारी भीड़ जमा हो गयी। उधर स्कूल में हुई छात्रा की मौत से शिक्षा विभाग महकमा में हड़कम्प मच गया। घटना की जानकारी मिलते ही जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेंद्र सिंह मौके पर पहुंचे और घटना के बारे में जानकारी करने पर स्कूल में देर से आने वाले शिक्षकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की बात कही। उधर जिलाधिकारी नितिन बंसल ने स्कूल की बाउंड्रीवाल और गेट के निर्माण कार्य की गुणवत्ता के साथ घटना की जांच के आदेश दे दिये हैं। घटना को लेकर स्थानीय ग्रामीणों में आक्रोश इस बात का है कि जब स्कूल खुलने व बन्द होने का समय निर्धारित है तो समय से शिक्षक लोग स्कूल आकर ताला क्यों नहीं खोला। पीड़ित परिजनों ने शासन प्रशासन से आर्थिक सहायता की मांग करते हुए घटना की जांच कर दोषी शिक्षकों पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। घटना स्थल पर एसडीएम कुंडा सतीशचन्द्र त्रिपाठी सीओ अजीत प्रताप सिंह व तहसीलदार भानुप्रताप सिंह मौके पर पहुचे और पीड़ित परिजनों को आर्थिक सहायता दिलाने का आश्वासन दिया।

गिरे गेट का निरीक्षण करते अधिकारीगण।

वरिष्ठ अधिवक्ता भास्कर मिश्र के निधन पर अधिवक्ताओं में शोक की लहर

शोक संवेदना जताने वालों का लगा तांता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सन 1975 से प्रतापगढ़ मुख्यालय पर वकालत की प्रैक्टिस करने वाले 73 वर्षीय वरिष्ठ अधिवक्ता पंडित भास्कर मिश्रा के निधन का समाचार पत्र मिलने पर प्रतापगढ़ के अधिवक्ताओं में शोक की लहर दिखाई पड़ रही है। अधिवक्ताओं ने अपने साथी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त की है।

मूलतः वे ग्राम बाल्हापुर, मछली शहर, जौनपुर के निवासी थे। इनके पिता पंडित बद्री नारायण मिश्र राजपत्रित अधिकारी थे। पंडित भास्कर मिश्र, प्रतापगढ़ शहर में रहकर अपनी वकालत शुरू करके सिविल एवं क्रिमिनल कोर्ट में प्रैक्टिस करते रहे। यही नहीं, वे महीने में एक दिन सुप्रीम कोर्ट एवं दो दिन हाई कोर्ट बेंच लखनऊ में भी प्रैक्टिस करते रहे हैं। शोक संवेदना व्यक्त करने वालों में वरिष्ठ अधिवक्ता पंडित रामसेवक त्रिपाठी प्रशांत, स्वामीनाथ शुक्ला, राधेश्याम शुक्ल, परशुराम उपाध्याय सुमन, आनंद प्रचंड, आचार्य ओम प्रकाश मिश्र, राज किशोर त्रिपाठी, चिंतामणि पांडेय, गणेश नारायण मिश्र, देव आनंद त्रिपाठी, विश्वनाथ प्रसाद त्रिपाठी, लक्ष्मीकांत द्विवेदी, त्रिभुवन नाथ मिश्र, हरि शंकर लाल श्रीवास्तव, विनय मिश्र, संतोष त्रिपाठी, गुड्डू सिंह, चंद्रशेखर उपाध्याय, चंद्रभूषण दीक्षित, रघुवीर प्रसाद उपाध्याय आदि प्रमुख हैं।

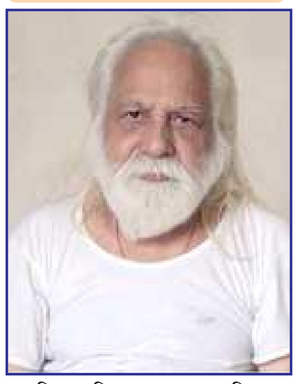

वरिष्ठ अधिवक्ता भास्कर मिश्र।

पट्टी में होगा तालाबों का सौंदर्यीकरण

बीडीओ ने अमृत सरोवर योजना का किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बुधवार को पट्टी तहसील क्षेत्र के अमसौना गांव में बाबा बेलखरनाथ धाम के बीडीओ सहित मौजूद अधिकारियों ने अमृत सरोवर योजना का शुभारंभ करते हुए लोगों को संबोधित किया। इस दौरान क्षेत्र के सैकड़ों लोग मौजूद रहे। पट्टी तहसील क्षेत्र के विकासखंड बाबा बेलखरनाथ धाम के अमसौना गांव में बुधवार की दोपहर सैकड़ो ग्रामवासियों की उपस्थित में मुख्य अतिथि के रूप में बाबा बेलखरनाथ धाम के बीडीओ जीडी शुक्ला अमृत सरोवर योजना के तहत तालाबों के सौंदर्यीकरण के लिए सरकार की योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि तालाब ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भूमिगत जल को संरक्षित किया जाता है यह ना सिर्फ मानव के लिए उपयोगी है बल्कि जीव जगत तथा अन्य जीवो के लिए बहुत ही जीवनदायिनी है। उन्होंने कहा कि तालाबों का सौंदर्यीकरण मनरेगा योजना के तहत कराया जाएगा। एपीओ बृजेश सिंह ने कहा कि अमृत सरोवर योजना के अंतर्गत मजदूरों को लगाकर तालाबों की खुदाई की जाएगी।

सास, ननंद व पति ने विवाहिता को घर से पीट कर भगाया

थाने पहुंची विवाहिता ने लगाई इंसाफ की गुहार

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। दस सालों से लगातार दहेज के लिए विवाहिता को प्रताड़ित कर रहे ससुराली जनों ने मंगलवार को विवाहिता को मारपीट करके घर से भगा दिया। पीड़ित महिला पट्टी कोतवाली पहुंची और अपने ससुराली जनों के खिलाफ दहेज उत्पीड़न तथा मारपीट के मामले में शिकायती पत्र दिया। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के जैतापुर गांव की रहने वाली रीशा वर्मा पत्नी फूलचंद ने बुधवार की दोपहर पट्टी कोतवाली में पहुंचकर आरोप लगाया कि उसकी शादी 2012 में जैतापुर गांव के रहने वाले फूलचंद से हुई लेकिन शुरू से ही परिवारी जन उसे दहेज के लिए मारते पीटते थे। वह बर्दाश्त करती रही उसने बताया कि उसके पिता की मौत कुछ दिन पहले हो गई तो ससुराली जन उसके ऊपर और भी अत्याचार करने लगे। मंगलवार को आरोपी ससुराली जनों ने विवाहिता को घर से मारपीट कर भगा दिया। विवाहिता को चेहरे और सिर में चोटे आई। विवाहिता बुधवार को पट्टी कोतवाली पहुंची और मामले में अपने पति ननद व सास के खिलाफ नामजद तहरीर देकर मामले में कानूनी कार्रवाई की मांग की है पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव ने जिला कारागार का किया निरीक्षण, बन्दियों को किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिला कारागार का सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नीरज कुमार त्रिपाठी द्वारा निरीक्षण किया गया एवं बन्दियों को विधिक रूप से जागरूक किया गया। निरीक्षण के दौरान जेलर राजेन्द्र प्रसाद चैधरी द्वारा बताया गया कि जिला कारागार में 1106 बन्दी निरूद्ध है जिसमें 960 विचाराधीन बन्दी है। इसमें महिला 28 तथा 1031 पुरूष एवं किशोर बन्दियों की संख्या 47 है।

सचिव द्वारा जिला कारागार में स्थित महिला बैरक, पाकशाला, जेल अस्पताल, लीगल एण्ड क्लीनिक एवं वीडियो कान्फ्रेसिंग रूम, आर0ओ0 प्लान्ट एवं जेल परिसर की साफ-सफाई का निरीक्षण किया गया। लीगल एण्ड क्लीनिक में चयनित जेल पीएलवी द्वारा किये गये कार्यो की जानकारी ली गयी एवं लीगल एण्ड क्लीनिक के अभिलेखों का निरीक्षण किया गया। प्रत्येक बैरिक में मनोरंजन के लिये टी0वी0 एवं योगा के शिक्षक भी प्रत्येक दिन आते है। जेल निरीक्षण के दौरान जेल अधिकारी को निर्देशित किया गया कि जिला कारागार की प्रतिदिन साफ-सफाई कराने के साथ-साथ सेनेटाइज कराया जाये। जेल में स्थापित लीगल एण्ड क्लीनिक को नियमित रूप से संचालित करते हुये अभिलेखों को दुरूस्त किया जाये। इस अवसर पर प्रभारी जेलर अधीक्षक डा0 आर0पी0 चैधरी एवं उप जेलर अवधेश प्रसाद राय, सुनील कुमार द्विवेदी एवं पी0एल0वी0 जुल्फिकार उपस्थित रहे।

जिला कारागार का निरीक्षण करते सचिव नीरज कुमार त्रिपाठी।

कॉलेज छात्र पर दिनदहाड़े जानलेवा हमला

ताबडतोड़ फायरिंग से दहशत का बना माहौल

लालगंज प्रतापगढ़। बहन से जबरिया विवाह के विरोध को लेकर आरोपियों ने छात्र पर दिनदहाडे नेशनल हाइवे पर जानलेवा हमला बोल दिया। कालेज के अंदर ताबडतोड हवाई फायरिंग की घटना को लेकर बुधवार को हडकंप मच गया। आननफानन मे प्रभारी निरीक्षक समेत भारी पुलिस फोर्स मौके पर पहुंची किंतु तब तक फायरिंग के आरोपी बाइक से फुर हो गये।

नगर के नेशनल हाइवे लालगंज-प्रतापगढ़ पर सरस्वती विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी महाविद्यालय मे सलेम भदारी गांव के साहिल सिंह पढ़ाई करता है। बुधवार को सुबह आठ बजे वह छात्रावास मे अपने सहपाठी रिशु सिंह को उसकी बाइक वापस करने जा रहा था। अचानक बाघराय पेट्रोल पम्प से प्रतापगढ़ की ओर से बाइक सवार दो आरोपी तमंचे से लैस होकर साहिल का पीछा करने लगे। साहिल ने दी गई तहरीर मे कहा है कि आरोपियो मे से भदारीकला के कुलदीप वर्मा पुत्र जीतलाल तथा अभिषेक सरोज पुत्र शिवकुमार बाजार खास बाइक से पीछा करते फायरिंग करने लगे। साहिल किसी तरह कॉलेज के अंदर घुस गया तब तक पीछा करने वाले आरोपी भी बाइक से कालेज के अंदर पहुंच गये और कॉलेज परिसर मे ही अधाधुंध फायरिंग करने लगे। पीड़ित के मुताबिक आरोपियो की फायरिंग से महाविद्यालय मे दहशत का माहौल बन गया। इधर सूचना मिलते ही लालगंज पुलिस कॉलेज पहुंची किंतु तब आरोपी पीड़ित को धमकी देते भाग निकले। साहिल सिंह ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि आरोपी कुलदीप वर्मा उसकी बहन से जबरिया शादी करने पर अमादा है। उसके विरोध करने के कारण उसे जान से मार डालने को लेकर हमला किया गया। प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल का कहना है कि तहरीर मिली है, केस दर्ज कर आरोपियो के खिलाफ कडी कार्रवाई की जाएगी।

एसएसई इलेक्ट्रिक का रेलवे मेंस यूनियन ने किया घेराव

लापरवाह कर्मचारी का बचाव करना अभियंता को भारी पड़ा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। कोच की खामियों को दूर करने में ट्रेन की लेट लतीफी में मुख्य किरदार वाले कर्मचारी का बचाव करना स्थानीय रेलवे स्टेशन के एसएसई इलेक्ट्रिक को महंगा पड़ गया। उनकी कार्यशैली से खफा मेंस यूनियन ने बुधवार को पावर हाउस में उनका घेराव किया। खरी खोटी सुनाई। मामला डीआरएम कार्यालय लखनऊ तक पहुंच गया है। वरिष्ठ अधिकारी भी मामले की पड़ताल करवा रहें हैं।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार ट्रेन के कोच में बिजली की तरफ से शिकायत थी। उसको ठीक करने में समय लग गया। जिस वजह से ट्रेन लेट हो गई। चूंकि रेल मंत्रालय ट्रेनों के समय पर बड़ा ध्यान दें रहा है। बिना वजह ट्रेन की लेट लतीफी बर्दाश्त नहीं होगी। इस मामले में भी यही हुआ। परिचालन अधिकारी लखनऊ ने ट्रेन लेट होने की वजह पूछी। जांच में चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को दोषी ठहराते हुए उन्हें लखनऊ तलब कर लिया गया। कर्मचारियों का आरोप था की सुपरवाइजर भी बराबर का दोषी है। लेकिन एसएसई ने उसे बचा लिया। बुधवार को मेंस यूनियन की ब्रांच काउंसिल में पीड़ित कर्मचारियों ने एसएसई पर उत्पीड़न और एकतरफा कार्रवाई का आरोप लगाते हुए नेताओं के सामने यह मुद्दा उठाया और जांच की मांग की। नेताओं ने न्याय का भरोसा दिलाया। मीटिंग के बाद ब्रांच अध्यक्ष मोहम्मद शफीक, सेकेट्री अनिल शुक्ला, अजय आनंद, मनीष पांडे, मोहम्मद अनीश, वीके तिवारी सहित कई कर्मचारी और नेताओं ने पावर हाउस जाकर एसएसई का घेराव किया। उन्होंने कर्मचारियों को आ रही समस्याओं को दूर करने का भरोसा दिलाया।

मंदिर परिसर से तांबा का गगरा चोरी

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के माता मईया देबी मन्दिर को अज्ञात चोर लोग अपना निशाना बना रहे हैं। आये दिन मन्दिर परिसर से दान पेटिका का ताला तोड़कर पैसा चुरा ले जाना आम बात हो गयी है मन्दिर परिसर में देबी मां, शनिदेव, व श्रीराम दरबार मे दान पेटिका रखा हुआ है जिसका आये दिन अज्ञात चोर रात में ताला तोड़कर पैसा गायब कर देतें है। बीती रात को शिव मंदिर में शिवलिंग के ऊपर तांबा का बड़ा गगरा लोहे की जंजीरों से बांधकर ज्येष्ठ के महीने में बाजार के कमलेश अग्रवाल टँगवाये थे, जिसे जंजीर तोड़कर गगरा चुरा ले गए। सुबह जब लोगो की नजर शिवलिंग मन्दिर पर पड़ी तो हड़कम्प मच गया घटना को लेकर ब्यापारियों में आक्रोश है।

मदनमोहन मालवीय पीजी कालेज के 10 प्राध्यापक बने प्रोफेसर

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मदन मोहन मालवीय पोस्टग्रेजुएट कालेज कालाकांकर प्रतापगढ़ में स्केल लेवल 13ए-14 में प्रोफेसर पद पर प्रोन्नत हेतु स्क्रीनिंग समिति की बैठक 17 मई 2022 को संपन्न हुई। इस बैठक मे सभी 10 प्राध्यापक प्रोफेसर पद हेतु स्क्रीनिंग समिति द्वारा संस्तुत किए गए, जिसमें वाणिज्य संकाय के डॉ सूर्य भान सिंह, डॉ उग्रसेन सिंह, डॉ राम करन यादव बी एड डॉविनीता सिंह, डॉ रेखा सिंह, डॉ हवलदार सिंह, हिन्दी के डॉ इंदु रेखा सिंह, डॉ उमेश मिश्र भूगोल विभाग के डॉ प्रदीप कुमार सिंह, अर्थ शास्त्र के डॉ शिव भूषण गुप्त शामिल हैं। इस समिति में प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह(रज्जू भय्या) विवि के कुलपति द्वारा नामित इलाहाबाद केंद्रीय विवि एवं काशी हिन्दू विवि के प्रोफेसर तथा उच्च शिक्षा निदेशक द्वारा नामित सदस्य एवं प्राचार्य डॉ शिवम श्रीवास्तव तथा प्रबंध समिति के नामित सदस्य डॉ घनश्याम यादव उपस्थित रहे। प्राध्यापक से प्रोफेसर पद पर प्रोन्नति होने पर कालेज परिसर में एक दूसरे को बंधाई दी गई और एक दूसरे को मुंह मीठा किया जिसमें कालेज के छात्रों ने भी अपनी तरफ से शुभकामनाएं दी।

डिग्री कालेज कालाकांकर के शिक्षकगण।

जमीनी विवाद को लेकर सामुदायिक संघर्ष की सूचना पर हलाकान हुई खाकी

अखंड भारत संदेश

लालगंज प्रतापगढ़। जमीनी विवाद को लेकर दो समुदायों मे संघर्ष की सूचना को लेकर बुधवार को लालगंज पुलिस सीओ समेत हलाकान हो उठी। हालांकि आननफानन मे सीओ तथा लालगंज कोतवाल समेत पीआरवी की सभी यूनिटें मौके पर पहुंच गयी। मौके पर दो सजातीय पक्षों मे जमीनी विवाद का नजारा देख सीओ फर्जी सूचना पर भड़क उठे। लालगंज कोतवाली के पूरे वंशी गांव मे बुधवार को जमीनी विवाद को लेकर वर्मा बिरादरी के दो पक्ष विवाद करने लगे। एक पक्ष ने विवादित जमीन मे स्थित नीम के पेड़ के पास एक धार्मिक मूर्ति रख दी। दूसरे पक्ष ने वहां से मूर्ति हटा दी। इसके चलते दोनों पक्ष मारपीट पर अमादा हो गये। इसी बीच गांव से एक अन्य समुदाय के व्यक्ति द्वारा पुलिस कंट्रोल रूम के साथ डीजी कंट्रोल रूम को फोन पर दो समुदायों के बीच संघर्ष की फोनिक सूचना दे दी गई। यह सूचना मिलते ही कार्यालय मे शिकायतो की सुनवाई कर रहे सीओ रामसूरत सोनकर के भी होश फाख्ता हो उठे। सीओ तथा लालगंज प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल भारी फोर्स के साथ मौके पर पहुंच गये। इस बीच पीआरवी यूनिट की भी चार पुलिस जीपें फोर्स के साथ मौके पर आ धमकी। गांव पहुंचने पर पता चला कि दो सजातीय लोगों मे ही एक जमीन को लेकर विवाद उत्पन्न हुआ है। फर्जी सूचना से हलाकान पुलिसकर्मियों को तब जाकर कहीं राहत मिली।

सीओ के निर्देश पर पुलिस विवादित जमीन पर पड़ी मूर्ति कोतवाली उठा ले आयी। पुलिस ने एसडीएम को विवाद की सूचना देते हुए निस्तारण तक मौके पर दोनों पक्षो को यथास्थिति बनाये रखने के निर्देश दिये हैं। इधर लालगंज मे सामुदायिक तनाव की सूचना वायरल होते ही एसपी सतपाल अंतिल भी पुलिस अफसरो से त्वरित छानबीन करने लगे। सीओ ने वीडियो कॉलिंग के जरिए एसपी को वास्तविक स्थिति से अवगत कराया। सीओ रामसूरत सोनकर ने सामुदायिक संघर्ष की फर्जी सूचना देने वाले आरोपी की पहचान कर उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई के लिए कोतवाली को निर्देश दिये है। वहीं सीओ ने बताया कि बिना शासन की अनुमति के किसी भी धार्मिक स्थल का निर्माण नही किया जा सकता। एहतियातन लालगंज कोतवाली पुलिस को मूर्ति को सुरक्षा मे लिये जाने के निर्देश दिये गये।

बच्चों को यातायात नियमों की दिलाई गई शपथ, जिले के कई स्कूलों में हुआ कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। यातायात के मूल मंत्र, रुके, देखें, सुने ,और सोचे के जज्बे के साथ बुधवार को जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदा नंद के निर्देश के क्रम में जनपद के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों में सम्मानित प्रधानाचार्य द्वारा छात्र-छात्राओं एवं स्टाफ के साथ बैठक करके सड़क सुरक्षा संबंधित विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की गई एवं सड़क सुरक्षा संबंधित शपथ भी दिलाई गई।

इसी क्रम में आज राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ में प्रधानाचार्य गरिमा श्रीवास्तव के कुशल निर्देशन में एवं सड़क सुरक्षा के नोडल अधिकारी डॉ मोहम्मद अनीस के द्वारा सड़क सुरक्षा की शपथ दिलाई गई और बताया गया कि हम सड़क पर दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सड़क सुरक्षा के सभी नियमों का पालन पूर्णतया करें। नशे की हालत में गाड़ी ना चलाएंस गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग ना करेंस चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें एवं सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा के अनुसार ही वाहन का संचालन करेंस इस अवसर ममता सिंह प्रतिमा मिश्रा पूनम सिंह सूफिया उमरा प्रीति श्रीवास्तव राजेश यादव समेत समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहास इसी क्रम में सेंट एंथोनी इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ में प्रधानाचार्य फादर आनंद कुमार जान के कुशल नेतृत्व में एवं डॉक्टर मोहम्मद अनीश द्वारा सड़क सुरक्षा के लिए शपथ दिलाई गई सइस अवसर पर जान को जोर, वंदना मैडम ऋषिकेश माइकल आशीष राजेश आदि समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

जीजीआईसी में शपथ दिलाते शिक्षकगण।

प्रभात फेरी निकाल कर दिलाई गई सड़क सुरक्षा की शपथ

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। सड़क सुरक्षा संबंधी जागरूकता अभियान के अंतर्गत मॉडल उच्च प्राथमिक विद्यालय कटरा गुलाब सिंह में बच्चों के द्वारा आकर्षक प्रभात फेरी के साथ प्रार्थना सभा कर सड़क सुरक्षा हेतु यातायात नियमो के पालन का संदेश दिया गया, यातायात नियमों के पालन से लाभ एवं न करने से हानि संबंधी विषय पर विस्तार से जानकारी दी गयी। यातायात नियमों का अनुसरण करने हेतु बच्चों को सुरक्षा संबंधी शपथ भी दिलाई गयी। विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों एवं अभिभावकों की उपस्थिति में आयोजित सड़क सुरक्षा विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता, क्विज, व पोस्टर/चित्रकला और पेंटिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। प्रतियोगिता के विजेताओं को 19 मई 2022 को पुरस्कृत किया जाएगा। इस मौके पर ग्राम प्रधान अशोक कुमार यादव, बाबा फैय्याद, मुहम्मद फरहीम (राज्य अध्यापक पुरस्कृत शिक्षक) पितामह यादव आशा मिश्रा तथा मनोज कुमार सहित बड़ी संख्या में अभिभावक व क्षेत्र के गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सड़क सुरक्षा की शपथ लेते प्राथमिक विद्यालय के बच्चे।

डा0 गौरव पाण्डेय बने वेटनरी साइंटिस्ट

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या में डा0 गौरव पाण्डेय का चयन वेटनरी साइंटिस्ट (विषय वस्तु विशेषज्ञ) के पद हो गया है। डा0 गौरव पाण्डेय वरिष्ठ अधिवक्ता स्व0 प्रमोद कुमार पाण्डेय पूर्व अध्यक्ष वकील परिषद प्रंतापगढ़ एवं डा0 स्नेहलता पाण्डेय एसोसिएट प्रोफेसर एमडीपीजी कालेज के सुपुत्र हैं। डा0 गौरव ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता, अपने भाई डा0 सौरभ पाण्डेय एवं अपने गुरु डा0 पीएस प्रमाणिक को दिया है। डा0 गौरव के चयन पर डा0 आरपी चैबे, डा0 लालजी त्रिपाठी, डा0 आरके मिश्र, डा0 किरन मिश्रा, अजय प्रधान, जेपी सिंह, हरीश ओझा, गिरीश ओझा, डा0 मनीष ओझा, सौरभ मिश्र, गौरव सिंह सरल, अनन्य, डा0 सौरभ, अनमोल, डा0 सुचिता, डा0 शुभंकरी, वेदांश, वैभव, कर्मवीर, प्रखर आदि लोग मौजूद रहे।

डा0 गौरव पाण्डेय।

कौशाम्बी संदेश

खबर संक्षेप

राइस मिल मालिक समेत दो वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना महेवघाट पुलिस बल द्वारा वारटी अभियुक्त अतुल केशरवानी पुत्र ज्ञान प्रकाश केशरवानी निवासी कुहियावा थाना महेवघाट को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वारटी अभियुक्त निरंजन सिंह पुत्र शोभा सिंह निवासी बौली थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कौशाम्बी पुलिस बल द्वारा गैगेस्टर एक्ट से सम्बन्धित वाछित अभियुक्त मो० सरफराज शाह पुत्र मो० सत्तार शाह निवासी चैनपुर थाना चैनपुर जनपद भभुआ को गैर प्रान्त बिहार से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना सैनी पुलिस बल द्वारा वाछित अभियुक्त सतीश कुमार सोनकर पुत्र गोले प्रसाद सोनकर निवासी जहागिराबाद थाना कड़ाधाम को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

धाता क्षेत्र को जनपद कौशांबी में शामिल कराने का प्रयास शुरू

धाता क्षेत्र को कौशांबी में शामिल किए जाने को लेकर सर्वसमाज कल्याण समिति एवं सकिपा ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। धाता क्षेत्र को कौशांबी जनपद से जोड़े जाने की मुहिम तेज होती दिख रही है। स्थानीय स्तर पर लोगों द्वारा इस मामले को लेकर लगातार प्रयास जारी है। इसी क्रम में बुधवार को सर्वसमाज कल्याण समिति एवं समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में जिलाधिकारी कौशांबी को एक ज्ञापन सौंपा गया। सौंपे गए ज्ञापन में धाता क्षेत्र को कौशांबी जनपद में शामिल किए जाने की मांग की गई। प्रतिनिधि मंडल ने जिलाधिकारी कौशांबी से धाता क्षेत्र को कौशांबी में शामिल किए जाने को लेकर आग्रह किया। जिलाधिकारी कौशांबी ने ज्ञापन स्वीकार करते हुए शासन को ज्ञापन भेजने एवं जनभावना से शासन को अवगत कराने की बात कही है। इसके पूर्व जिला मुख्यालय मंझनपुर में सर्वसमाज कल्याण समिति एवं समर्थ किसान पार्टी के कई नेता एवं कार्यकर्तागण इकट्ठा हुए और धाता क्षेत्र को जनपद कौशांबी में शामिल किए जाने को लेकर चर्चा की। इस अवसर पर सर्वसमाज कल्याण समिति के मुखिया चंदन सिंह ने कहा कि धाता क्षेत्र जनपद कौशांबी के

जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते समर्थन किसान पार्टी नेता

सीमावर्ती इलाकों से जुड़ा है और कौशांबी जिला मुख्यालय मंझनपुर से मात्र 15 किमी की दूरी पर है जबकि यह जनपद फतेहपुर के अंतिम छोर पर स्थित है और फतेहपुर जिला मुख्यालय से करीब 80 किमी की दूरी पर है। इसके चलते आम जनता को अपनी समस्यायों को लेकर फतेहपुर जिला मुख्यालय तक आवागमन करने में भारी दिक्कत का सामना करना पड़ता है और लोगों को भारी परेशानी होती है। इसी के साथ फतेहपुर जिले के अंतिम छोर पर होने के कारण धाता क्षेत्र का समुचित विकास नहीं हो पाता और पूरा क्षेत्र बुरी तरह पिछड़ा है। अगर धाता क्षेत्र को कौशांबी जनपद से जोड़ दिया जाए तो निश्चित रूप से धाता क्षेत्र का समुचित विकास होगा और लोगों को अपनी समस्यायों से छुटकारा पाने के लिए ज्यादा भागदौड़ भी नहीं करनी पड़ेगी। इसी क्रम में समर्थ किसान पार्टी के नेता अजय सोनी ने कहा कि कौशांबी जनपद का मानक पूरा नहीं होने के कारण कौशांबी जिले के अस्तित्व पर हमेशा खतरा मंडराता रहता है। अगर धाता क्षेत्र को कौशांबी जनपद में शामिल कर दिया जाए तो निश्चित रूप से कौशांबी जनपद का मानक पूरा हो जाएगा और जिले को एक ब्लॉक भी हासिल हो जाएगा। इसलिए प्रदेश सरकार को चाहिए कि धाता क्षेत्र को कौशांबी जनपद में शामिल करे। इस अवसर पर व्यापार मंडल धाता के अध्यक्ष संजय सिंह, बाबूलाल गुप्ता, अपना दल नेता मनोज सिंह पटेल, अनुपम सिंह, प्रवीण सिंह, अजित सिंह, विवेक सिंह, कलीम अहमद, जुम्मन अली आदि मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

धवाड़ा ग्राम पंचायत में अमृत सरोवर का उद्घाटन

बैरम पुर कौशाम्बी। केंद्र की मोदी सरकार ने गांव-गांव अमृत सरोवर बनाने का निर्देश दिया है इसी क्रम में अमृत सरोवर बनाने के लिए उद्घाटन किए जा रहे हैं सरसवा विकासखंड क्षेत्र के धवाड़ा ग्राम पंचायत में अमृत सरोवर का उद्घाटन सांसद प्रतिनिधि शशि प्रकाश साहू एवं ग्राम विकास अधिकारी ए०पी०ओ० ग्राम प्रधान मीरा देवी पति दिलीप कुमार के द्वारा अमृत सरोवर तालाब का उद्घाटन किया गया अमृत सरोवर कार्यक्रम के अवसर पर सांसद प्रतिनिधि और ग्राम प्रधान ने विधि विधान से पूजन कर कार्यक्रम की शुरुवात की हैं इस कार्यक्रम में जिला अधिकारी सांसद सहित तमाम बड़े नेता अधिकारियों को पहुंचना था लेकिन कार्यक्रम में बड़े अधिकारी नेता नहीं पहुंच सके जिस पर सांसद प्रतिनिधि ने अमृत सरोवर का उद्घाटन किया है अमृत सरोवर कार्यक्रम शुरू हो जाने से गांव के मजदूरों को जहां रोजगार मिलेगा वही जल संचय की व्यवस्था भी गांव-गांव सुचारू होगी अमृत सरोवर उद्घाटन के अवसर तमाम ग्रामीण भी मौजूद रहे।

अर्ध निर्मित विद्यालय

जीआईसी अझुवा खंडहर में तब्दील आखिर कौन होगा जिम्मेदार!

60 लाख से निर्मित विद्यालय भवन 7 वर्षों बाद भी नहीं हो सका हैंडओवर

अझुवा कौशाम्बी। सरकार भले ही शिक्षा के मामले में बड़े बड़े दावे कर ले लेकिन जिम्मेदार हैं कि सुधरेंगे नही आखिर कब सुधरेगी शिक्षा व्यवस्था जब बिल्डिंग ही मटियामेट हो जाएगी। मामला नगर पंचायत के वार्ड नम्बर 8 अमीरतापुर का है। बता दें 2015-2016 में शासन द्वारा राजकीय हाईस्कूल के लिए आवास विकास परिषद द्वारा कार्यदायी संस्था को निर्माण के लिए 59 लाख से अधिक की धनराशि अवमुक्त कर नगर पंचायत अझुवा के वार्ड नं 8 अमिरतापुर में आलीशान विद्यालय भवन का निर्माण करवाया गया जहां पर गरीब कमजोर घरों के विद्यार्थियों को अध्ययन का सपना दिखाया गया लेकिन हुआ क्या ?आज भी आधी अधूरी पूरी बिल्डिंग का जंगला,शीशे दरवाजे शौचालय टूटे उखड़े पड़े हैं निमार्णाधीन भवन छिन्न भिन्न की अवस्था मे पड़ा है,बाउंड्री को तो छोड़िए केवल कमरे दीवाल छत शेष है बांकी सब तहस नहस है !ठेकेदार ने विगत वर्षों से उस भवन में कार्य नही पूरा करवाया है मजेदार तथ्य देखिए इस धराशायी राजकीय हाईस्कूल में 2 सहायक अध्यापक 1 महिला क्लर्क पोस्ट हैं एक अध्यापक जो कि प्रतापगढ़ से प्रतिदिन आवागमन कर एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमिरतापुर केन में राजकीय हाईस्कूल अमिरतापुर में पंजीकृत कुछ विद्यार्थियों को शिक्षा दे रहे हैं!!जिम्मेदारों की मंशा पर सवाल उठना लाजिमी है । वहीं नाम न लिखने की शर्त पर शिक्षक ने बताया कि राजकीय हाईस्कूल के लिए कम से कम 7 अध्यापक 1 बाबू 1 चपरासी की आवश्यकता होती है। जानकारी के अनुसार इस राजकीय विद्यालय में 2 सहायक अध्यापक 1 महिला क्लर्क की नियुक्ति की गई है वो भी अमिरता पुर के पूर्व माध्यमिक विद्यालय में एक कमरा लेकर कुछ विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करवा रहे हैं ये कम अचंभा है क्या। इस राजकीय हाइस्कूल की निर्माण के समय से सवाल उठ रहे थे कि विद्यालय की अवस्थिति ऐसी जगह की गई वीरान जगह !बुद्धजीवियों और नगर पंचायत के लोगो के अनुसार इतनी लागत और साधन सुविधा से ऐसा विद्यालय नगर पंचायत के नजदीक पड़ी तमाम भू भागों में किया जाता तो छात्र संख्या बढ़ती लेकिन जिम्मेदार ने मोटा कमीशन के चक्कर मे वीरान क्षेत्र चुन कर खेल किया है ।

आखिर कब बनेगा राजकीय हाईस्कूल

जिम्मेदारों के अनुसार आवास विकास को किस्त देर में मिलने से समय से निर्माण नही हो पाया है ,अभी विद्यालय हैंडओवर नही हुआ है।

वर्षों बाद भी दिखते हैं फाइलेरिया के लक्षण : सीएमओ

कौशांबी। फाइलेरिया के लक्षण कई बार 10 साल बाद दिखते हैं।इसलिए हो सकता है कि आप संक्रमित हों और आपको यह बात पता ही न हो। इसलिए फाइलेरिया की दवा 2 साल से कम उम्र के बच्चों और गर्भवती महिलाओं को छोड़कर सभी को खानी है। यह कहना है मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ के.सी राय का डॉ डी.एस यादव नोडल अधिकारी ने बताया कि जिले में आजकल फाइलेरिया अभियान चल रहा है। अभियान के दौरान कई बार स्वास्थ्य कार्यकताओं को यही जवाब मिलता है कि मैं क्यों दवा खाऊँ, मुझे तो कुछ हुआ ही नहीं है। लेकिन यदि आप लगातार पांच वर्षों तक साल में एक बार दवा खा लेंगे तो यह बीमारी आपसे कोसो दूर हो जाएगी। ऐसे ही सभी लोगों के लगातार से सेवन से यह बीमारी हमारे समाज से समाप्त हो जाएगी। उन्होंने बताया कि फाइलेरिया अभियान की खासियत यह कि दवा स्वास्थ्य कार्यकर्ता के सामने ही खानी है। यदि दवा खाने के बाद कुछ असामान्य सा लगता है तो यह इस बात की गवाही है कि फाइलेरिया के परजीवी आपके शरीर में मौजूद हैं। दवा का असर शुरू होते ही असामान्य सा लगना एक सामान्य सी बात है। सिर्फ आशा को सूचित करना है। दवा खाने के पहले अल्पाहार और पानी जरूर पी लें। अपनी दिनचर्या में अधिक पानी एवं मौसमी फल (अधिक पानी की मात्रा वाले) का सेवन करते रहे। उन्होंने बताया की जिन लोगों के शरीर में फाइलेरिया के परिजीवी जितने ज्यादा होंगे प्रतिकूल प्रभाव भी उतना ही ज्यादा दिखेगा। प्रतिकूल प्रभाव जैसे पेट दर्द, लाल चक्कते के साथ शरीर में खुजली, चक्कर आना, कमजोरी लगना, हल्का बुखार, जी मचलाना या उल्टी होना। अनुपमा मिश्रा जिला मलेरिया अधिकारी ने बताया कि यदि दवा सेवन के बाद कोई दिक्कत होती है तो आप झोला छाप डॉक्टर से कतई परामर्श न लें। तत्काल आशा या एम्बुलेंस सेवा 108 की मदद लें। निकटतम सरकारी स्वास्थ्य इकाई पर जाएं। उन्होंने बताया कि यदि आशा या एम्बुलेंस सेवा मिलने में कुछ समय लग रहा है तो घर पर ही कुछ प्राथमिक उपचार संभव है। जैसे पेट दर्द, जी मिचलाना, उल्टी होने की दशा में प्राथमिक उपचार के रूप में नीबू, चीनी, नमक और पानी यानि ओआरएस घोल दे सकते हैं। वहीं शरीर में खुजली होने पर साफ सूती कपड़े को पानी से भिगोकर शरीर को पोछ लें। बुखार आने की दशा में शरीर के वजन के हिसाब से पैरासिटामोल खा सकते हैं।

सांसद पर टिप्पणी करने वाले सपा नेता की संपत्ति कुर्क

एक करोड़ दो लाख इक्यानबे हजार रुपए की सम्पत्ति हुई कुर्क

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। एक सप्ताह पूर्व सोशल मीडिया पर सपा नेता के भाई का एक वीडियो वायरल हो रहा था इस वीडियो में सपा नेता का भाई सांसद पर तमाम टिप्पणी कर रहे थे वायरल वीडियो में सांसद पर तमाम आरोप भी लगाए गए थे इस मामले के बाद सपा नेता की मुश्किलें बढ़ गयी और सपा नेता की करोड़ों की संपत्ति को जिलाधिकारी के निर्देश पर थाना पुलिस ने कुर्क कर लिया है। जिलाधिकारी द्वारा थाना मझनपुर में पंजीकृत मुकदमा यूपी गैंगस्टर एक्ट में 14 (1) के तहत कुर्की आदेश के अनुपालन में पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में क्षेत्राधिकारी मझनपुर एसडीएम मंझनपुर की मौजूदगी में

सपा नेता की संपत्ति कुर्क करते पुलिस और अधिकारी

तहसीलदार मंझनपुर द्वारा थाना मंझनपुर पुलिस टीम के साथ अभियुक्त शबीह हैदर उर्फ मीनू पुत्र रजा हैदर निवासी ग्राम मोहल्ला हजरतगंज कस्बा व थाना मझनपुर की अवैध कार्यों से अर्जित की गयी धनराशि से खरीदी गयी एक करोड दो लाख इक्यानवे हजार की अचल सम्पत्ति कुर्क की गयी।

गंदगी से बजबजा रहा मढ़ी गांव नहीं पहुंचता सफाई कर्मी

स्वच्छता अभियान साफ सफाई के नाम पर केंद्र प्रदेश सरकार करोड़ों की रकम सरकारी खजाने से कर रही है खर्च

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। एक तरफ स्वच्छता अभियान साफ सफाई के नाम पर केंद्र और प्रदेश सरकार लाखों करोड़ों की रकम सरकारी खजाने से खर्च कर रही है लेकिन जिम्मेदारों की उदासीनता के चलते गांव में साफ सफाई व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो चुकी है चौपट व्यवस्था के बाद भी फर्जी उपस्थिति दर्ज कर सफाई कर्मियों के वेतन दे कर हिस्सा वसूला जा रहा है जो व्यवस्था पर बड़ा सवाल है और मामले में जांच हुई तो जिम्मेदारों पर गाज गिरना तय है।

मंझनपुर तहसील क्षेत्र के ग्रामसभा मढ़ी ब्लॉक बारा में सफाई व्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गई है पंचायत विभाग ने गांव में कामता प्रसाद और पुष्पा सिंह सफाई कर्मी की तैनाती की है लेकिन उसके बाद भी पूरे गांव में गंदगी व्याप्त है इस गांव में कहीं भी सफाई नहीं हो रही है ग्रामीणों ने बताया कि महीनों बीत जाने के बाद भी गांव में सफाई कर्मी नहीं पहुंच

गांव में व्याप्त गंदगी

रहा है गांव की नालिया चोक हो गई हैं और नालियों का गंदा पानी गलियों में बह रहा है जिससे ग्रामीणों को गांव में आने जाने में दिक्कतें होती हैं गांव में व्याप्त गंदगी के चलते इस गर्मी में महामारी की बीमारी भी फैलने की आशंका ग्रामीणों को सताये जा रही है ग्रामीणों ने कई बार खंड विकास अधिकारी कार्यालय से सफाई कर्मी की शिकायत की लेकिन उसके बाद भी सफाई कर्मी की नियमित सफाई करने की आदत में सुधार नहीं हो सका है सूत्रों की माने तो सफाई कर्मी को बिना ड्यूटी दिए वेतन दिलाने के नाम पर एडीओ पंचायत सफाई कर्मी से तीन हजार रुपए महीने की अवैध वसूली कर रहे हैं जिससे वह गांव की सफाई व्यवस्था से विभागीय अधिकारी को गुमराह कर फर्जी उपस्थिति दर्ज कर सफाई कर्मी को प्रत्येक महीने वेतन दिला रहे हैं सफाई कर्मी के साथ-साथ एडीओ पंचायत के कारनामे की भी जांच कराए जाने की जरूरत है और आला अधिकारियों ने एडीओ पंचायत के कारनामे की जांच कराई तो बिना सफाई किए सफाई कर्मियों की फर्जी उपस्थिति दर्ज कर वेतन दिए जाने के मामले का बड़ा खुलासा होगा।

कमीशन खोरी को लेकर अधिकारी और ठेकेदार के बीच खिंची तलवारें

महीनों बीत जाने के बाद भी नही बिछी इंटरलॉकिंग लोगों को आने जाने में हो रही परेशानी

चायल कौशाम्बी। नगर पंचायत चायल में विकास कार्यों में कमीशन खोरी को लेकर अधिकारी और ठेकेदार के बीच तलवारें खिंच गई है जिससे नगर पंचायत क्षेत्र का विकास कार्य अवरुद्ध हो गया है कार्य शुरू होने के महीनों बाद भी काम नहीं पूरा हो पा रहा है ठेकेदारों का आरोप है कि अधिकारी मोटा कमीशन मांगते हैं और जब कमीशन उन्हें कम दिया जाता है तो वह कार्य का भुगतान रोक देते हैं नगर पंचायत के ठेकेदार और अधिकारी के बीच कमीशन खोरी को लेकर उपजे विवाद के बाद आला अधिकारी अनजान है जिससे नगर पंचायत का विकास कार्य पूरी तरह से बाधित है। चायल कस्बे के तहसील गेट के पास रोड किनारे बिछ रहे इंटर लॉकिंग का कार्य महीनों बीत जाने के बाद भी नही तैयार किया जा रहा है। जिससे डेढ़ फुट का गड्ढा खोद कर छोड़ दिया गया ठेकेदारों की मनमानी के चलते समय से इंटरलॉकिंग का काम पूरा नहीं हुआ जिससे आए दिन रोड पर एक्सीडेंट होते रहते है। मजेदार की बात यह है की तहसील गेट के सामने किसी भी अधिकारी को गड्ढा दिखाई नही देता। और नजरंदाज कर उसी इंटरलॉकिंग के गड्ढे को देखते चले जाते है।

सड़क पर गड्ढा और अर्ध निर्मित इंटरलॉकिंग

जनता को पानी सप्लाई के लिए खरीदे गए स्टील टैंकर का निर्माण कार्य में हो रहा उपयोग!

अखंड भारत संदेश

आखिर निर्माण कार्य में टैंकर का प्रयोग किया जाना था तो क्यों खरीदे गए महंगे कीमत के टैंकर

कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद मंझनपुर बीते 2 वर्षों से अजब गजब कारनामे करके सुर्खियों में बना हुआ है गर्मियों के महीने में सड़क के डिवाइडर में पौधरोपण करना फिर उसके देखरेख के लिए दर्जनों कर्मचारियों को लगाकर वेतन के नाम पर सरकारी खजाने से लाखो का भुगतान करना नगर पालिका क्षेत्र में आम जनता को पानी की सप्लाई के लिए स्टील का टैंकर खरीद कर निर्माण कार्य में उसका प्रयोग किया जाना नाला निर्माण कराने के एक साल के अंदर खुद उसको नष्ट करा कर फिर नया नाला का निर्माण कराया जाना सहित नगर पालिका मंझनपुर के अधिकारियों के तमाम बड़े बड़े कारनामे पर आला अधिकारी की नजर नहीं पहुंच रही है या फिर किसी दबाव में नगरपालिका के कारनामों पर पर्दा डालने का प्रयास हो रहा है यह बड़ी जांच का विषय है नगर की जनता की बातों को मानें तो नगर पालिका के विकास कार्य में एक माननीय कमीशन खोरी के हिस्सेदार हैं और माननीय के दबाव में नगर पालिका के भ्रष्टाचार पर कार्यवाही नहीं हो रही है बीते दिनों एक भाजपा नेता ने नगर निकाय और डिप्टी सीएम से शिकायत कर नगरपालिका की जांच कराए जाने की मांग की थी लेकिन जांच शुरू होने के पूर्व ही माननीय ने उस नेता को शिकायती पत्र वापस लेने का दबाव बना दिया जिससे नगर पालिका के भ्रष्टाचार की जांच नहीं हो सकी। गौरतलब है कि नगर पालिका मंझनपुर क्षेत्र के निवासियों को आरओ पानी सप्लाई के लिए नगर पालिका द्वारा स्टील टैंकर की खरीद की गई थी स्टील टैंकर की खरीद में नगर पालिका ने बड़ा बजट खर्च कर दिया लेकिन आरओ पानी सप्लाई के उपयोग में स्टील टैंकर का प्रयोग नहीं हो सका नगरपालिका में पानी सप्लाई की योजना पहले ही चौपट हो चुकी है लाखो के टैंकर को ठेकेदारों ने उपयोग करना शुरू कर दिया नगर पालिका क्षेत्र में नाला निर्माण में स्टील टैंकर का प्रयोग किया जा रहा है जिससे लाखों कीमत पर खरीदे गए टैंकर बर्बाद हो रहे हैं लेकिन सरकारी संपत्ति बर्बाद होने के मामले में नगरपालिका के जिम्मेदार अभी तक गंभीर नहीं हैं यह टैंकर इन दिनों नगर में चल रहे निर्माण कार्यों में ठेकेदारों के उपयोग में आ रहा है अब सवाल उठता है कि स्टील टैंकर से निर्माण कार्य में पानी सप्लाई किए जाने का क्या औचित्य है लाखों रुपए कीमत से खरीदा गया टैंक बर्बाद होता दिख रहा है पानी सप्लाई के नाम पर खरीदे गए स्टील टैंकर को बर्बाद करने वाले नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी के कारनामों को संज्ञान लेते हुए जांच करा कर दंडित किए जाने की मांग नगर की जनता ने शासन से की है।

सोता रहा परिवार घर से 80 हजार चोरी

अझुवा कौशाम्बी। नगर पंचायत अझुवा वार्ड नं 12 नयानगर निवासी डॉ भोला नाथ राजपूत के घर बीती रात अज्ञात चोरों ने 80 हजार रुपये चोरी कर फरार हो गए हैं सुबह जानकारी पर परिजनों की सूचना पर चौकी इंचार्ज अझुवा गौरव त्रिवेदी मामले की छानबीन में जुट गए है चौकी इंचार्ज ने बताया कि पीड़ित के अनुसार छोटे बॉक्स में रखे रुपए लेकर चोर चंपत हुए हैं जबकि बगल में रखा हुआ रुपया चोरों ने हाथ नहीं लगाया पुलिस मामले की छानबीन कर रही है मामला संदिग्ध प्रतीत हो रहा है पुलिस का कहना है कि शीघ्र ही इस चोरी का खुलासा कर दिया जाएगा। लेकिन क्षेत्र में पहले भी कई बड़ी-बड़ी चोरियां हो चुकी हैं बरसों बीत जाने के बाद भी पूर्व की चोरियों का खुलासा पुलिस नहीं कर सकी है

चोरी के बालू के साथ अभियुक्त गिरफ्तार : कौशाम्बी। थाना कडाघाम पुलिस बल द्वारा अभियुक्त आशू दूबे पुत्र अरविन्द दूबे निवासी कमारा थाना फफूद जनपद औरया को ट्रक में भरी चोरी की बालू के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

दगा दे गए हैंड पंप सरकार नहीं करा सकी मरम्मत

अखंड भारत संदेश

ग्राम प्रधान राजनैतिक विरोधियों के हैंडपंपों को मरम्मत कराने से कर रहे हैं इनकार

कौशांबी। सरकार की गलत नीतियों के चलते ग्रामीण क्षेत्रों में पानी के लिए हाहाकार मचा है वही ग्राम प्रधान राजनैतिक विरोध के चलते हैंडपंप की मरम्मत में पक्षपात कर रहे हैं जिसके चलते ग्रामीणों के सामने पानी की विकराल समस्या उत्पन्न हो चुकी है लेकिन अधिकारी भी ग्राम प्रधानों के सामने बेबस दिखाई पड़ रहे हैं जिसका नतीजा यह है कि गांव क्षेत्र में खराब हैंडपंप की मरम्मत केवल प्रधान के अपनों के दरवाजे पर हो रही है बाकी आम जनता हैंडपंप मरम्मत के लिए बार-बार मांग करती रह जाती है जबकि हैंडपंपों मरम्मत का जिम्मा ग्राम प्रधानों को दिया गया है प्रधानों के पक्षपातपूर्ण इस बर्ताव पर पंचायत सचिव भी अपने को असहाय महसूस कर रहे हैं हैंडपंपों की मरम्मत में चल रहे इस खेल के मामले में शासन प्रशासन को गंभीरता दिखाते हुए आम जनता के पानी की व्यवस्था को सुचारू करने के लिए सार्वजनिक तरीके से सभी हैंडपंपों की मरम्मत करानी होगी तभी पानी की दिक्कत दूर हो सकेगी तपन भरी दुपहरी

में पानी के लिए ग्रामीण जनता परेशान हो रही है तमाम प्रयास के बाद भी खराब हैंडपंप की मरम्मत सरकारी नुमाइंदे नहीं करा सके हैं हैंडपंप की मरम्मत का जिम्मा योगी सरकार ने ग्राम पंचायतों को दे दिया है और ग्राम पंचायत के ग्राम प्रधान राजनैतिक विरोध के चलते गांव के तमाम हैंडपंपों को खराब स्थिति में छोड़ देते हैं ग्राम प्रधानों की स्थिति यह है की जिसने उन्हें अपना बना लिया प्रधानों को जिन पर भरोसा है कि उन्होंने मतदान प्रधान के पक्ष में किया है और आगे भी मतदान प्रधान के पक्ष में करते रहेंगे उनके हैंडपंप तो मरम्मत हो रहे हैं लेकिन ग्राम प्रधान जिसे अपना विरोधी मानते हैं उसके मोहल्ले के खराब हैंडपंपों की मरम्मत नहीं हो रही है आला अधिकारी भी सरकारी बजट से मरम्मत होने वाले हैंडपंपों में प्रधान की इस पक्षपात पर मौन धारण करके बैठे हैं जिससे गांव गांव जनता पानी के लिए व्याकुल है आए दिन मामला अधिकारियों की चौखट पर पहुंचता है लेकिन जांच और कार्यवाही के नाम पर फिर ग्राम प्रधान तक शिकायती पत्र पहुंच जाता है और प्रधान जिसे विरोधी मानते हैं उसके हैंडपंप की मरम्मत नहीं हो पाता है इसी तरह का एक मामला कौशांबी विकासखंड क्षेत्र के बराई बंधवा गांव का सामने आया है जहां प्रधान विरोधी के घर के पास लगा हैंडपंप बार बार अधिकारियों को अवगत कराने के बाद मरम्मत नहीं हो सका है तपन भरी गर्मी में ग्रामीण जनता पानी के लिए व्याकुल है मंगलवार को फिर मामले की शिकायत मुख्य विकास अधिकारी और जिला पंचायत राज अधिकारी से करने के बाद फैज अहमद ने हैंडपंप मरम्मत की मांग की है।

संपादकीय

योगी आदित्यनाथ होने के मायने

जब 2017 में उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में भाजपा भारी बहुमत से सत्ता में आई, उस वक्त योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री पर की दौड़ में दूर-दूर तक नहीं थे। पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने उनमें संभावनाओं को देखते हुए योगी को मुख्यमंत्री बनाने की सलाह भाजपा नेतृत्व की दी। मुख्यमंत्री बनते ही योगी आदित्यनाथ ने सर्वप्रथम अवैध बूचड़खानों पर हंटर चलाया। सपा के शासन में ऐसे अवैध बूचड़खानों को पर्याप्त संरक्षण मिला था और ऐसा माना जाता था कि ये अवैध बूचड़खाने उत्तर प्रदेश की नियति है और इन्हें कोई भी बंद नहीं कर सकता। लेकिन योगी की दृढ़ इच्छाशक्ति के चलते एक वर्ष के अन्दर ये अवैध बूचड़खाने अतीत के विषय हो गये। अवैध बूचड़खानों को बंद करने के साथ योगी की प्राथमिकता में उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था थी। अखिलेश राज में यूपी में आये दिन दंगे होते थे। वोटबैंक की राजनीति के चलते इनके विरुद्ध कार्रवाई नहीं होती थी। वर्ष 2013 में मुजफ्फरनगर में हुए दंगे सभी की याददाश्त में होंगे। जब वहां के ताकतवर मंत्री आजम खान ने गौरव और सचिन के हत्यारों को जेल से छुड़वा दिया था। स्थिति की भयावहता यह कि उस दौर में उत्तर प्रदेश में दंगे होना आम बात थी, पर वह योगी आदित्यनाथ ही थे जिन्होंने शासकीय सम्पत्ति का नुकसान पहुंचाने पर उनसे वसूली शुरू की और दंगाइयों के हौसलों को पूरी तरह तोड़ दिया। इसे भी दुनिया के एक आश्चर्य में गिना जाना चाहिए कि योगी की सख्ती और दृढ़ता के चलते योगी राज में उत्तर प्रदेश पूरी तरह दंगा-मुक्त हो गया। इसी के साथ योगी ने कानून-व्यवस्था को चुस्त-दुरुस्त करने के लिये माफियाओं और हिस्ट्रीशीटरों को जेल की सलाखों में डाला। आजम खान, अतीक अहमद और अफजल अंसारी जैसे लोग जो अपने को कानून से ऊपर मानते थे और आतंक के बल पर आर्थिक साम्राज्य खड़ा कर लिया था, उन्हें योगी ने ऐसे जेल में डाला कि सालों-साल बाद भी जेलों से नहीं निकल सके हैं। ऐसे माफियाओं और अपराधियों के अवैध निर्माण बुलडोजर से गिरा दिये गये और उनमें गरीबों के आशियाने बनाये गये। यह योगी की दृढ़ इच्छाशक्ति और अपराध के प्रति जीरो टालटेंस का ही नतीजा था कि पूरे योगी राज में अपराधी गले में पट्टी बांधकर थानों में आत्मसमर्पण सतत कर रहे हैं। यही वजह है कि सपा राज की तुलना में योगी राज में अपराधों में भारी कमी आई। सिर्फ अपराधियों के विरुद्ध ही योगी काल बनकर नहीं टूटे बल्कि भ्रष्टाचारियों के विरुद्ध भी योगी का हथौड़ा पूरी निर्ममता से चला। अपने को विशेषाधिकारों से सम्पन्न मानने वाला नौकरशाही का वह हिस्सा जिसे आईएएस, आईपीएस एवं आईएफएस कहा जाता है, उनके विरुद्ध भी भ्रष्टाचार की शिकायतें मिलने पर योगी ने उनके विरुद्ध कार्रवाई करने में कोई कोताही नहीं बरती। इन्हीं सब कठोर कदमों का नतीजा यह है कि आज उत्तर प्रदेश में कई एक्सप्रेस वे बन चुके हैं और बनने जा रहे हैं। प्रदेश में भारी पूंजी निवेश हो रहा है। गरीबों को पचास लाख के आसपास रिकार्ड आवास दिये जा चुके हैं। विकास की दौड़ में सदैव अत्यन्त पीछे रहने वाला उत्तर प्रदेश आर्थिक विकास की दृष्टि से आज दूसरे स्थान पर है और शीघ्र ही प्रथम स्थान में आने वाला है। मुस्लिम समुदाय द्वारा सड़कों पर खुले में नमाज पढ़ना सिर्फ उत्तर प्रदेश में ही नहीं, देशव्यापी समस्या थी।

बैडमिंटन में विश्व पटल पर बढ़ा भारत का गौरव

योगेश कुमार गोयल

अत्याचारी, क्रुर, हैवान, दानव मुगल औरंगजेब की नाक में मराठों ने दम कर रखा था। वही औरंगजेब की गैर-मुस्लिमों के साथ बर्बरता चरम पर थी। स्वयं मराठों ने राजद्रोह कर संभाजी को औरंगजेब का बंदी बनने पर मजबूर किया और औरंगजेब ने ये कहते हुए कि ह्लअगर एक भी मुगल शहजादा संभाजी की तरह होता तो आज मुगलों का परचम पूरी दुनिया में लहराता"। सम्भाजी अपनी शौर्यता के लिये बहुत प्रसिद्ध थे

खेलों के क्षेत्र में भारत अब लगातार शानदार प्रदर्शन कर रहा है। पिछले साल ओलम्पिक खेलों में सुखद प्रदर्शन के बाद अलग-अलग खेलों में भारतीय खिलाड़ी कमाल का प्रदर्शन करते हुए नित नए-नए रिकॉर्ड बना रहे हैं। 15 मई को थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में खेले गए बैडमिंटन के सबसे प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में भारत ने ऐतिहासिक जीत दर्जकर विश्व पटल पर भारत का गौरव बढ़ाया है। भारतीय खिलाड़ियों ने ऐसी टीम को पटखनी देकर थॉमस कप भारत के नाम किया, जो विश्व की अपराजेय टीम मानी जाती रही है। हालांकि भारत को ग्रुप स्टेज में चीनी ताइपे ने हरा दिया था, जिसके बाद तमाम खेल विश्लेषक मान बैठे थे कि भारत क्वार्टर फाइनल से आगे नहीं बढ़ पाएगा लेकिन टीम इंडिया ने मलेशिया, डेनमार्क तथा इंडोनेशिया को मात देकर स्वर्णिम सफलता हासिल की। फाइनल मुकाबले में 14 बार की चैम्पियन इंडोनेशियाई टीम को ही जीत का दावेदार माना जा रहा था लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने इंडोनेशिया को 3-0 से मात देते हुए सारे अनुमानों को गलत साबित कर दिया। भारत के लिए यह जीत इसलिए खास है क्योंकि भारत ने थॉमस कप के 73 वर्षों के इतिहास में कुल 13 बार इस टूर्नामेंट में हिस्सा लिया और कामयाबी 13वें प्रयास में हासिल हुई है। यह जीत वैसी ही है, जैसी 1983 में कपिलदेव की कप्तानी में विश्वकप क्रिकेट में भारत को मिली थी। बैडमिंटन में प्रकाश पादुकोण, पी. गोपीचंद, पीवी सिंधु, साइना नेहवाल, ज्वाला गुट्टा, किदांबी श्रीकांत जैसे कई खिलाड़ी ओलम्पिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों, विश्व चैम्पियनशिप इत्यादि विभिन्न टूर्नामेंटों में शानदार प्रदर्शन करते हुए अनेक उपलब्धियां हासिल कर चुके हैं लेकिन थॉमस कप में भारतीय प्रतिभाएं लगातार विफल होती रही। थॉमस कप टूर्नामेंट में भारत की जीत ऐतिहासिक और यादगार इसलिए भी है क्योंकि 2014, 2016 और 2018 की स्पर्धाओं में जो भारतीय टीम नॉकआउट तक नहीं पहुंच सकी थी और 2020 में भारत क्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर हो गई थी, उसके लिए इस बार भी मलेशिया तथा डेनमार्क जैसी टीमों को शिकस्त देकर फाइनल तक

पहुंचना और फाइनल में इंडोनेशिया जैसी बेहद सशक्त टीम को हराना आसान नहीं था। फाइनल में भारत से हारने वाली इंडोनेशिया टीम पूरे टूर्नामेंट में इससे पहले एक भी मैच नहीं हारी थी। भारत ने 1952 तथा 1955 की स्पर्धाओं में अंतिम राउंड तक का सफर तय किया था और उसके बाद बेहतरीन प्रदर्शन 1979 में रहा था, जब प्रकाश पादुकोण की अगुवाई में टीम सेमीफाइनल तक पहुंचने में सफल रही थी। उसके बाद से भारतीय टीम कभी भी सेमीफाइनल से आगे नहीं बढ़ सकी और सेमीफाइनल से फाइनल तक का सफर तय करने में भारत को 43 साल लग गए। इस बार भारतीय खिलाड़ियों के जज्बे ने 2016 के चैम्पियन डेनमार्क को हराकर टीम को फाइनल में जगह दिलाई और अंततः भारत 14 बार के चैम्पियन इंडोनेशिया को हराकर नया इतिहास रचते हुए विश्व विजेता बन गया।

थॉमस कप टूर्नामेंट वर्ष 1949 से नियमित खेला जा रहा है, जिसके आयोजन का विचार सबसे पहले बेहतरीन खिलाड़ी माने जाने वाले सर जॉर्ज एलन थॉमस के दिमाग में आया था। वह चाहते थे कि फुटबॉल विश्वकप तथा टेनिस के डेविड विश्वकप की ही भांति बैडमिंटन का भी टूर्नामेंट होना चाहिए। शुरूआत में यह टूर्नामेंट हर तीन साल के अंतराल पर आयोजित किया जाता था लेकिन 1982 के बाद इसका आयोजन दो वर्षों में एक बार किया जाने लगा। 1949 से अभी तक यह टूर्नामेंट अब तक कुल 32 बार आयोजित किया जा चुका है। दुनिया के इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में बैडमिंटन वर्ल्ड फेडरेशन के कुल 16 सदस्य देश हिस्सा लेते हैं। इस टूर्नामेंट में इंडोनेशिया, चीन, डेनमार्क, मलेशिया तथा जापान जैसी टीमों का ही दबदबा रहा था और भारत अब इस दबदबे को खत्म करते हुए टूर्नामेंट जीतने वाला छठा देश बन गया है।

इंडोनेशिया ने कुल 21 बार इस टूर्नामेंट में हिस्सा लिया है और 14 बार खिताब जीत चुका है जबकि 1982 से इसमें हिस्सा ले रहे चीन ने 10, मलेशिया ने 5 और डेनमार्क, जापान तथा भारत ने एक-एक बार थॉमस कप जीता है। वैसे तो थॉमस कप खिताब पर एशियाई देशों का ही कब्जा रहा है लेकिन 2016 में इंडोनेशिया को हराकर डेनमार्क यह खिताब जीतने वाला पहला गैर एशियाई देश बना था।

हालांकि थॉमस कप टूर्नामेंट में इंडोनेशिया, मलेशिया, डेनमार्क जैसी टीमों में शीर्ष रैंकिंग के खिलाड़ी थे लेकिन दबाव में आए बिना भारतीय खिलाड़ियों सात्विक-चिराग, लक्ष्य सेन, किदांबी श्रीकांत, एचएस प्रणय ने जीत का ऐसा इतिहास रच दिया, जिसकी किसी ने कल्पना तक नहीं की थी। फाइनल में लक्ष्य सेन ने पहले और सात्विक-चिराग की जोड़ी ने दूसरे मैच में भारत को जीत दिलाई। उसके बाद किदांबी श्रीकांत ने तीसरा मैच जीतकर भारतीय टीम को पहली बार थॉमस कप का चैंपियन बनाया। लक्ष्य सेन ने पहले मैच में डिफेंडिंग चैंपियन इंडोनेशिया के एंतोनी सिनिसुका को 8-21, 21-17, 21-16 से मात दी। दूसरे मैच में सात्विक साईराज रैंकी रेड्डी और चिराग शेट्टी की जोड़ी ने 18-21, 23-21, 21-19 से जीत हासिल की और तीसरे मैच में किदांबी श्रीकांत ने क्रिस्टी को 21-15, 23-21 से हराकर इतिहास रच दिया। भारत की इस गौरवमयी उपलब्धि से पूरे देश का उत्साहित होना स्वाभाविक है। थॉमस कप टूर्नामेंट में भारत की जीत ने यह प्रमाणित कर दिया है कि भारत अब बैडमिंटन में भी एक बड़ी शक्ति के रूप में उभर रहा है। वैसे तो भारतीय खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत तौर पर बैडमिंटन में अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं किन्तु टीम के रूप में थॉमस कप जैसे बेहद प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में जीत हासिल करना भारतीय बैडमिंटन के स्वर्णिम दौर की शुरूआत का संकेत है लेकिन जरूरत इस बात की भी है कि कोरोना काल में ऑनलाइन पढ़ाई-लिखाई के कारण खेल मैदानों से दूर हुई युवा पीढ़ी में खेलों के प्रति आकर्षण और जज्बा पैदा किया जाए।

देशभर में नए-नए स्कूल-कॉलेज तो धड़ाधड़ खुल रहे हैं लेकिन दूसरी ओर पर्याप्त जगह की कमी के कारण खेल के मैदान सिमट रहे हैं। भारत का डंका न केवल बैडमिंटन में बल्कि अन्य सभी खेलों में भी पूरी दुनिया में बजता रहे, इसके लिए जरूरी है कि युवा प्रतिभाओं को खेल उपकरणों से लेकर कोचिंग तक की तमाम सुविधाएं मिलना सुनिश्चित किया जाए। बहरहाल, बैडमिंटन कौशल का खेल है और आज भारतीय खिलाड़ियों के पास भी कौशल की कमी नहीं है।

उम्मीद की जानी चाहिए कि थॉमस कप टूर्नामेंट में भारत की स्वर्णिम जीत बैडमिंटन के लिए नए युग का सृजन करते हुए निर्विवाद रूप से भारत को बैडमिंटन में और आगे ले जाएगी तथा उभरते खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए उनके लिए मील का पत्थर साबित होगी।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

हाइपरटेंशन कहीं जानलेवा न बन जाये

स्वाती सिंह

मानव जाति खुद का विकास करने में सक्षम है, यदि उसको कोई उसके बल की याद दिलाए। वह पुरुष हो या महिला सब खुद में एक नई कृति, नई सोच, नया कार्य करने की क्षमता रखते हैं। महिलाओं के बारे में तो इसे और सबल ढंग से कहा जा सकता है। महिलाओं को परिवार व समाज में माहौल मिल जाए तो कोई ऐसा काम नहीं है, जिसे वे पुरुषों की अपेक्षा बेहतर न कर सकें। वर्तमान सरकार यही कर रही है, महिलाओं को आत्मबल देने का काम। दरअसल जब तक महिलाओं का विकास नहीं होता, तब तक राष्ट्र का संपूर्ण विकास संभव नहीं है। राष्ट्र के विकास के लिए महिला का विकास जरूरी है। इस बात को ही शायद आजादी के बाद की सरकारों ने नहीं समझा और महिला को सिर्फ अबला मानकर उसकी रक्षा के लिए कानून बनाकर मौन हो गयीं। इसे पहली बार समझने का काम किया प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने। यही कारण है कि उनकी तमाम योजनाएं महिलाओं को आत्मबल देने पर केन्द्रित रही हैं। यहां तक कि आज तो सरकारी योजना के तहत मिलने वाले आवास की चाभी भी महिला को सौंपी जाती है। इसका एकमात्र कारण है महिलाओं में आत्मबल पैदा करना। यदि कोई सदियों से घूंघट की घुटन में जी रहा हो, उसे तुरंत पर्दे से बाहर नहीं लाकर हम दौड़ा नहीं सकते। वैसे ही आत्मबल भी है। यह एक दिन का काम नहीं है, यह धीरे-धीरे चलने वाली प्रक्रिया है, जिसका प्रतिफल एक साल में दिखना तो शुरू हो जाता है लेकिन मूल परिणाम आने में दशकों लग जाते हैं। किसी भी समाज के विकास के लिए पहली जरूरत होती है, शिक्षित होना। इसकी सोच प्रधानमंत्री ने पहले ही पाल रखी थी और सत्तासीन होते ही 22 जनवरी 2015 को उन्होंने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना की शुरूआत की। इसका मुख्य उद्देश्य बेटियों को उच्च शिक्षा प्रदान किया जाना, उन्हें सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ाना है। आज गांव-गांव में यह गूंज दिख जाती है- ह्लबेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ। वहीं महिलाओं को धुएं से मुक्ति दिलाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक मई 2016 को उज्ज्वला योजना की शुरूआत कर दी। गरीब परिवारों की महिलाओं को भी धुआं से मुक्ति दिलाना। इस योजना का परिणाम रहा कि इस योजना के तहत उपभोक्ताओं की संख्या 30 करोड़ के लगभग हो गयी है। इसी तरह यूपी सरकार ने भी महिलाओं को समृद्ध बनाने की फिक्र करते हुए महिला सामर्थ्य योजना की 22 फरवरी 2021 को शुरूआत की। इसका उद्देश्य महिलाओं को रोजगार देकर उनमें आत्मबल पैदा करना है। 22 जनवरी 2015 को शुरू किये गये सुकन्या समृद्धि योजना के तहत बेटियों के नाम बैंक खाता खुलवाने की प्रक्रिया शुरू की, जिससे बेटियों की शादी बोझ न बने। इसके अलावा सरकार ने फ्री सिलाई मशीन योजना, समर्थ योजना, सुरक्षित मातृत्व योजना की भी शुरूआत की। समर्थ योजना के तहत वस्त्र उद्योग में महिलाओं को आत्मबल पैदा करना है। केन्द्र सरकार द्वारा 20 दिसम्बर 2017 में शुरू की गयी योजना में 18 राज्यों में तीन करोड़ से ज्यादा महिलाओं को वस्त्र उद्योग से संबंधित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस योजना के तहत प्रशिक्षण के बाद महिलाओं को उद्योग करने पर सरकार सहायता भी करेगी। इन तमाम योजनाओं का एकमात्र उद्देश्य महिलाओं में आत्मबल पैदा करना है, जिससे वे खुद के पैरों पर खड़ी हो सकें। वे किसी पर बोझ नहीं, बल्कि किसी का बोझ कम करने में सहभागी की भूमिका निभा सकें। सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य बात है कि देश और कई प्रदेशों की बागडोर महिलाओं के हाथों में रही है, लेकिन कभी महिलाओं ने महिला विकास पर ध्यान नहीं दिया। शायद इसका कारण यही रहा कि उनमें अहम की भावना कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने कभी महिला वर्ग की प्रताड़ना नहीं दिखी अथवा वे महिलाओं का उत्थान इस कारण से नहीं करना चाहती थीं कि वे सिर्फ उन्हें वोट बैंक के लिए प्रयोग करने की नीयत रखती थीं। महिलाओं के उत्थान के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जितनी चिंता की, उतना किसी ने नहीं की। इसमें विशेषकर ऐसी पार्टी, जिसके प्रमुख महिलाएं हैं, उनके लिए शर्म की बात होनी चाहिए। पुरुष व महिला में यदि अंतर को देखें तो महिलाएं भावुक ज्यादा होती हैं। उन्हीं भावनाओं के कारण कई बार उनको ठगा भी जाता है, लेकिन यही भावना उनके लिए कई बार वरदान भी साबित होता है। जैसे बिजनेस में पुरुषों की अपेक्षा महिलाएं आगे रहती हैं। वहीं महिलाओं की एक और विशेषता है, वे शादी से पूर्व एक दूसरी भूमिका में रहती हैं और शादी होते ही वे एक अजनबी घर में जाकर दूसरे आंगन को अपना बना लेती हैं। ऐसे में उन्हें जरूरत पड़ती है एक छांव की, जो पति के रूप में उसे दिखता है। उसके मन में एक विश्वास होता है कि वहां कोई है, जो उसकी पीड़ा को समझेगा, लेकिन ऐसे में अपना सबकुछ छोड़कर दूसरे की छांव में आने वाले को यदि छांव की जगह कांटा मिल जाए तो जिंदगी तो दुश्वार बन ही जाएगी। उसके लिए जिंदगी की तड़पन तो असह्य हो ही जाएगी। इन्हीं सब चीजों को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बखूबी समझा। उन्होंने सबसे पहले महिलाओं में आत्मबल पैदा करने की ठानी। हर महिला मां दुर्गा का अवतार है, यह उसको याद दिलाने की ठानी। अपनी संस्कृति महिलाओं का सम्मान सिखाती है, यह बात जन-जन तक पहुंचाने की ठानी। महिलाएं पुरुषों से हर काम में बहुत आगे हैं, इस बात को बताने की ठानी। यही कारण है कि उन्होंने महिलाओं से संबंधित तमाम योजनाएं लाकर उनके प्रति कृतज्ञता जाहिर की। उन्होंने महिलाओं को बताया कि तुम अबला नहीं, सबला हो। तुम उठो तो राष्ट्र उठेगा।

(लेखक, उप्र सरकार की पूर्व मंत्री व महिला उत्थान कार्यों से जुड़ी हुई हैं।)

चिंतन

सर्वश्रेष्ठ लोक संचारक एवं आदर्श आदि पत्रकार

ललित गर्ग

देव ऋषि नारद या नारद मुनि ब्रह्माजी के पुत्र और भगवान विष्णु के बहुत बड़े भक्त महान तपस्वी, तेजस्वी, सम्पूर्ण वेदान्त एवं शस्त्र के ज्ञाता तथा समस्त विद्याओं में पारंगत हैं, वे ब्रह्मतेज एवं अलौकिक तेजोरश्मियों से संपन्न हैं। हैं। वे आदि-पत्रकार हैं जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एक जगह की खबर दूसरी जगह पहुंचाने एवं इधर की बात उधर करके, दो लोगों के बीच आग लगाने के लिये काफी प्रसिद्ध हैं। माना जाता है कि उन्हें सब खबर रहती हैं कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में कहाँ क्या हो रहा हैं। मूंह पर नारायण नारायण और हाथ में वीणा लिये, नमक-मिर्च लगा के बातें फैलाना, एक बात को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने, सृष्टि के हित में सृष्टि की किसी बड़ी घटना की आहट को पहचानकर उसे एक लोक से दूसरे लोक में पहुंचाने में उनकी महारत थी। उन्हें दुनिया का आदि पत्रकार माना गया है। जगह-जगह में जो चल रहा है, उसकी सुध लेते, इस लोक से उस लोक तक भ्रमणशील रहते, नारद खबरों को संप्रेषित करते, प्रसारित करते। देवर्षि नारद ने अपने धर्मबल से परमात्मा का ज्ञान प्राप्त किया। वे समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपस्थित रहते थे। वे देव, दानव और मानव समाज के हित के लिये सर्वत्र विचरण करते हुए चिंतन व विचार मग्न रहते थे। संगीत के मर्मज्ञ एवं पंडित नारद को हम इहलोक, देवलोक और असुरलोक- तीनों लोकों में एक समान विचरने वाले सर्वश्रेष्ठ लोक संचारक एवं आदर्श पत्रकार के रूप याद कर सकते हैं। नारद को केवल मात्र एक पत्रकार के रूप में समझना या प्रस्तुत करना संभवतः उनके प्रति एकपक्षीय दृष्टि है, क्योंकि उनका व्यक्तित्व बहुआयामी है। उन्होंने ब्रह्मा से ज्ञान प्राप्त किया। संगीत का आविष्कार किया। समाज में भक्ति के मार्ग का प्रतिपादन किया और संवाद के माध्यम से लोकहित का कार्य किया। वे तमस से ज्योति की, असत्य से सत्य की एवं अंधकार से प्रकार की एक सतत यात्रा हैं।

नारद मुनि के व्यक्तित्व रहस्यमय हैं, उन्हें समझना आसान नहीं हैं। यूं तो वे हमेशा खुश और आनन्दित दिखते हैं पर वे काफी संजीदा और विद्वान भी हैं। हिन्दू पौराणिक कथाओं की मानें तो उन्होंने भगवान विष्णु के कई काम पूरे किये हैं। नारदजी को विष्णु का संदेशवाहक माना गया है इसीलिये उन्हें आदि-पत्रकार कहा जाता है। नारदजी के विभिन्न उपनाम भी हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में उन्हें संचारक अर्थात सूचना देने वाला पत्रकार कहा गया है। इसके अतिरिक्त संस्कृत के शब्द कोष में उनका एक नाम आचार्य पिशुन आया है जिसका अर्थ है सूचना देने वाला संचारक, सूचना पहुंचाने वाला, सूचना को एक स्थान से दूसरे स्थान तक देनेवाला है। आचार्य का अर्थ गुरु, शिक्षक, यज्ञ का मुख्य संचालक विद्वान अथवा विज्ञ होता है। आचार्य पिषुन से स्पष्ट है कि देवर्षि नारद तीनों लोकों में सूचना अथवा समाचार के प्रेषक के रूप में परम लोकप्रिय पत्रकार एवं संवाद-प्रेषक, संवाद-वाहक हैं। भूत, वर्तमान एवं भविष्य-तीनों कालों के ज्ञाता, सत्यभाषी, स्वयं का साक्षात्कार करके स्वयं में सम्बद्ध, कठोर तपस्या से लोकविख्यात, गर्भावस्था में ही अज्ञान रूपी अंधकार के नष्ट हो जाने से जिनमें ज्ञान का प्रकाश हो चुका है, ऐसे मंत्रवेत्ता तथा अपने ऐश्वर्य (सिद्धियों) के बल से सब लोकों में सर्वत्र पहुँचने में सक्षम, मंत्रणा हेतु मनीषियों से घिरे हुए देवता, द्विज और नृपदेवर्षि कहे जाते हैं। जनसाधारण देवर्षि के रूप में केवल नारदजी को ही जानता है। उनकी जैसी प्रसिद्धि किसी और को नहीं मिली। वायुपुराण में बताए गए देवर्षि के सारे लक्षण नारदजी में पूर्णतः घटित होते हैं। सम्पूर्ण भारत में ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम, कृष्ण और अनेक देवी-देवताओं की एक समान जानकारी हर भारतवंशी को होने के पीछे नारदजी की पत्रकारिता एवं सुसंवादिता ही मुख्य है। नारद की छवि किसी जाति, वर्ग, समुदाय, सम्प्रदाय से नहीं जुड़ी थी। वे मनुष्य थे या देवता, यह कहना कठिन है। कहीं-कहीं वे गंधर्व के रूप में भी प्रकट होते हैं। परन्तु उस काल में वे देवताओं, मानवों और दानवों सभी के मित्र-हितैषी थे और उनको कुछ सिद्धियां एवं अधिकार प्राप्त थे, जिससे वे पलक झपकते ही सृष्टि के किसी भी कोने में पहुंच जाते और ब्रह्मा, विष्णु, महेश एवं अन्य सभी के दरवाजे उनके लिये हरदम खुले रहते थे। बिना किसी रोक-टोक के वे कहीं भी आ जा सकते थे। एक बार त्रिदेवी - लक्ष्मी, सरस्वती और पार्वती के बीच में अहम की लड़ाई हो गयी कि कौन सी माता सबसे श्रेष्ठ है।

'तपती धरती' का जो जिम्मेदार,बचाव भी उसी से दरकार

निर्मल रानी

मौसम विशेषज्ञों द्वारा ग्रीष्म ऋतू शुरू होने से पहले ही यह भविष्यवाणी कर दी गयी थी कि इस बार दुनिया के अधिकांश देश झुलसाने वाली अभूतपूर्व गर्मी का सामना कर सकते हैं। सहस्त्राब्दियों पुराने ग्लेशियर्स के लगातार पिघलते रहने के बीच जब यह खबर भी आयी थी कि पूरे विश्व को प्रकृतिक रूप से लगभग बीस प्रतिशत ऑक्सीजन की आपूर्ति करने वाले अमेजॉन के सैकड़ों किलोमीटर क्षेत्र के जंगलों को ब्राजील सरकार के संरक्षण में विकास के नाम पर काट दिया गया है। तभी यह अंदाजा होने लगा था कि दुनिया भविष्य में अभूतपूर्व तपिश का सामना करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। और पूरे विश्व विशेषकर भारत को भी इसबार झुलसती गर्मी का सामना करना पड़ा। देश के विभिन्न स्थानों पर 2 से लेकर 3 प्रतिशत तक सामान्य तापमान में वृद्धि दर्ज की गयी। राजधानी दिल्ली के मंगेशपुर नामक एक क्षेत्र में तो पारा 49 डिग्री सेल्सियस पार कर गया। जगह जगह सूखा पड़ने की खबरें आईं। निश्चित रूप से आम लोग ग्लोबल वार्मिंग रुपी इस त्रासदी से पूरी तरह तो हरगिज नहीं निपट सकते। क्योंकि विकास और प्रगति के नाम पर छिड़ी विश्वव्यापी प्रतिस्पर्धा के जिम्मेदार दुनिया के शासक और सरकारें हैं। इन्हीं का काम ऐसी 'विकासवादी' योजनायें बनाना है जो प्रायः पर्यावरण विरोधी होती हैं। जिनमें हरे प्राकृतिक जंगल काटे जाते हैं और सीमेंट व कंक्रीट के 'तपते जंगलों' का विस्तार किया जाता है। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि हम अपने,अपने घरों के आसपास का तापमान कम या स्थिर रखने के लिये अपने स्तर पर कुछ भी नहीं कर सकते। तपिश कम करने और ग्लोबल वार्मिंग से जूझने के ऐसे तमाम छोटे छोटे उपाय हैं जिनका सीधा संबंध सरकार या शासन से नहीं बल्कि आम लोगों से है। जिन्हें अपनाकर हम स्थानीय स्तर पर कम से अपने अपने घर परिवार में तो झुलसती गर्मी से राहत महसूस कर ही सकते हैं और प्रकृति प्रदत्त इस बेशकीमती जल और ऑक्सीजन युक्त धरा का सम्पूर्ण नहीं तो कुछ कर्ज तो अदा कर ही सकते हैं। सर्वप्रथम हमें अपनी यह सोच बनानी होगी और अपने बच्चों में भी पैदा करनी होगी कि वातावरण को कम से कम गर्म होने दें। इसके लिये 'धुंआ' ,अग्नि और गर्म हवा के उत्सर्जन को जितना संभव हो सके,कम करें। प्रायः देखा गया है कि लोग अपने घरों के बाहर कूड़ा करकट खासकर प्लास्टिक पॉलीथिन आदि इकट्ठाकर उसमें आग लगा देते हैं। आज कल विशेषकर स्वच्छता अभियान के तहत जब घर घर से कूड़ा इकट्ठा करने का कार्य सरकारी स्तर पर किया जा रहा हो और इस व्यवस्था के बदले नकद भुगतान भी जनता ही कर रही हो ऐसे में कूड़ा व प्लास्टिक आदि जलाने का ही कोई औचित्य नहीं है। कई बार यह भी देखा गया है कि स्वयं नगर परिषद / निगम के सफाई कर्मचारी ही झाड़ू से एक जगह कूड़ा इकठ्ठा कर उसमें आग लगा देते हैं। कबाड़ का काम करने वाले तमाम लोग रबड़ आदि जलाकर जहरीला काला धुआं पैदा करते हैं। इस पर भी नियंत्रण पाना जरूरी है। स्टेशन के आस पास बैठे भिखारी तो सर्दियों के अतिरिक्त गर्मी में भी कूड़ा जलाकर प्रदूषण फैलते हैं। गाय-भैंस पालक प्रायः मच्छर भगाने की परंपरा के नाम पर पशुओं के आस पास धुआं करते हैं जिससे पशु भी परेशान होते हैं और आस पास का पूरा क्षेत्र भी प्रदूषित होता है। परन्तु न तो स्वयं इनकी समझ में आता है कि यह इसी स्वर्ग रुपी पृथ्वी को कितना नुकसान पहुंचा रहे हैं न ही इन्हें कोई समझने वाला है। अपने आसपास के वातावरण को और अधिक गर्म होने से बचाने के लिये दूसरा उपाय है कम से कम विद्युत खपत की जाये । विशेषकर गर्मियों में बेतहाशा व अनावश्यक रूप से चलने वाले एयर कंडीशनर्स, वातावरण को सबसे अधिक गर्म करते हैं। बड़े मकानों में तो कई कई ए सी लगाकर अधिक से अधिक बिजली बिल चुकाने व वातावरण को गर्म करने में साझीदार बनने से बेहतर है कि अपने घरों को सेंट्रली एयर कूल्ड करने की व्यवस्था करें। इससे कम बिजली खर्च में और पर्यावरण को हानि पहुंचाये बिना हम गर्मी में अपने मकानों को ठण्डा रख सकते हैं।सभी विद्युत उपकरण जरूरी होने पर ही इस्तेमाल करें।

नए जमाने के विटामिन

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

सेहत की बात हो और विटामिन का जिक्र न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। कारण, महंगाई के जमाने में ये माइक्रो न्यूट्रीऐंट्स के रूप में जाने जाते हैं और इन की कमी से हम कई समस्याओं की गिरफ्त में आ जाते हैं। असल में शरीर को सेहतमंद रखने में विटामिन्स का अहम रोल होता है। शरीर को सही से काम करने के लिए पोषण की जरूरत होती है और विटामिन शरीर को सहने के लिए पोषण देने वाली ऊर्जा का काम करते हैं। डाइट एक्सपर्ट डॉक्टर फेंकूचंद कहते हैं कि विटामिन बाहरी हमलों से हड्डियों को मजबूत बनाने, शरीर को जुमला बाते सहने की एनर्जी देने और कई असहनीय बीमारियों से बचाने का काम करते हैं, लेकिन कन्फूजन यहां हो जाती है कि किन विटामिन का सेवन सेहत के लिए जरूरी है। अगर आपके मन में भी यही सवाल उठ रहा है तो परेशान न हों, हम आपको कुछ ऐसे जरूरी विटामिन के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको अपनी डाइट में शामिल करना चाहिए। नीचे जानिए उनके बारे में- इन विटामिन को डाइट में शामिल करने से मिलेंगे शानदार फायदे -

विटामिन सी यानी चाटुकारिता विटामिनः यह महत्वपूर्ण विटामिनों में से एक है, जो न केवल महंगाई के जमाने में सहने की इम्यूनिटी को बढ़ाने, बल्कि चमड़ी को गेंडे की माफिक एकदम मोटा बनाए रखने में मदद कर सकता है। विटामिन चाटुकारिता की कमी को दूर करने के लिए व्हाट्सप समूहों, ट्विटर, सोशल मीडिया पर जाकर खट्टी-खटट्टी बातें, कांटेदार फल, नागपुर के विशेष संतरों का लाभ उठाएँ। आपकी चाटुकारिता न सहने वाले को टमाटर से मारने के लिए विटामिन सी की प्रचुर उपलब्धता वाले सड़े-गले टमाटरों की पूरी व्यवस्था कर लें। विटामिन के (कोई कुछ भी बोले) - हेल्थ एक्सपर्ट्स कहते हैं कि विटामिन के- कोई कुछ भी बोले की कमी से शरीर में कमजोरी महसूस होती है। दूसरे हम पर हावी होने लगते हैं।

जिनेवा ओपन के दूसरे दौर में हारे मेदवेदेव

जिनेवा । चोट से उबरकर छह महीने बाद वापसी कर रहे दूसरी वरीयता प्राप्त दानिल मेदवेदेव को जिनेवा ओपन टेनिस के दूसरे दौर में रिचर्ड गास्केत ने 6.2, 7.6 से हराया। पिछले महीने हर्निया का

आपरेशन कराने वाले मेदवेदेव को फ्रांस के गास्केत के खिलाफ काफी दिक्कतें आई। अब गास्केत का सामना क्वार्टर फाइनल में पोलैंड के कामिल माशजाक से होगा जिन्होंने क्वालीफायर मार्को सेशिनातो को 6.2, 6.3 से मात दी। सेशिनातो ने दो बार के फ्रेंच ओपन उपविजेता डोमिनिक थीम को हराया था।

केन विलियमसन नहीं खेलेंगे आखिरी लीग मैच, इस कारण स्वदेश लौटे

मुंबई। सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) ने बुधवार को घोषणा की कि उनके कप्तान केन विलियमसन अपने दूसरे बच्चे के जन्म के लिए न्यूजीलैंड के तोरंगा स्थित अपने घर वापस जाएंगे। इसका मतलब है कि विलियमसन रविवार को वानखेड़े स्टेडियम में पंजाब किंग्स के खिलाफ हैदराबाद के आईपीएल 2022 के आखिरी लीग मैच में शामिल नहीं होंगे। विलियमसन के स्वदेश लौटने से पहले हैदराबाद ने मंगलवार को मुंबई इंडियंस पर तीन रन से जीत के साथ अपनी प्लेऑफ की उम्मीदों को जीवित रखा है, हालांकि टीम का आगे बढ़ना अन्य टीमों के मैचों के परिणाम पर भी निर्भर करेगा।

फ्रैंचाइज़ी ने अपने ट्विटर अकाउंट के माध्यम से एक आधिकारिक अपडेट में कहा कि हमारे कप्तान केन विलियमसन अपने परिवार के लिए न्यूजीलैंड वापस जा रहे हैं। यहां हैदराबाद कैंप में केन विलियमसन और उनकी पत्नी को सुरक्षित डिलीवरी और ढेर सारी शुभकामनाएं! दिसंबर 2020 में विलियमसन की पत्नी सारा रहीम ने बच्ची को जन्म दिया था और इस दौरान न्यूजीलैंड के कप्तान ने पितृत्व अवकाश लिया था और वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरा टेस्ट नहीं खेल पाए थे। विलियमसन ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल पर अपनी नवजात बेटी की एक तस्वीर पोस्ट कर कहा था कि हमारे परिवार में एक खूबसूरत बच्ची का स्वागत करते हुए बहुत खुशी हो रही है। आईपीएल 2022 में अब तक विलियमसन ने मेगा नीलामी से पहले फ्रैंचाइजी द्वारा बनाए रखने के बाद 13 मैचों में भाग लिया है। लेकिन कोहनी की चोट से उबरने के बाद प्रतिस्पर्धी क्रिकेट खेल रहे न्यूजीलैंड के खिलाड़ी ने अपनी छाप नहीं छोड़ी। उन्होंने 19.64 के औसत और 93.50 के स्ट्राइक रेट से सिर्फ 216 रन बनाए। हैदराबाद इस समय अंक तालिका में 13 मैचों में 12 अंकों के साथ आठवें स्थान पर है।

फीफा ने विश्व कप से पहले कैमरून को नये खिलाड़ियों को चुनने की मंजूरी दी

ज्यूरिख। फुटबॉल की वैश्विक निकाय फीफा ने आगामी विश्व कप से पहले कैमरून को अपनी राष्ट्रीय टीम में फ्रांस के पूर्व अंडर-21 खिलाड़ी जॉर्जेस-केविन एनकोउडौ को शामिल की मंजूरी दे दी। फीफा ने इस खिलाड़ी को अंतरराष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के मामले में बदलाव की मंजूरी दे दी है।

एनकोउडौ ने अपने मौजूदा क्लब बेसिकटास से जुड़ने से पहले मार्सिले और टोटेनहम का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने फ्रांस की सीनियर टीम का कभी प्रतिनिधित्व नहीं किया है और अपने पारिवारिक संबंधों और फीफा के नियमों के तहत वह अब कैमरून का प्रतिनिधित्व कर सकेंगे। इस 27 साल के खिलाड़ी को अपनी राष्ट्रीय टीम में शामिल करने के कैमरून फुटबॉल संघ के आवेदन किया था। इसका समर्थन राष्ट्रीय टीम के पूर्व महान सैमुअल इतोओ ने भी किया था।

एनकोउडौ को जून में 2023 'अफ्रीका कप ऑफ नेशंस' के क्वालीफाइंग मैचों के लिए कोच रिगोबर्ट सोंग की प्रारंभिक टीम में पिछले हफ्ते नामित किया गया था। टीम में सेल्टिक के पूर्व मिडफील्डर ओलिवियर एनत्चम का भी नाम है, जो फ्रांस से कैमरून आये है। कतर में इस साल नवंबर में शुरू होने वाले विश्व कप में कैमरून के ग्रुप में ब्राजील, सर्बिया और स्विट्जरलैंड की टीमें हैं।

हैदराबाद की प्लेऑफ की उम्मीदें जिंदा, मुंबई को 3 रनों से हराया

मुंबई। वानखेड़े स्टेडियम में रोमांचक मैच में सनराजइर्स हैदराबाद ने मुंबई इंडियंस को 3 रनों से हरा दिया। मुंबई ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी थी। हैदराबाद ने राहुल त्रिपाठी की अर्धशतकीय पारी के बदौलत मुंबई के सामने 194 रन का लक्ष्य रखा था। जवाब में मुंबई की टीम 190 रन ही बना सकी।

सनराईजर्स हैदराबाद (पहली पारी)

पहले बल्लेबाजी के लिए आई सनराईजर्स हैदराबाद की शुरूआत अच्छी नहीं रही और टीम को अभिषेक शर्मा के रूप में पहला झटका लगा। डेनियल सैम्स ने अभिषेक को 9 रन पर आउट कर पवेलियन भेजा।

रमनदीप सिंह ने शानदार बल्लेबाजी कर रहे प्रियम गर्ग को 42 रन पर आउट करके टीम को दूसरी सफलता दिलाई। गर्ग ने अपनी पारी में 26 गेंदों पर 4 चौके और 2 छक्के लगाए।

राहुल त्रिपाठी और निकोल्स पूरन ने तीसरे विकेट के लिए अर्धशतकीय साझेदारी निभाई। इस साझेदारी को रिले मेरेडिथ ने तोड़ा। मेरेडिथ ने 22 गेंदों पर 2 चौके और 3 छक्के लगाकर खेल रहे पूरन को चलता किया। राहुल त्रिपाठी की लाजवाब पारी का अंत रमनदीप सिंह ने किया। राहुल त्रिपाठी ने 44 गेंदों पर 9 चौके और 3 छक्कों की मदद से 76 रन बनाकर आउट हुए। ऐडन मार्करम को 2 रन पर आउट करके रमनदीप सिंह ने उन्हें अपना तीसरा शिकार बनाया। बुमराह ने 20 ओवर की आखिरी गेंद पर वाशिंगटन सुंदर को बोल्ड करके हैदराबाद की पारी को 193 रन पर रोका।

मुंबई इंडियंस (दूसरी पारी)

मुंबई के लिए रोहित शर्मा और ईशान किशन ने तेजतर्रार शुरुआत की। दोनों ने हैदराबाद के सीम गेंदबाजों के खिलाफ जमकर शॉट लगाए। रोहित पूरे रंग में दिखे। उन्होंने पहले पावरप्ले में ही टीम का स्कोर 51 पर ला खड़ा किया। जबकि 10 ओवरों में 89 रन पर। रोहित अपना अर्धशतक पूरा नहीं कर पाए। वह वाशिंगटन सुंदर की गेंद पर 48 रन बनाकर आऊट हुए। जबकि ईशान किशन उमरान मलिक को मारने के चक्कर में प्रियम गर्ग के हाथों लपके गए। ईशान ने 43 रन बनाए। उमरान यही नहीं रुके। उन्होंने पहले तिलक वर्मा को पवेलियन का रास्ता दिखाया। उसके बाद डेनियल सैम्स को भी 15 रनों पर आऊट कर मुंबई को झटका दे दिया। भुवनेश्वर ने ट्रिस्टन को 2 रन पर रन आऊट किया तो टिम डेविड ने जिम्मेदारी उठाते हुए नटराजन की एक ओवर में चार छक्के जड़ दिए। हालांकि इसी ओवर की आखिरी गेंद पर वह 46 रन बनाकर रन आऊट भी हो गए। 19वां ओवर भुवनेश्वर कुमार ने थामा। उन्होंने मेडन फेंकते हुए संजय यादव का विकेट निकाला और अपनी टीम का पलड़ा भारी कर दिया। आखिरी ओवर फारूखी ने फेंका जिसमें मुंबई अपने लक्ष्य तक पहुंच नहीं पाई।

किसी भी स्थान पर बल्लेबाजी कर सकता हूं, लेकिन ये है पसंदीदा स्थान राहुल त्रिपाठी

मुंबई। सनराइजर्स हैदराबाद के बल्लेबाज राहुल त्रिपाठी ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि केन विलियमसन की अगुवाई वाली टीम सर्वश्रेष्ठ प्रयासों के बावजूद इस साल के प्लेऑफ की दौड़ से बाहर है। इस सीज़न में त्रिपाठी ने 393 रन बनाए हैं। 2017 में आईपीएल में पदार्पण के बाद से रनों के मामले में उनका दूसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। त्रिपाठी का सर्वश्रेष्ठ आईपीएल सीजन पिछले साल था जब उन्होंने 17 मैचों में 397 रन बनाए थे।

रात वह 76 रन बनाकर 'प्लेयर ऑफ द मैच'चुने जाने गए थे जिसने सनराइजर्स के लिए मुंबई इंडियंस के खिलाफ 193/6 स्कोर करने और तीन रन से जीतने की नींव रखी। उनके 76 रन सिर्फ 44 गेंदों में आए जिसमें 9 चौके और तीन छक्के शामिल थे। क्रिकेटर ने कहा कि वह किसी भी स्थान पर बल्लेबाजी करने की क्षमता रखते हैं, लेकिन वास्तव में नंबर 3 स्थान का

आनंद लेते हैं।

उन्होंने कहा, मैं कहूंगा कि आप जहां भी चाहें मुझे बल्लेबाजी करवा सकते हैं। लेकिन मुझे नंबर 3 पर बल्लेबाजी करने और जिम्मेदारी का आनंद मिलता है। यह महत्वपूर्ण है कि अगर सलामी बल्लेबाजों ने अच्छी शुरुआत दी है, तो बस इसे जारी रखना या स्थिति जो भी हो, मैं कोशिश कर रहा हूं।

त्रिपाठी ने मंगलवार को मुंबई इंडियंस के खिलाफ लगभग 173 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए, ने इस सीजन में अपने शानदार प्रदर्शन का श्रेय अपनी फ्री-फ्लोइंग बल्लेबाजी को दिया। इस सीजन में उन्होंने तीन अर्धशतक बनाए हैं, जिसमें उनका उच्चतम 76 रन है, जो उन्होंने मुंबई के खिलाफ बनाया था। त्रिपाठी ने अपनी फ्री-फ्लोइंग बल्लेबाजी के बारे में कहा, इस तरह विकेट खेल रहा है और मैं उस समय उस गेंदबाज पर कैसे पलटवार कर सकता हूं। अगर मैं देखता हूं कि यह (गेंद) है और मैं गेंदबाज को खेल सकता हूं, तो मैं निश्चित रूप से शॉट के लिए जाता हूं। अगर यह वहां नहीं है, तो मैं बस सिंगल्स और डबल्स को लेना चाहता हूं। त्रिपाठी ने आगे कहा कि मुझे लगता है (यह) दोनों (अच्छे स्कोर और स्ट्राइक रेट) का मिश्रण है। कभी-कभी स्ट्राइक रेट महत्वपूर्ण होता है, लेकिन टीम के लिए बनाए गए रन हमेशा खास होते हैं और गेम जीतने के लिए यह अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए मैं खुश हूं मैं ऐसा (एमआई के खिलाफ) कर सका।

जूनियर स्पीड चैस शतरंज - अर्जुन एरिगासी सेमी फाइनल में पहुंचे

चेन्नई। भारत के तेजी से उभरते शतरंज ग्रांड मास्टर अर्जुन एरिगासी नें जूनियर स्पीड चैस ऑनलाइन शतरंज के क्वाटर फाइनल मुक़ाबले में अजरबैजान के युवा खिलाड़ी मोहम्मद मुरादली को 17-11 के बड़े अंतर से पराजित करते हुए सेमी फाइनल में जगह बना ली है । अर्जुन नें मुरादली के खिलाफ तीनों सेट अपने नाम किए । सबसे

पहले सेट में 5 मिनट +1 सेकंड प्रति खिलाड़ी के कुल 9 ब्लिट्ज़ मुक़ाबले हुए जिसमें अर्जुन 5 -4 से जीत दर्ज करने में कामयाब रहे ,दूसरे सेट में 5 मिनट +1 सेकंड प्रति खिलाड़ी के कुल 9 ब्लिट्ज़ मुकाबलों में अर्जुन और आक्रामक हो गए और 6.5-2.5 के बड़े अंतर से जीत दर्ज कर मैच को काफी हद तक अपनी ओर मोड दिया । इसके बाद 1 मिनट +1 सेकंड प्रति खिलाड़ी के कुल 10 बुलेट मुक़ाबले हुए जिसमें मुरादली नें वापसी की कोशिश तो की पर फिर भी अर्जुन नें 5.5-4.5 के अंतर से तीसरा सेट भी जीतकर सेमी फाइनल में जगह बना ली । अब सेमी फाइनल में अर्जुन का मुक़ाबला उनके चिर प्रतिद्वंदी यूएसए के नीमन हंस मोके से होगा और अगर वो जीते तो फाइनल में उनके सामने हमवतन और वर्तमान चैम्पियन निहाल सरीन होंगे ।

जसप्रीत बुमराह के नाम जुड़े ट्वंटी-20 क्रिकेट में 250 विकेट, इस भारतीय को छोड़ा पीछे

मुंबई। मुंबई इंडियंस के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह भले ही इस सीजन में ज्यादा विकेट नहीं निकाल पाए लेकिन वह अपनी शानदार इकोनमी के चलते एक्सपर्ट के पसंदीदा बने हुए हैं। बुमराह इस सीजन में 7.25 की इकोनमी के साथ चल रहे हैं। बहरहाल भारतीय पेसरों की इस लिस्ट में बुमराह अपने साथी भुवनेश्वर कुमार से काफी आगे निकल गए हैं।

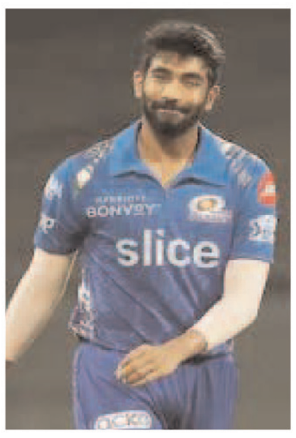

देखें लिस्ट-

250 जसप्रीत बुमराह
223 भुवनेश्वर कुमार
201 जयदेव उनादकट
189 विनय कुमार
173 इरफान पठान

सीजन में अब तक चार बॉलर ही पांच विकेट हाल ले सके हैं इनमें एक नाम बुमराह का भी है। बुमराह ने कोलकाता के खिलाफ 10 रन देकर पांच विकेट ली थीं जोकि इस सीजन में किसी बॉलर का बैस्ट प्रदर्शन है। विकेट की अगर बात करें तो बुमराह ने 13 मैचों में 12 विकेट ली हैं। बुमराह के नाम अब 119 मैचों में 142 विकेट दर्ज हो गई हैं। वह ओवरऑल विकेटटेकर्स की लिस्ट में अभी 10वें स्थान पर हैं। उनसे आगे हरभजन सिंह हैं जिन्होंने 150 विकेट लिए हैं जबकि इस लिस्ट में पहले नंबर पर ड्वेन ब्रावो हैं जिन्होंने 161 मैचों में 183 विकेट ली हैं। अगर ओवरऑल डॉट बॉल का रिकॉर्ड देखा जाए तो इस लिस्ट में जसप्रीत आठवें स्थान पर बने हुए हैं। उन्होंने अब तक 1109 गेंद डॉट फेंकी हैं। जबकि इस लिस्ट में पहले नंबर पर भुवनेश्वर कुमार हैं जिन्होंने 1395 गेंदें डॉट फेंकी हैं।

इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच से पहले अभ्यास मैच खेलेगा भारत

नई दिल्ली। इंग्लैंड के खिलाफ़ पिछले साल शुरू हुई टेस्ट सीरीज़ में 2-1 से आगे चल रही भारतीय टीम सीरीज का आखिरी मैच खेलने से पहले 24 जून से लीसेस्टरशायर के खिलाफ अभ्यास मैच खेलेगी। भारतीय टेस्ट टीम को एक जुलाई से बर्मिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच खेलना है।

इस चार दिवसीय अभ्यास मैच के बाद जब भारत की टेस्ट टीम इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट मैच खेल रही होगी, तब भारत की व्हाइट बॉल टीम एक जुलाई और तीन जुलाई को डर्बीशायर और नॉर्थम्प्टनशायर के खिलाफ अभ्यास मैच खेलेगी। उल्लेखनीय है कि इंग्लैंड दौरे पर भारत को एक टेस्ट मैच के अलावा तीन एकदिवसीय मैच और तीन टी20 मैच खेलने हैं, जो सात जुलाई से 17 जुलाई के बीच होंगे।

खराब फॉर्म पर ईशान किशन का रिप्लाई, बड़े से बड़े खिलाड़ियों को भी इससे जूझना पड़ा है

मुंबई। आईपीएल में सबसे महंगे बिके ईशान किशन अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर सके लेकिन मुंबई इंडियंस के विकेटकीपर बल्लेबाज को अपने फॉर्म की चिंता नहीं है और उनका कहना है कि सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को भी कभी ना कभी खराब दौर से जूझना पड़ा है। मुंबई ने ईशान को 15 करोड़ 25 लाख रूपए में खरीदा था लेकिन वह 13 मैचों में 30.83 की औसत से 370 रन ही बना सके। मुंबई लगातार आठ हार के बाद प्लेआफ की दौड़ से बाहर हो चुकी है।

ईशान ने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ तीन रन से मिली हार

के बाद कहा, 'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को भी जूझना पड़ा है। मैने क्रिस गेल को भी जमने में समय लेते देखा है।' उन्होंने कहा, 'हर दिन नया है और हर मैच नया है। कई बार अच्छी शुरूआत मिलती है और कई बार विरोधी गेंदबाज तैयारी के साथ उतरते हैं। बाहर जो लोग चाहते हैं, ड्रेसिंग रूम के भीतर की रणनीति उससे इतर होती है।'

उन्होंने कहा, 'क्रिकेट में कभी यह सुनिश्चित नहीं होता कि आपकी एक ही भूमिका है और आप मैदान पर उतरते ही गेंद को पीटने लगोगे । यदि आप टीम के बारे में सोचे तो अपनी भूमिका स्पष्ट होनी जरूरी है।' सनराइजर्स के कोच टॉम मूडी ने कहा कि टिम डेविड ने अगर मुंबई के लिये आक्रामक पारी नहीं खेली होती तो उनकी टीम का नेट रनरेट बेहतर होता जिससे प्लेआफ में पहुंचने की संभावना बढ़ती।

सनराइजर्स अभी 12 अंक के साथ आठवें स्थान पर है। केकेआर और पंजाब किंग्स के भी समान अंक है लेकिन उनका रनरेट बेहतर है। मूडी ने कहा, 'आखिर में आपकी प्राथमिकता मैच जीतना होती है।

हमने अच्छे रन बनाए लेकिन टिम डेविड आक्रामक पारी नहीं खेलता तो हमारा रनरेट भी बेहतर हो जाता।'

पर्पल कैप की रेस में उमरान मलिक की गजब एंट्री, मिडिल ओवर्स का यह रिकॉर्ड किया अपने नाम

मुंबई। छा करते हुए मुंबई की टीम जब 12वें ओवर तक 101 रन बना चुकी थी तब उमरान ने ईशान को आऊट करने के बाद डेनियल सैम्स और तिलक वर्मा को भी पवेलियन की राह दिखाई। इसी के साथ उमरान ने पर्पल कैप की रेस के टॉप 5 में जगह बना ली। उमरान के नाम 21 विकेट दर्ज हो गए हैं।

देखें लिस्ट-

24 युजी चहल
23 वानिंदु हसरंगा
22 कागिसो रबाडा
21 उमरान मलिक
20 कुलदीप यादव

मिडिल ओवर्स में हो रहे बेहतर

भारतीय टीम के लिए अच्छी

बात है कि उमरान मिडिल ओवर्स में विकेट निकालने में कामयाब हो रहे हैं। उमरान ने मिडिल ओवर्स (7-15) में अब तक 16 विकेट निकाले हैं। वह सिर्फ रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से पीछे हैं जिन्होंने इस अवधि में 17 विकेट ली हैं। तीसरे नंबर पर 14 विकेट के साथ कुलदीप यादव और 11 विकेट के साथ युजी चहल चौथे स्थान पर बने हुए हैं। उमरान मलिक ने भारतीय तेज गेंदबाजी विभाग के लिए नई उम्मीदें जगाई हैं। वह सीजन में 157 किमी. प्रति घंटा की रफ्तार से गेंदबाजी कर चुके हैं। यह ओवरऑल रिकॉर्ड से कुछ ही प्वाइंट्स दूर है। मुंबई के खिलाफ मैच में भी उमरान ने दूसरी पारी में खेलते हुए 155 किमी. प्रति घंटा की रफ्तार से गेंद फेंकी थी।

जिस दिन माता-पिता खेलों पर अधिक जोर देने लगेंगे, भारत से चैम्पियन निकलने लगेगें : कपिल

न्यूयॉर्क । महान क्रिकेटर कपिल देव को लगता है कि जिस दिन से भारत में बच्चों के माता-पिता खेलों पर अधिक जोर देना शुरू कर देंगे, उस दिन से देश में विभिन्न स्पर्धाओं में और अधिक चैम्पियन निकलने लगेंगे।

कपिल ने कहा कि हालांकि भारत में बच्चों के माता-पिता की खेलों के प्रति मानसिकता पिछले कुछ वर्षों में तेजी से बदली है लेकिन इतना ही काफी नहीं है। इस महान क्रिकेटर ने यह टिप्पणी भारतीय पुरूष बैडमिंटन टीम की रविवार को मिली ऐतिहासिक थॉमस कप जीत के बाद की।

कपिल से जब पिछले कुछ वर्षों में भारतीय खेलों में आए बदलाव के बारे में पूछा जिससे देश का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन शानदार होता जा रहा है तो उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि (ऐसा) माता-पिता की वजह से है, बच्चों की वजह से नहीं। हमारे देश से काफी डॉक्टर, वैज्ञानिक और इंजीनियर निकलते हैं क्योंकि उनके माता-पिता उन्हें ये बनाना चाहते हैं। जिस दिन से माता-पिता अपने बच्चों से खिलाड़ी बनाने की चाहत करने लगेंगे, हमारे देश से भी हर खेल से चैम्पियन बनने शुरू हो जाएंगे।'

कपिल न्यूयॉर्क में भारतीय वाणिज्यिक दूतावास द्वारा देश की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम में

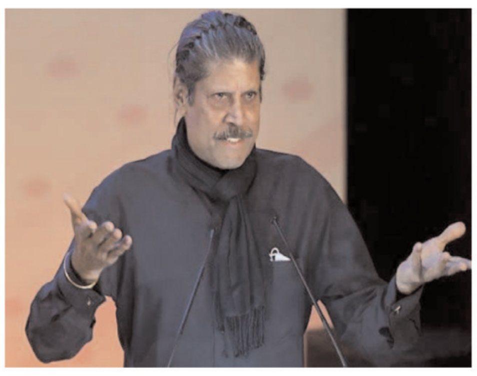

अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। इस मौके पर प्रवासी भारतीय और क्रिकेट प्रशंसक मौजूद थे। सर्वकालिक महान आल राउंडर में से एक कपिल ने इस संबंध में एक उदाहरण देते हुए कहा कि अगर उनकी बेटी को 10वीं कक्षा की परीक्षा देनी हो और साथ ही जूनियर भारतीय टीम के लिये खेलना हो तो वह उसे 'पढ़ाई' करने के लिए कहेंगे।

भारतीय क्रिकेट टीम को 1983 विश्व कप में एतिहासिक खिताब दिलाने वाले कपिल ने कहा, 'लेकिन अमेरिका या यूरोप या आस्ट्रेलिया में, माता-पिता कहेंगे कि इस साल (परीक्षा) रहने दो, देश के लिये जूनियर टीम में खेलो और अगले साल परीक्षा दे देना। हमारे देश में यही सोच अभी तक नहीं बदली है।' उन्होंने कहा, 'लेकिन यह सोच बदल रही है। इसलिए मैंने कहा कि हमारे समाज में बच्चों से ज्यादा माता-पिता अधिक महत्वपूर्ण हैं।'

अपने बचपन की याद करते हुए कपिल ने कहा कि वह अपने खेल (क्रिकेट) की किट अपने स्कूल बैग में छुपा दिया करते थे और बाहर जाकर खेलते थे लेकिन अब इसमें तेजी से बदलाव हुआ है जिससे माता-पिता अपने बच्चों के खेलों में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। कपिल ने कहा, 'आज मुझे यह देखकर फक्र होता है कि माता-पिता अपने बच्चों को खेलने के लिए लेकर आ रहे हैं।'

उत्तर कोरिया में आग की तरह फैला कोरोनः एक दिन में 2.70 लाख नए केस व 6 की मौत, देश में न वैक्सीन न दवाएं

कोलंबो। प्योंग्यांगः उत्तर कोरिया में कोरोना संक्रमण के मामलों का रिकार्ड टूट गया। देश में बुधवार को बुखार के 2,32,880 नए मामले सामने आए और इससे पीड़ित छह और लोगों की मौत हो गई। देश के नेता किम जोंग-उन ने अधिकारियों पर कोविड-19 वैश्विक महामारी के बढ़ते प्रकोप से निपटने में ''लापरवाही बरतने'' का आरोप लगाया है। उत्तर कोरिया के वायरस रोधी मुख्यालय ने बताया कि अप्रैल के अंत से 17 लाख लोगों को बुखार हो चुका है, जिनमें से कम से कम 6,91,170 लोग अब भी पृथक-वास में रह रहे हैं।

वहीं, इस बुखार से अभी तक 62 लोगों की मौत हुई है। विशेषज्ञों का कहना है कि इनमें से अधिकतर लोग कोरोना वायरस से संक्रमित हो सकते हैं, उत्तर कोरिया के पास जांच की पर्याप्त व्यवस्था ना होने के कारण इस बात की पुष्टि नहीं हो पा रही है कि ये संक्रमण के मामले हैं या नहीं।

उत्तर कोरिया की खराब स्वास्थ्य प्रणाली के कारण वायरस के प्रसार को रोकने में नाकामी उसके लिए खतरनाक साबित हो सकती है। 26 करोड़ आबादी वाले इस देश में अधिकतर लोगों को कोविड-19 रोधी टीके नहीं लगे हैं।

उत्तर कोरिया की आधिकारिक 'कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी' के

अनुसार, किम ने सत्तारूढ़ कोरियाई वर्कर्स पार्टी की पोलित ब्यूरो की हुई बैठक में अधिकारियों के वैश्विक महामारी से निपटने के तरीकों की निंदा की।

उन्होंने संकट से निपटने में कोताही बरते जाने की बात कही और मौजूदा स्थिति के लिए अधिकारियों के लापरवाह रवैये को जिम्मेदार ठहराया। उत्तर कोरिया ने संयुक्त राष्ट्र समर्थित 'कोवैक्स' टीका वितरण कार्यक्रम से मदद लेने का प्रस्ताव भी ठुकरा दिया था। उत्तर कोरिया ने कोविड-19 वैश्विक महामारी फैलने के दो साल से अधिक समय बाद गत बृहस्पतिवार को संक्रमण के पहले मामले की पुष्टि की थी।

चीन में जीरो कोविड-नीति के खिलाफ उतरे छात्र, कड़े प्रतिबंधों का किया विरोध

बीजिंग। सप्ताहांत में छात्रों द्वारा किए गए विरोध-प्रदर्शन के चलते पेकिंग विश्वविद्यालय ने चीन की 'जीरो कोविड' नीति के तहत छात्रों पर और अधिक कड़े प्रतिबंध लगाने के निर्णय से पीछे हटने

का फैसला किया है। छात्रों ने यह जानकारी दी। विश्वविद्यालय के छात्रों ने कैंपस में उन्हें और अधिक व्यवस्थित रखने के लिए 'धातु का बैरियर' लगाने और शिक्षकों की बिना रोक-टोक आवाजाही के खिलाफ रविवार को शांतिपूर्ण प्रदर्शन किया था।

रोजाना कोविड जांच कराने, बाहर से खाना मंगाने और आगंतुकों के आने को प्रतिबंधित करने जैसे कदमों से छात्रों में गुस्सा बढ़ रहा था। विश्वविद्यालय में कम्युनिस्ट पार्टी समिति के उपसचिव ने रविवार को पेकिंग विश्वविद्यालय के एक छात्रावास के बाहर प्रदर्शन कर रहे छात्रों को विरोध-प्रदर्शन समाप्त करने और आमने-सामने बैठकर बात करने की अपील की। इस बीच, कई छात्रों के हितों और अधिकारों का मुद्दा उठाया। प्रदर्शनकारी छात्रों द्वारा बनाये गए मौके के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की मंगलवार की खबर के मुताबिक, प्रदर्शन के बाद विश्वविद्यालय के नेताओं ने छात्रों के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की और धातु के बैरियर को हटाने पर सहमति जताई।

प्रदूषण के कारण विश्व में हर साल नौ लाख लोगों की मौत : अध्ययन

वाशिंगटन। एक नये अध्ययन में दावा किया गया है कि वैश्विक स्तर पर हर साल होने वाली 90 लाख मौत के मामलों के लिए सभी प्रकार का प्रदूषण जिम्मेदार है तथा वाहनों और उद्योगों के धुएं के कारण हुए वायु प्रदूषण की वजह से मरने वालों की संख्या 2000 के बाद से 55 प्रतिशत बढ़ गई है।

'द लांसेट प्लैनेटरी हेल्थ जर्नल' में प्रकाशित एक नए अध्ययन के अनुसार, अमेरिका प्रदूषण से होने वाली मौतों के मामले में शीर्ष 10 देशों में से एकमात्र ऐसा देश है जो पूरी तरह से उद्योग पर निर्भर है। 2019 में प्रदूषण से होने वाली 142,883 मौतों के साथ वह विश्व में सातवें स्थान पर है, जिसके पहले और बाद में क्रमशः बांग्लादेश और इथियोपिया हैं। मंगलवार का पूर्व-महामारी अध्ययन वास्तव में ''ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज'' के आंकड़ों और सिएटल में स्थित ''इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मैट्रिक्स एंड इवॉल्यूशन'' के आंकलन पर आधारित है। भारत और चीन प्रदूषण से होने वाली मौतों के मामले में दुनिया में सबसे आगे हैं। भारत में सालाना लगभग 2.4 लाख लोगों की तो चीन में लगभग 2.2 लाख लोगों की मौत प्रदूषण के कारण होती है, लेकिन दोनों देशों में दुनिया की सबसे बड़ी आबादी भी है। यदि मौत को प्रति जनसंख्या दर के हिसाब से देखा जाए तो अमेरिका नीचे से 31वें स्थान पर आता है। यहां प्रति 100,000 की आबादी में प्रदूषण के कारण मौत का आंकड़ा 43.6 है। चाड और मध्य अफ्रीकी गणराज्य प्रति 100,000 की आबादी पर प्रदूषण से होने वाली लगभग 300 मौत के साथ उच्चतम स्थान पर हैं। इनमें से आधी से अधिक मौत का कारण दूषित पानी है। ब्रुनेई, कतर और आइसलैंड में प्रदूषण के कारण मृत्यु दर 15 से 23 के बीच सबसे कम है। प्रदूषण की वजह से मौत का वैश्विक औसत प्रति 100,000 लोगों पर 117 है।

श्रीलंका में सरकार ने निंदा प्रस्ताव पर तत्काल बहस की विपक्ष की कोशिश नाकाम की

कोलंबो। श्रीलंका के संकटग्रस्त राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे के नेतृत्व वाली सरकार को संसद में उस समय दो अहम जीत मिली, जब उसके उम्मीदवार अजित राजपक्षे को सदन का उपाध्यक्ष चुन लिया गया और उसने देश के सबसे बड़े आर्थिक संकट के लिए राष्ट्रपति को दोषी ठहराने वाले निंदा प्रस्ताव पर तत्काल बहस की विपक्ष की कोशिश को नाकाम कर दिया।

इस बीच, श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने कहा कि राष्ट्रपति राजपक्षे के खिलाफ निंदा प्रस्ताव लाना का विपक्ष का कदम खराब संसदीय रणनीति था। विपक्षी तमिल नेशनल एलायंस (टीएनए) के सांसद एम ए सुमंथिरन द्वारा राष्ट्रपति राजपक्षे के प्रति नाराजगी जताने के लिए पेश किए निंदा प्रस्ताव के पक्ष में 68 और विपक्ष में 119 मत पड़े।

पाक-चीन से रक्षा के लिए भारत अगले महीने तक एस-400 मिसाइल प्रणाली तैनात कर सकता है : पेंटागन

वाशिंगटन। अमेरिकी रक्षा विभाग के मुख्यालय पेंटागन के एक शीर्ष खुफिया अधिकारी ने कहा है कि पाकिस्तान और चीन के खतरे के मद्देनजर देश की रक्षा के लिए भारत की मंशा जून 2022 तक एस-400 मिसाइल प्रणाली की तैनाती करने की है। उन्होंने कहा कि भारत व्यापक सैन्य आधुनिकीकरण में जुटा है जिसमें वायुसेना, थलसेना और नौसेना समेत रणनीतिक परमाणु बल शामिल हैं। अमेरिका की रक्षा खुफिया एजेंसी के निदेशक लेफ्टिनेंट जनरल स्कॉट बेरियर ने अमेरिकी सांसद की सशस्त्र सेवा समिति के सदस्यों को यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि भारत को पिछले वर्ष दिसंबर से रूस से एस-400 मिसाइल प्रणाली मिलने लगी है। अक्टूबर 2021 तक भारत की सेना अपनी जमीनी तथा समुद्री सीमाओं की रक्षा के लिए तथा साइबर क्षमताओं को बढ़ाने के लिए उन्नत निगरानी प्रणालियों की खरीद पर विचार कर रही थी। बेरियर ने कहा, ''दिसंबर में भारत को रूसी एस-400 मिसाइल प्रणाली की प्रारंभिक खेप प्राप्त हुई और पाकिस्तान तथा चीन से खतरे को देखते हुए भारत जून 2022 तक इस प्रणाली के संचालन की योजना बना रहा है।'' उन्होंने कहा, ''भारत अपने हाइपरसोनिक, बैलेस्टिक, क्रूज प्रक्षेपास्त्रों का

निर्माण कर रहा है और वह हवाई रक्षा मिसाइल क्षमताओं को विकसित कर रहा है, 2021 से लगातार अनेक परीक्षण कर रहा है। अंतरिक्ष में भारत के उपग्रहों की संख्या बढ़ रही है और वह अंतरिक्ष में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।'' उन्होंने कहा कि भारत एकीकृत थियेटर कमान स्थापित करने की दिशा में कदम उठा रहा है, इससे उसके तीनों सशस्त्र बलों की संयुक्त क्षमता में सुधार होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2019 के बाद से भारत के घरेलू रक्षा उद्योग को विस्तार देकर और विदेशी कंपनियों से रक्षा खरीद कम करने की नीति अपना कर देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने को प्राथमिकता दी है।

बेरियर ने कहा, '' भारत के रूस के साथ दीर्घकालिक रक्षा संबंध हैं। यूक्रेन पर रूस के आक्रमण पर भी भारत ने तटस्थ रुख अपनाया है और लगातार शांति बनाए रखने की मांग की है।'' उन्होंने कहा कि भारत हिंद प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता सुनिश्चित करने और समृद्धि को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत साइबर सुरक्षा पर खुफिया तथा अभियानगत सहयोग को प्रगाढ़ करने, अहम सूचना ढांचे की रक्षा आदि मुद्दों पर जोर देता है। बेरियर ने कहा कि अफगानिस्तान सरकार के सत्ता छोड़ने के बाद भारत हमले की आशंकाओं से चिंतित है। भारत को चिंता है कि पाकिस्तान के आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद, जिन्हें अफगानिस्तान के तालिबान का समर्थन प्राप्त हैं,उस पर हमले कर सकते हैं।

बेरियर ने कहा कि भारत 2003 में किए गए संघर्षविराम समझौते को लेकर प्रतिबद्ध है, पर वह आतंकवादी खतरों से निपटने के लिए दृढ़ है और उसने कश्मीर में आतंकवाद विरोधी अभियान चलाए हैं। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान के सैनिकों के बीच कभी कभार छोटी- मोटी झड़पें होती रहेंगी, लेकिन पाकिस्तान के आतंकवादियों द्वारा भारत में किसी बड़े आतंकवादी घटना को अंजाम देने की सूरत में भारत बड़ी सैन्य कार्रवाई कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारत और चीन के बीच संबंध वास्तविक नियंत्रण रेखा पर दोनों देशों के सैनिकों के बीच वर्ष 2020 में हुई हिंसक झड़प के बाद से तनावपूर्ण बने हुए हैं। वर्ष 2021 में दोनों देशों के बीच राजनयिक स्तर की और सैन्य स्तर की कई दौर की वार्ता हो चुकी हैं,जिसके बाद गतिरोध वाले कई स्थानों से सैनिकों को हटाया गया है। उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों के अभी भी कम से कम 50 हजार सैनिक,तोप, गोलाबारूद,रॉकेट लॉन्चर सीमा पर तैनात हैं और दोनों ही देश वास्तविक नियंत्रण रेखा के पास ढांचागत निर्माणकार्य कर रहे हैं।

कान में भारतीय सिनेमा का समृद्ध अतीत और संभावनाओं से भरा भविष्य दिखेगा

वाशिंगटन। कान फिल्म फेस्टिवल में आधिकारिक सम्मानित देश के तौर पर शामिल होने वाला भारत पहला देश है। असल में यह व्यापारिक पहल, मर्शे दु फिल्म (कान फिल्म मार्केट) के तहत हो रहा है। कान फिल्म फेस्टिवल के हीरक (75वां) संस्करण में स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने पर आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे भारत का आधिकारिक सम्मानित देश के तौर पर शामिल होना, भारत और फ्रांस

के प्रगाढ़ होते रिश्तों का भी संकेत है। भारत के लिए कई वजहों से यह आयोजन खास है। फेस्टिवल में प्रदर्शन के लिए चार भारतीय फिल्में चुनी गई हैं। क्लासिक फिल्मों की श्रेणी में सत्यजीत रे की 1970 की फिल्म प्रतिद्वंद्वी का पुनर्स्थापित संस्करण प्रदर्शित किया जाएगा। इसे नेशनल फिल्म आर्काइव ऑफ इंडिया (एनएफडीसी) ने सूचना और प्रसारण मंत्रालय की तरफ से शुरू किए गए राष्ट्रीय फिल्म विरासत अभियान के तहत पुनर्स्थापित किया है। इसके संबंध में कान फिल्म फेस्टिवल की तरफ से बताया गया कि फिल्म के मूल 35 मिमी कैमरा नेगेटिव को एआरआरआई स्कैन-एक्सटी पर 4के रेजोल्यूशन में तैयार किया गया है, इसके अलावा निर्माता पूर्णिमा दत्ता ने मूल 35 मिमी साउंड नेगेटिव भी मुहैया कराए हैं। हालांकि, नेगेटिव के कुछ हिस्से क्षतिग्रस्त हो गए थे, जिसकी वजह से उन हिस्सों को मूल की बजाय बाजार में रिलीज की गई फिल्म के 35 मिमी नेगेटिव से स्कैन किया गया। इसका पुनर्स्थापन प्राइम फोकस टेक्नोलॉजी की तरफ से किया गया और निगरानी सुदीप चटर्जी ने की थी।

ब्लैक बॉक्स डेटा से खुला राजः जानबूझकर क्रैश कराया गया था बोइंग 737 चीनी विमान, 132 लोगों की गई थी जानःरिपोर्ट

बीजिंग। चीन में इस साल 23 मार्च को हुए भीषण विमान हादसे को लेकर इसके ब्लैक बॉक्स डेटा से चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट के मुताबिक ब्लैक बॉक्स डेटा से पता चला है कि चाइना ईस्टर्न जेट के विमान को जानबूझकर ऊंचाई से नीचे लाकर क्रैश कराया गया था। कॉकपिट में मौजूद कोई शख्स जानबूझकर विमान को नीचे लाकर क्रैश कराया और वो कुछ सेकेंड में ही चकनाचूर हो गया था। इस हादसे में विमान में सवार सभी यात्री मारे गए थे। गुआंग्जी प्रांत में हुए इस हादसे में 132 यात्री मारे गए थे।रिपोर्ट के मुताबिक, विमान हादसे की प्रारंभिक जांच में कहा गया है कि मलबे में तब्दील विमान के ब्लैक बॉक्स के फ्लाइट डेटा का विश्लेषण किया गया।

इस डेटा संकेत देते हैं कि कॉकपिट में मौजूद कोई व्यक्ति जानबूझकर विमान को नीचे गोता लगाने को मजबूर किया हालांकि एयरलाइन और नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड ने इस रिपोर्ट पर अभी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी है। यह विमान तेंग ग्रामीण इलाके में वुझोऊ के पास क्रैश हुआ और पहाड़ पर आग लग गई। फ्लाइट ट्रैकर ने बताया था कि विमान केवल 2.15 मिनट में 29 हजार फुट की ऊंचाई से 9,075 फीट पर आया था। अगले 20 सेकेंड में यह 3,225 फीट पर था, और इसके बाद फ्लाइट से संपर्क टूट गया। सामान्य उड़ान के दौरान इतनी ऊंचाई से नीचे आने में आमतौर पर करीब 30 मिनट लगते हैं।मालूम हो कि बोइंग 737-800 विमान कुमिंग से गुआंगझोऊ की यात्रा पर था, लेकिन वो गुआंगजी की पहाड़ियों में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इस हादसे में विमान में सवार सभी 132 यात्री मारे गए थे। यह चीन में पिछले तीन दशकों में सबसे बड़ा विमान हादसा था। चीन का ईस्टर्न पैसेंजर विमान 23 मार्च को पहाड़ी पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, उसमें 132 लोग सवार थे। इस विमान क्रैश की डरा देने वाली वीडियो फुटेज सामने आई थी, जिसमें विमान नाक की सीध में जमीन पर आता दिखाई दे रहा था।

पीएम शहबाज शरीफ ने पाकिस्तान में चीनी नागरिकों की सुरक्षा बढ़ाने का आदेश दिया

वाशिंगटन। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने 60 अरब अमेरिकी डॉलर के चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) परियोजनाओं पर काम कर रहे चीनी नागरिकों के लिए सुरक्षा कड़ी करने का आदेश दिया।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम एवम्
योग सत्संग समिति द्वारा
विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज
से मुद्रित एवम् क्रियायोग
आश्रम अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
211019 से प्रकाशित।
Title UPHIN 29506
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बंधित विवादों का न्याय क्षेत्र कौशाम्बी, प्रयागराज होगा।

के पास खुद को उड़ाने की साजिश रची थी। शहबाज ने प्रधानमंत्री ली से कहा कि उनकी सरकार पाकिस्तान में काम कर रहे सभी चीनी नागरिकों की सुरक्षा

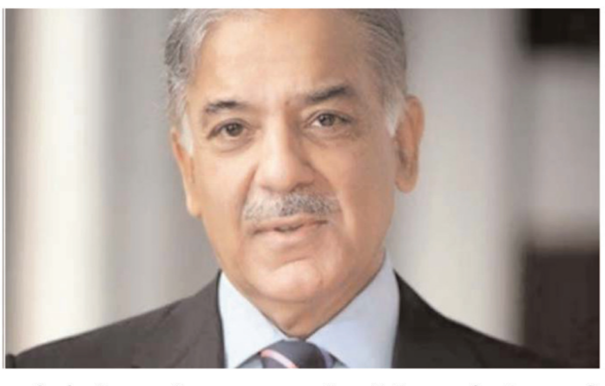

बढ़ाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रतिबद्ध है।

कई रिपोर्टों के अनुसार, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) परियोजनाओं के लिए पाकिस्तान में तैनात बड़ी संख्या में चीनी श्रमिकों ने पिछले महीने कराची विश्वविद्यालय में आत्मघाती हमले के बाद देश छोड़ना शुरू कर दिया था। इस आत्मघाती हमले में तीन चीनी भाषा के शिक्षक मारे गए थे और एक अन्य घायल हो गया था।

कई रिपोर्टों के अनुसार, चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) परियोजनाओं के लिए पाकिस्तान में तैनात बड़ी संख्या में चीनी श्रमिकों ने पिछले महीने कराची विश्वविद्यालय में आत्मघाती बम हमले के बाद देश छोड़ना शुरू कर दिया था, जिसमें तीन चीनी भाषा के शिक्षक मारे गए थे और एक अन्य घायल हो गया था। पिछले कुछ वर्षों में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) और बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी (बीएलए) जैसे धार्मिक चरमपंथी समूहों, जो बलूचिस्तान की स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं, के हमलों में कई चीनी कर्मियों की मौत हुई है।

योजना मंत्री अहसान इकबाल ने ग्वादर विश्वविद्यालय में बोलते हुए कहा कि सीपीईसी के तहत विभिन्न परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि देश का विकास ग्वादर के विकास से जुड़ा है, जो दक्षिण एशिया का प्रवेश द्वार है और सरकार ग्वादर में सीपीईसी परियोजनाओं को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है। उन्होंने कहा कि सीपीईसी परियोजनाएं मौजूदा सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल हैं। पाकिस्तान और चीन का यह महत्वाकांक्षी परियोजना (सीपीईसी) चीन के उत्तर पश्चिमी शिनजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र और पश्चिमी पाकिस्तान प्रांत बलूचिस्तान में स्थित ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं का 3,000 किलोमीटर लंबा मार्ग है। सीपीईसी को लेकर भारत ने चीन का विरोध किया है क्योंकि यह कारिडोर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) से होकर जा रहा है।

स्वीडन व फिनलैंड ने नाटो की सदस्यता के लिए दी अर्जी, यूक्रेन जंग के बीच उठाया कदम

वाशिंगटन। रूस-यूक्रेन जंग से चिंता के बीच स्वीडन व फिनलैंड ने नाटो की सदस्यता के लिए अर्जी दे दी है। इससे रूस और खफा हो सकता है। रूस इन दोनों देशों को पहले ही नाटो की सदस्यता नहीं लेने की चेतावनी दे चुका है। पूर्व सोवियत राज्य यूक्रेन द्वारा नाटो की सदस्यता के मुद्दे पर ही रूस ने जंग छेड़ी है। नाटो के प्रमुख ने स्वीडन व फिनलैंड द्वारा इस पश्चिमी देशों के महत्वपूर्ण व ताकतवर संगठन की सदस्यता की अर्जी देने की सूचना दी। नाटो के महासचिव जेन्स स्टोल्टेनबर्ग ने बुधवार को कहा कि फिनलैंड और स्वीडन ने आधिकारिक तौर पर दुनिया के सबसे बड़े सैन्य गठबंधन में शामिल होने के लिए आवेदन दिया है। उन्होंने कहा कि वह नाटो में शामिल होने के लिए दोनों देशों की अर्जी का स्वागत करते हैं। यह हमारी सुरक्षा के लिए अच्छा दिन है। दोनों देशों के सदस्यता आवेदन पर नाटो के 30 सदस्य देश विचार करेंगे। इसके बाद करीब दो सप्ताह में यह प्रक्रिया पूरी होगी। हालांकि, तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तईप एर्दोगन ने फिनलैंड और स्वीडन को नाटो में शामिल करने पर आपत्ति जताई है।

उनकी आपत्तियों को दूर करने के बाद सदस्यता वार्ता अनुकूल रही तो इन दोनों देशों को कुछ माह में सदस्य बनाया जा सकता है। सदस्यता प्रक्रिया में आमतौर पर 8 से 12 महीने लगते हैं, लेकिन रूस के आक्रामक रवैए से यूरोपीय देशों के सिर पर मंडरा रहे खतरे को देखते हुए नाटो जल्दी से आगे बढ़ना चाहता है।

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने दो दिन पहले ही फिनलैंड को चेतावनी देते हुए कहा है कि

नाटो में शामिल होना और फिनलैंड के तटस्थ रुख को छोड़ना बड़ी 'गलती' होगी। इससे पहले रूस ने कहा था कि फिनलैंड के नाटो में शामिल होने से वह 'सैन्य कार्रवाई' के मजबूर हो सकता है। पुतिन ने अपने फिनलैंड के राष्ट्रपति सौली निनिस्टो से कहा कि फिनलैंड की सुरक्षा को कोई खतरा नहीं है। निनिस्टो और पुतिन के बीच फोन पर हुई बातचीत में यह चेतावनी सामने आई है। फिनलैंड और रूस के बीच 1300 किमी की सीमा है।

ऐसे में अगर फिनलैंड व स्वीडन नाटो में शामिल होते हैं तो रूस की चिंता बढ़ सकती है। राष्ट्रपति जो बाइडन 19 मई यानी गुरुवार को स्वीडन की प्रधानमंत्री मैग्डेलेना एंडरसन और फिनलैंड के राष्ट्रपति सौली नीनिस्टो का व्हाइट हाउस में स्वागत करेंगे। इस दौरान तीनों नेताओं के बीच फिनलैंड और स्वीडन की नाटो सदस्यता और यूरोपीय सुरक्षा के मुद्दे पर चर्चा होगी।

पार्टी के निर्देशों के खिलाफ मतदान करने वाले सांसदों के मत नहीं गिने जाएंगेः पाकिस्तानी न्यायालय

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के उच्चतम न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में कहा कि संसद के असंतुष्ट सदस्यों के वोट उनके संसदीय दल के निर्देशों के खिलाफ दिये जाने पर नहीं गिने जा सकते। न्यायालय की पांच सदस्यीय पीठ ने 3-2 वाले अपने खंडित फैसले में यह बात कही।ज्यादातर न्यायाधीश सांसदों को संविधान के अनुच्छेद 63 ए के तहत पार्टी लाइन के खिलाफ जाकर मतदान करने की अनुमति देने के पक्ष में नहीं थे। हालांकि, पार्टी के निर्णय के खिलाफ मतदान करने वाले सांसदों को अयोग्य घोषित करने की अवधि के अहम मुद्दे पर न्यायालय ने संसद से कानून बनाने को कहा।

प्रधान न्यायाधीश उमर अता बंदियाल, न्यायमूर्ति इजाजुल अहसन और न्यायमूर्ति मुनिब अख्तर ने बहुमत वाला फैसला दिया, जबकि न्यायमूर्ति मजहर आलम खान मियांखेल और न्यायमूर्ति जमाल खान मांडोखेल ने बहुमत के फैसले से असहमति जताई। न्यायालय के इस फैसले से पाकिस्तान में राजनीतिक संकट और गहरा सकता है क्योंकि विपक्षी पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ पार्टी पंजाब के मुख्यमंत्री हमजा शहबाज को इस्तीफा देने के लिए मजबूर करने की कोशिश करेगी। शहबाज, पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज के नेता हैं और पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक ए इंसाफ के एक दर्जन से अधिक प्रांतीय जन प्रतिनिधियों के समर्थन से मुख्यमंत्री चुने गये थे।